पारलौकिक शक्तियों पर मेरे अनुभव

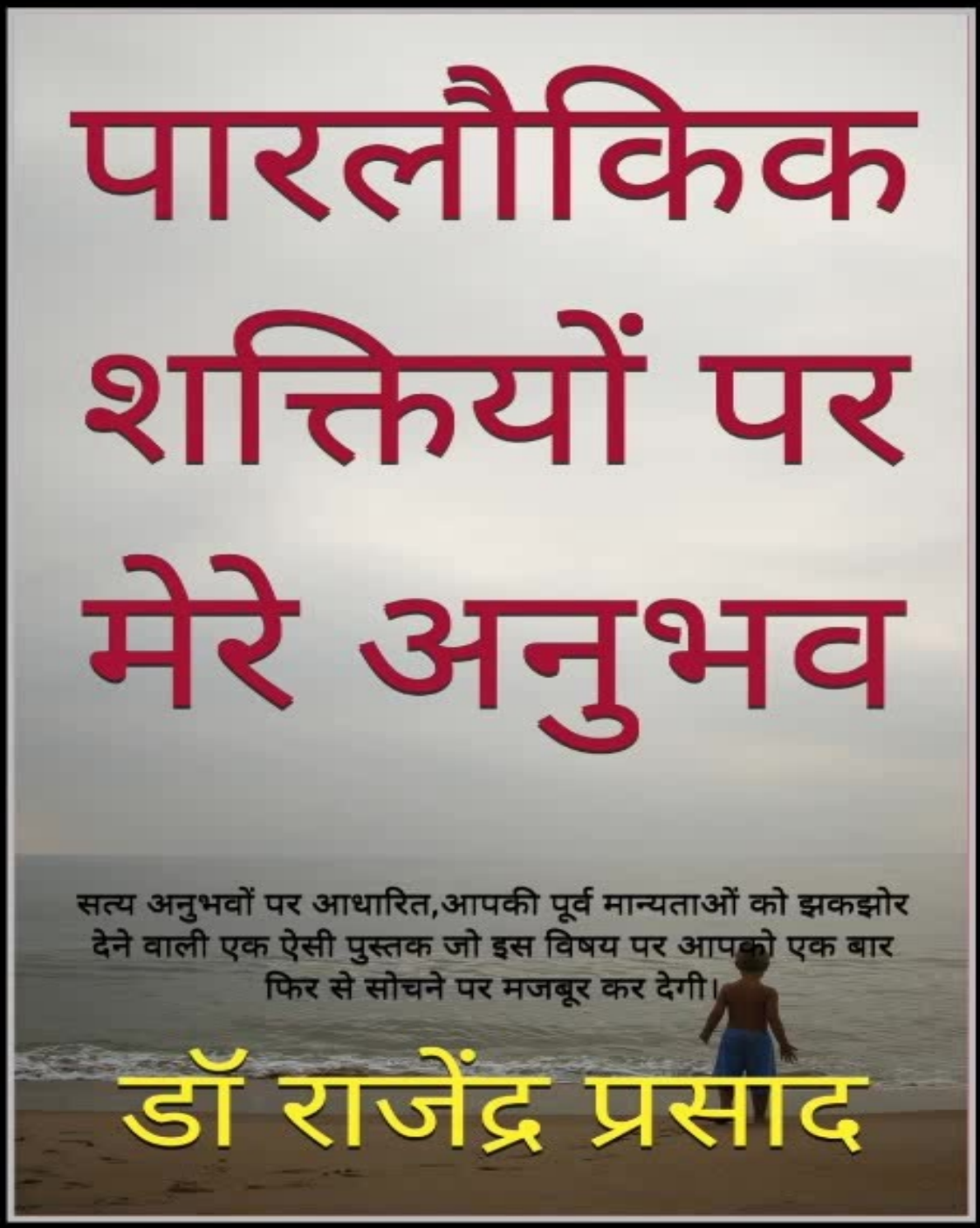

सत्य अनुभवों पर आधारित,आपकी पूर्व मान्यताओं को झकझोर देने वाली एक ऐसी पुस्तक जो इस विषय पर आपको एक बार फिर से सोचने पर मजबूर कर देगी।

डॉ राजेंद्र प्रसाद

पारलौकिक शक्तियों पर मेरे अनुभव

सत्य अनुभवों पर आधारित, आपकी पूर्व मान्यताओं को झकझोर देने वाली एक ऐसी पुस्तक जो इस विषय पर आपको एक बार फिर से सोचने पर मजबूर कर देगी।

डॉ राजेंद्र प्रसाद

कॉपीराइट © 2021 डॉ राजेंद्र प्रसाद

सर्वाधिकार सुरक्षित

इस पुस्तक में वर्णित पात्र और घटनाएँ काल्पनिक हैं। किसी भी जीवित या मृत वास्तविक व्यक्ति से इसकी समानता महज संयोग है और लेखक का ऐसा कोई इरादा नहीं है।

प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी भाग को पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता, या पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत नहीं किया जा सकता, या किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्यथा प्रसारित नहीं किया जा सकता।

आईएसबीएन-13: 9781234567890

आईएसबीएन-10: 1477123456

कवर डिज़ाइन: डॉ राजेंद्र प्रसाद

कांग्रेस की लाइब्रेरी नियंत्रण संख्या:

2018675309

अमेरिका के संयुक्त राज्य अमेरिका में छपी

समर्पण

यह पुस्तक मेरे माता पिता को समर्पित है जिनके बिना आज मैं यहाँ तक नहीं पहुंच पाता, उनके चरणों में सादर प्रणाम वे जहाँ भी हो वही से मुझे आशीर्वाद दे ताकि मैं इसी तरह आगे बढ़ता रहूँ ।

[redacted]

[redacted] [redacted]
[redacted]
[redacted]
[redacted] [redacted] [redacted]
[redacted]
[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]
[redacted] [redacted] [redacted] [redacted]-[redacted] [redacted] [redacted] [redacted]
[redacted] [redacted] [redacted] [redacted]
[redacted] [redacted]
[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] ?
[redacted] [redacted] [redacted]
[redacted] [redacted] ([redacted] [redacted])
[redacted] [redacted]
[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]
[redacted] [redacted]
[redacted]-[redacted]
[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]
[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]
[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]
[redacted] [redacted]
[redacted] [redacted]

[redacted] [redacted] [redacted]

पाठकों से गुफ़्तगू

प्रिय पाठकगण,

यह पुस्तक "पारलौकिक शक्तियों के मेरे अनुभव" लेखक डॉ. राजेंद्र प्रसाद, जो आपके हाथ में है की रचना भी एक तरह से पारलौकिक घटना है। मैं लेखक से तरक़ीबन ३०-३१ वर्षों से परिचित हूँ। मेरे उनके बहुत से शौक और दिलचस्पियाँ मिलती-जुलती है। इसलिए बात करने के लिए हमें किसी भी प्रकार की औपचारिकता निभाने की जरुरत नहीं पड़ती। पिछले एक-डेढ़ दशक से अमूमन सप्ताह में तीन से चार बार फ़ोन पर बात हो ही जाती है। प्रायः बातें अपने शौकों के इर्द-गिर्द ही होती है इसलिए हम दोनों अगर किसी और वज़ह से व्यस्त नहीं हों, तो बात करना पसंद भी करते हैं। यह मेरा सौभाग्य है की वे अपने सारे अनुभव जो की भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं, अपने पारस्परिक शौकों के अलावा का जिक्र मुझसे करते रहे हैं. मैं भी उनकी बातों को ध्यान से सुन कर अपनी प्रतिक्रिया देता रहा हूँ।

जहाँ तक मुझे याद है १०-११ साल पहले जब उन्होंने पहली दफा अपने पारलौककक शक्तियों के अनुभवों का जिक्र किया था तो मुझे थोड़ा अचरज सा हुआ था, हालांकि एक अच्छे मित्र की तरह मैंने उनको सुना तो जरूर पर अपनी प्रतिक्रिया देने में सचेत रहा । इसकी पहली वज़ह मेरा इन सब चीजों का ज्ञान या दूसरे शब्दों में अनुभव नहीं था। और दूसरा मैं अपने मित्र को हतोत्साहित नहीं करना चाहता था। फिर बहुत दिनों तक इस विषय पर कोई चर्चा नहीं हुई और बात आयी गयी हो गयी। पर अचानक उन्होंने अपने कुछ अनुभव सुनाये जो अविश्वसनीय थे। मेरे अंतरमन में

एक कौतूहल सा था। फिर एक सिलसिला सा चल पड़ा, थोड़े-थोड़े अंतराल पर वे अपने अनुभव साझा करने लगे और मैं एक अच्छे श्रोता की तरह उनको सुनता और अपनी राय देता। पर मै महसूस करता की उसकी वे ज्यादा परवाह नहीं करते। और अगर मैं अपनी बात कहुँ तो मुझे भी कुछ ज्यादा यकीं नहीं होता या दूसरे शब्दों में कहें तो कुछ बातें मेरे समझ से परे होती थीं।

इधर कुछ चंद महीने पहले थोड़े वे बीमार से थे तो उन्होंने फिर से इन सब बातों का जिक्र मुझसे किया तो मैंने उनको सुझाव दिया कि आप जो अपने अनुभव मुझसे साझा करते हैं तो क्यों नहीं इन सबों का जिक्र एक पुस्तक में करते हैं, उससे आपका वक़्त भी कटेगा और कोरोना का जो पीरियड या लॉक-डाउन चल रहा है का सदुपयोग भी होगा। शुरू में तो वह कुछ सकपकाए क्योंकि उनको पुस्तक लिखने का कोई अनुभव नहीं था, पर मैंने अपनी ओर से उनका पूरा हौसला अफजाई की तो वे तैयार तो हो गए पर उन्होंने एक शर्त रखी की मैं उनकी मदद करूँगा, ख़ास कर प्रूफ रीडिंग इत्यादि में। मैंने भी उनको कहा नेकी और पूछ-पूछ।

मेरे पूरे आश्वासन के बाद उन्होंने लिखना तो आरम्भ कर दिया पर बीच-बीच में मेरी राय हर प्रकार की लेते रहे। मैं भी अपनी तरफ से उनको सुझाव देता रहा ख़ास कर पुस्तक के ले-आउट, पुस्तक के संभावित पन्नों तथा पुस्तक का नामकरण या शीर्षक के मुताल्लिक। अगर मैं कहुँ की श्री राजेंद्र जी इन सब चीजों के लिए मुझ पर निर्भर थे तो यह अतिशयोक्ति ही होगी। वे खुद एक आले दर्जे के क्रिएटिव व्यक्ति हैं, उनका किसी पर पर निर्भर होना स्वभाव ही नहीं है। पर शायद पुस्तक लेखन का उनका प्रथम अनुभव था तो मेरी राय या मंतव्य उनके लिये उत्प्रेरक का काम करते हों तो आश्चर्य नहीं ।

ये मेरा सौभाग्य कहें या श्री राजेंद्र जी का मेरे प्रति स्नेह और विश्वास की प्रत्येक अध्याय के समाप्ति पर वे पाण्डुलिपि मेरे पास मेल से भेज देते प्रूफ रीडिंग के लिए और मैं प्रूफ रीडिंग के साथ-साथ यदा-कदा अपने सुझाव उनके पास मेल से ही अग्रसर करता तो वे उसे बेहिचक अपनी लेखनी में शामिल करते। मैं भी एक पाठक के हैसियत से सुझाव दिया करता । वैसे मुझे इसका एहसास था कि वे मेरे सुझाव को तरजीह देते रहें हैं। और मैं भी ईमानदारी और अपनी समझ से जो सर्वश्रेष्ठ होता वही राय देता हूँ।

पर जो एक बात मैं जिसका जिक्र यहाँ करना चाहता हूँ वो यह है कि जब मैं इस पुस्तक के अन्तिम अध्याय का प्रूफ रीडिंग कर रहा था तो कुछ अजीब विचार मेरे मन में उठ रहे थे; इसकी दो वज़ह थी एक तो पुस्तक का रिकॉर्ड टाइम में पूर्ण होना बावजूद इसके कि लेखक को किताब लिखने का कोई भी तजुर्बा न होना दूसरा मैं अपनी ख़ुद की प्रूफ रीडिंग की असमान्य गति से अभिभूत था, विशेष कर तब जब कि पुस्तक का विषय मेरे अनुरूप नहीं था। पर अब मैं इस बात को शिद्दत से महसूस कर रहा हूँ कि जब मैं लेखक का साथ इस पुस्तक को अंजाम तक पहुंचाने में जुड़ा हुआ था तो मैं एक अज़ीब सी मानसिक जुनून की स्थिति में मुब्तला था। और अब जब मैं आप सबों से मुखाबित हूँ तो यकीनी तौर पे कह सकता हूँ कि इस किताब की पैदाईश पारलौकिक ही है। इसे सिर्फ महसूस ही किया जा सकता है।

अंततः मैं एक बात जरूर कहना चाहता हूँ कि पूरे पुस्तक पढ़ने के बाद मैंने महसूस किया ख़ास कर अन्तिम अध्याय में कि वे एक विलक्षण प्रतिभा के स्वामी हैं उनके अनुभव और उनकी व्याख्या इस बात के प्रमाण हैं। मैं हिन्दी के सभी पाठकगणों से जिनको इस तरह के विषय में रुचि है से आग्रहपूर्ण निवेदन करूँगा कि आप अपने मंतव्य पुस्तक के एक या दो अध्याय पढ़ कर न बनायें। मैंने इन विषय पर अनेकों

किताबों (हिन्दी और अंग्रेजी) का अध्यन किया है और मैं दावे से कह सकता हूँ कि यह पुस्तक अन्य कई पुस्तकों से ज्यादा कुछ अपने पाठकों को प्रदान करने की क्षमता रखती है।

शुभकामनाओं सहित,

सुमन श्रीवास्तव

प्राक्कथन

तंत्र मन्त्र यन्त्र, भूत प्रेत, डायन चुड़ैल, तांत्रिक, मांत्रिक, ओझा, मीडियम, प्लेंचेट और देवी देवता पर बहुत सी किताबे लिखी जा चुकी है इसलिए आपके मन में यह सवाल उठेगा की इस पुस्तक में ऐसा नया क्या है जिसके लिए यह पुस्तक पढ़ी जाये? ऐसी किताबे मैंने भी पढ़ी है, इनमे अधिकांश विदेशी लेखकों के द्वारा लिखी गयी है और इनमे इन घटनाओं पर उनका अनुभव और विश्लेषण दिया रहता है। विदेशी पुस्तकों में इस विषय पर जानकारी के लिए माध्यम (मीडियम) का प्रयोग किया जाता

रहे हों तो इसे मत ख़रीदे क्योंकि आपको निराशा होगी। यह पुस्तक तंत्र मंत्र सिखाने के लिए नहीं लिखी गयी है।

मै बचपन से ही बहुत जिज्ञासु था और हर नयी चीज जानने की की मुझे जिज्ञासा रहती थी और इसी जिज्ञासा ने मुझे ये अनुभव दिये, आप यह भी कह सकते हैं की यह मेरा सौभाग्य था की अचानक मुझे इन शक्तियों की जानकारी मिलती चली गयी। यह पुस्तक किसी विशेष वर्ग के लोगों के लिए नहीं यह उन सभी के लिए है जो इन विषयो पर जानने का शौक रखते हैं और उन लोगों के लिए भी है जो इस मार्ग में आगे बढ़ने की सोच रहे हैं। लोगो की निजता कायम रखने के लये इस पुस्तक के पात्रों और जगह के नामों को बदल दिया गया है। किसी पुस्तक को लिखने का यह मेरा पहला प्रयास है इसलिए कुछ गलतियों का होना स्वाभाविक है, आशा करता हूँ पाठक इसके लिए मुझे क्षमा कर देगें और उसे नजरअंदाज कर देगें। इस पुस्तक से सम्बंधित आपके कोई सवाल हो या आप इस विषय पर अपना कोई अनुभव मेरे साथ साझा करना चाहते हों तो आप उसे मेरे इ-मेल पर भेज सकते हैं। इस पुस्तक को लिखने में जिन लोगों ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मेरी सहायता की है उन्हें मै तहेदिल से धन्यवाद् करता हूँ।

राजेंद्र प्रसाद

इ-मेल – पैरानॉर्म 534@जीमेल.कॉम

पारलौकिक शक्तियों द्वारा लिखवाई गयी यह पुस्तक

मैं यह पुस्तक लिखना खत्म कर चुका था और अब इसका अंग्रेजी अनुवाद जारी था। ऐसे समय में तीन चार दिनों से जब मै फुर्सत में होता था या टहलता था मेरे अंदर से यह आवाज आनी लगी कि इस पुस्तक में यह अध्याय जोड़ो। फिर उसके बाद यह विचार भी आने लगे की इसमें ये सब बाते लिखो। ऐसा लग रहा था की कोई शक्ति मुझे इसे लिखने के लिए प्रेरित/मजबूर कर रही हो। इसलिए मुझे आज बैठकर इसे लिखना ही पड़ा। इस पुस्तक की शुरुआत करने से लेकर अब तक मुझे लगता रहा कि कोई ऊपरी शक्ति मुझसे यह पुस्तक लिखवा रही है। कुछ बातों का मैं इस सन्दर्भ में जिक्र करना चाहूँगा जिससे आपको भी इस बात का अनुभव हो सके। जैसा कि मैं पहले हीं आपको बतला चुका हूँ कि मैं कोई पेशेवर लेखक नहीं। आज से ६ महीने पहले मेरे मन में यह ख्याल भी नहीं आया कि इस विषय पर कोई पुस्तक लिखी जाय। लेकिन मेरे मन में यह ख्याल उठने लगें की मुझे इस विषय पर यह एक पुस्तक लिखनी चाहिए। पर मुझे इस बात का कोई अंदाज नहीं था कि पुस्तक कैसे लिखी जाती है। फिर मैंने इस ख्याल को मन से निकलना चाहा पर यह ख्याल था कि मुझे छोडता ही नहीं था। अंत में मैंने इस बात का जिक्र अपने दोस्त श्री सुमन श्रीवास्तव से किया। मैंने अपने इन अनुभवों को कई बार उन्हें बताया था पर उन्होंने इसपर ज्यादा रूचि नहीं दिखलाई थी पर आश्चय की बात यह थी कि इस बार उन्होंने मुझे लिखने के लिए प्रेरित किया। एक बात का और ख्याल मेरे मन में उठा कि पुस्तक छपवायी कैसे जाएगी क्योकि नए लेखक को खुद अपना पैसा लगाकर कोई पुस्तक छपवानी पड़ता है ऐसा मैं अपने कुछ दोस्तों का अनुभव सुन चुका था। इसलिए अब मैंने इस बात पर सोचना ही छोड़ दिया क्योंकि मैं क्यों एक ऐसी पुस्तक पर खर्चा करता जिसका कोई

भविष्य ही नहीं था। दूसरे ही दिन जब मैं इंटरनेट पर ऐसे ही कुछ देख रहा था की मेरे सामने एक लेख अमेजॉन के किंडल पब्लिकेशन पर आ गया और मैंने उसे पढ़ा और मुझे यह जानकार आश्चर्य हुआ की इसपर मुफ्त में भी पुस्तक छपवाई जा सकती है। अब पुस्तक नहीं लिखने का कोई कारण मेरे सामने नहीं था। इसलिए पुस्तक लिखने के बारे में मुझे अब गंभीरता से सोचना पड़ा। पर पुस्तक का कोई नाम, कथावस्तु मेरे पास नहीं थी। न ही मुझे यह समझ में आ रहा था कि मैं लिखूंगा क्या? आपको शायद यह बात पढ़कर आश्चय हो कि सुमन जी से मुझे पूछना पड़ा कि आखिर पुस्तक की प्रस्तावना में क्या लिखा जाता है? वे पुस्तकों को पढ़ने के शौकीन है तब उन्होंने मुझे इसके बारे में समझाया।

कुछ बाते मैं अपने बारे में बतला दूँ कि मैं किस परिस्थिति यह पुस्तक लिखी। मेरे मुँह का एक बड़ा आपरेशन १५ दिन पहले ही खत्म हुआ था और मैं स्वाथ्य लाभ कर रहा था। मेरी नाको में ट्यूब लगा था और मैं केवल उसके द्वारा केवल तरल खाना खा सकता था। मेरे कान, मुँह में अक्सर दर्द रहता था और कमजोरी बहुत थी। क्या ऐसी परिस्थियों में नयी पुस्तक लिखने की कोई सोच सकता है? पर कोई ऊपरी शक्ति थी जो मुझे इसकी प्रेरणा दे रही थी। मुझे क्या लिखना है इसके विचार मेरे मन में पहले से ही आ जाते थे। और तो और मैंने यह पुस्तक मात्र ४ महीनों में लिखकर पूरी कर ली। मेरे दोस्त सुमन जी ने खुद कहा की इसकी प्रूफ रीडिंग मैं करूँगा।

पहले मुझे इसकी चिंता थी कि एक अनजान लेखक की पुस्तक कौन पढ़ेगा पर अब वह चिंता भी ख़त्म हो गयी क्योंकि मैंने सोचा जो शक्ति मुझसे लिखवा सकती है क्या आगे की योजना उसके पास नहीं होगी? हम ही कितने नादान हैं कि कोई चीज जब हम कर गुजरते है तो तुरंत अपनी पीठ थपथपाने लगते है पर वास्तव में वह शक्ति ही हमसे काम करवाती है और उसका श्रेय हम अपने आप को देते है। एक सुन्दर दृश्य को देखते ही एक कवि

तुरंत उसपर कविता लिख देता है जबकि उससे ज्यादा पढ़ा लिखा आदमी चाह कर भी कविता नहीं लिख पाता, कभी आपने यह सोचा की यह प्रेरणा देने वाला कौन है? एक वैज्ञानिक को एक आविष्कार की प्रेरणा कौन देता है हम सभी तो आविष्कार नहीं कर पाते? वास्तव में एक कोई शक्ति है जो पूरी दुनिया को कठपुतली की तरह नचा रही और हम इस गलतफहमी में है कि सब कुछ हमारे सोचने और करने से हो रहा है।

मैंने भारतीय आद्यात्मिक पुस्तकों में आकाशवाणी के विषय में पहले पढ़ा था। आकाशवाणी एक संस्कृत का शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ है आकाश से आती हुई आवाज (सेलेस्टियल अनाउंसमेंट). उनमे लिखा था कि ये आकाशवाणी हुई कि ऐसा होने वाला है और भविष्य के बारे में जानकारी पहले से दी जाती थी। पहले मैं इसे कपोल कल्पना समझता था पर

आज मुझे यह विस्वास होने लगा कि ऐसा होता होगा हम ही शायद अब उतने सवेदनशील नहीं रहे कि उसे ग्रहण कर सके। बहुत से लोग यह समझते है कि कुरान मुहम्मद साहब ने लिखा। अगर आप भी ऐसा समझते है तो आप गलत है। कुरान को पैगंबर मोहम्मद के सहाबी ने लिखा था | पैगंबर मोहम्मद अपने सहाबी को कुरान की आयते पढ़ कर सुनाते थे और वो लोग उसे तुरंत लिख लेते और याद भी कर लेते थे | और पैगंबर को ये आयते ईश्वर अपने एक फरिश्ते द्वारा याद कराते थे, जिनका नाम जिब्रील था |

अल्लाह ने एक अनपढ़ आदमी को इसलिए चुना क्युकि कोई व्यक्ति ये ना कह सके की ये कुरान को मुहम्मद ने ही लिखा है ये कोई ईश्वरीय किताब नही है। परंतु अफसोस की बात है कि कुछ नासमझ लोग अब भी ये कहते है की कुरान को पैगंबर मुहम्मद ने लिखा है | ये बिल्कुल गलत है क्युकि जब पैगंबर मुहम्मद को लिखना पढ़ना आता ही नही था वो किताब कैसे लिख सकते है?

मैंने कभी आकशवाणी नहीं सुनी न ही मुझे किसी फरिस्ते के कभी दर्शन हुए मुझे तो मेरे मन में कुछ करने या लिखने के ख्याल आ जाते थे। अब इसे आप क्या कहेगे? क्या यह किसी अदृस्य शक्ति या पारलौकिक शक्ति की प्रेरणा थी इसक निर्णय करना मैं आपपर छोड़ता हूँ।

पारलौकिक शक्तियों पर अलग -अलग धर्मों की मान्यताये

अदृश्य शक्तियों पर तक़रीबन हर धर्म में विश्वास किया जाता है और बहुत देशों में तो इनके बारे में जानने और उन्हें वश में करने के लिए अनेकों विधियाँ उपयोग में लायी जाती हैं।

इस्लाम में तंत्र, मंत्रो के उपयोग पर मनाही है पर उर्दू में आपको ऐसी बहुत सी किताबे मिल जाएगी जिसमें इस्लामी तंत्र का विस्तृत बर्णन है। खास तौर पर जिन्न, परी को वश में करने की विधि, हानी पहुंचाने वाली बुरी शक्तियों को पकड़ने, जलाने, या बोतल में बंद करने, हमजाद सिद्धि, खजाने को खोजने आदि की जितनी विधियों का उल्लेख इनकी किताबों में मिलता है वह कही और नहीं मिलता। इस्लाम में कुरान के आयतों से रोगों को ठीक किया जाता है तथा भूत प्रेतों को भगाया जाता है। जिन्न के बारे में तो कुरान मे एक पूरा सूरा (अध्याय) ही है। सूरा अल-जिन्न इस्लाम के पवित्र ग्रन्थ कुरआन का 72 वां सूरा है। सूरा 15 हिज्र की आयत 27 में स्पष्ट किया गया है कि मनुष्य और जिन्न दोनों का अलग-अलग अस्तित्व होता है और खुदा ने ही दोनों की सृष्टि की है। जिन्न मनुष्य से पहले पैदा किए गए थे। इसके आयत 26-27 में साफ़-साफ़ बताया गया है कि मनुष्य की सृष्टि जिस तत्व से हुई है वह मिट्टी है और जिन्नों की सृष्टि जिस तत्व से हुई है वह है अग्नि।

सूरा 7 में स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि जिन्न मनुष्यों को देखते हैं, किन्तु मनुष्य उनको नहीं देखते, जिन्न ऊपर के लोकों की ओर उड़ सकते हैं, किन्तु एक सीमा से आगे नहीं जा सकते। जिन्न का अपना एक स्थायी बाह्य अस्तित्व होता है और वे मनुष्य से अलग एक दूसरी ही जाति के अदृश्य प्राणी हैं।

बौद्ध धर्म सुनते ही हमें उनकी अहिंसा का सन्देश याद आता है पर क्या आपको मालूम है कि बौद्ध धर्म में भी तंत्र का विस्तृत वर्णन है, तिब्बत में इसे बहुत ही प्रयोग में लाया जाता है और इसे वज्रयान के नाम से जाना जाता है। वज्रयान के साथ-साथ मन्त्रायण, गुह्यमन्त्रायण, तांत्रिक बौद्ध धर्म तंत्र और "गुप्त मंत्र" से जुड़ी बौद्ध परम्पराये मध्ययुगीन भारत में विकसित हुए और तिब्बत, पूर्वी एशिया, मंगोलिया और अन्य हिमालयी राज्यों में फैल गए। इसमें मंत्र, धरणी, मुद्रा, मंडल, देवताओं और बुद्ध की कल्पना का उपयोग करने वाले अभ्यास शामिल हैं। कहते है की वज्रयान के तंत्र और वंश को बौद्ध शाक्यमुनि द्वारा पढ़ाया गया था।

सिख धर्म में भी भूत-प्रेत आदि पर विश्वास करने से मना किया गया है पर खुद गुरुनानक की जीवनी में एक तांत्रिक प्रयोग का उल्लेख है। अपने देश, विदेश की यात्रा के दौरान गुरुनानक असम पहुंचे थे वहां उनके सहयोगी मरदाना को भूख लगी तो गुरुनानक ने उन्हें शहर जाकर भिक्षा मांग कर लाने को कहा।

जब मरदाना दो दिनों तक नहीं लौटा तो गुरुनानक खुद उसे ढूढ़ने निकले तब उन्हें मालूम पड़ा कि मरदाना को तो भेड़ बनाकर कैद कर लिया गया है तब वे अपनी शक्तियों से उसे फिर से इंसान बनाकर लौटा लाये।

यूरोपीय देशों में भी अदृश्य शक्तियों पर विश्वास किया जाता है। इन शक्तियों की जानकारी के लिए वे मीडियम का उपयोग करते हैं। मीडियम ऐसे व्यक्ति होते हैं जिनमें अदृश्य शक्तियों से संपर्क करने की योग्यता होती है। पर यूरोपीय देशो को तंत्र, मंत्र की जानकारी ही नहीं, हां कुछ यंत्रो का सिमित प्रयोग वे भी करते हैं जैसे प्लेन्चेट । इसलिए उनकी पुस्तकों में मंत्रो, गुरु और खास तौर पर भारत में उपयोग में लायी जाने वाली पद्धतियों का उल्लेख नहीं मिलता।

अफ्रीका, तिब्बत, मिश्र, भारत में सदियों से इनका प्रयोग किया जाता रहा है। अफ्रीका, नाइजीरिया, घाना आदि देशों में माने जाने वाले धर्म को वूडू के नाम से जाना जाता है। यहाँ यह माना जाता है कि मृतकों की आत्माएं जीवित दुनिया के साथ-साथ रहती हैं, आत्माओं का प्रत्येक परिवार में अपनी स्वयं की महिला पुजारिन होती है जिसे एक ऐसे देवता के रूप में देखा जाता है, जो अन्य सभी देवताओं का मालिक है। उसके नाम पर कोई मंदिर नहीं होता है। लोग संकट के समय में उससे प्रार्थना करते हैं। यहाँ जोम्बी बनाये जाने की भी परंपरा है। जोम्बी एक जीवित लाश को कहा जाता है। इससे गुलामो की तरह काम लिया जाता है ये अपने दिमाग का उपयोग नहीं कर सकते है।

भारतवर्ष में तो मंत्र, तंत्रो के प्रयोग की इतनी विविधता पायी जाती है की आश्चर्य होता है। यहाँ तो इसके लिए अलग से एक तंत्र शास्त्र है जिसके जनक शिव माने जाते हैं। यहाँ तो अलग-अलग कामों के लिए इन्हें वर्गीकृत किया गया है जिन्हे अभिचार कर्म के नाम से जाना जाता है। प्रायः छहः प्रकार के अभिचारों का वर्णन मिलता है 1. मारण,
2. मोहन, 3. स्तंभन, 4. विद्वेषण, 5. उच्चाट्टन और 6. वशीकरण। मारण से प्राणनाश करने, मोहन से किसी के मन को मुग्ध करने, स्तंभन मंत्र द्वारा विभिन्न घातक वस्तुओं या व्यक्तियों का निरोध, स्थितिकरण या

नाश करने, विद्वेषण से दो अभिन्न हृदय व्यक्तियों में भेद या द्वेष उत्पन्न करने, उच्चाटन से किसी के मन को चंचल, उन्मत्त या अस्थिर करने तथा वशीकरण से राजा या किसी स्त्री अथवा अन्य व्यक्ति अथवा पशु के मन को अपने वश में करने की क्रिया संपादित की जाती है। यहाँ तो कुछ ऐसे मन्त्र भी हैं जिनसे रोगो को ठीक किया जा सकता है, जैसे पीलिया, सरदर्द, माइग्रेनम, कानदर्द, दांत दर्द, कमर दर्द आदि को ठीक करने के लिए यहाँ अलग-अलग मंत्र मिलते हैं।

मैं कौन हूँ?

इस पुस्तक को पढ़ने के पहले आप यह जरूर जानना चाहेंगे कि मैं कौन हूँ क्या मैं कोई

24

तांत्रिक हूँ, पुजारी हूँ, या साधू हूँ, तो मैं आपको बतला दूँ की मैं ऑफिस में काम करने वाला एक आम इंसान हूँ। मेरा परिवार एक साधारण मध्यम वर्गीय परिवार है। मेरे पिता सरकार में एक अच्छे ओहदे पर थे। घर के एक कमरे के एक भाग में कुछ देवताओं की मूर्तियां और तस्वीरें रखी थी और घर का वही भाग हमारा मंदिर था। माँ घर का काम देखती थी। वे प्रतिदिन नहाने के बाद अगरबत्ती या दिया इस छोटे मंदिर में जला देती थी और लगभग ५ मिनट तक सब देवताओं को प्रणाम या अभिषेक करती थी। पिता शंकर के भक्त थे और प्रतिदिन नहाने के बाद वे १० से १५ मिनट तक उनकी और अन्य देवताओं की पूजा करते थे और कुछ स्त्रोतों का भी नियमित पाठ करते थे तभी वे खाना खाते थे, और हम भाई - बहन नहाने के बाद एक अगरबत्ती पूजास्थल पर जला देते थे पर यह हमारा प्रतिदिन का नियम नहीं था।

घर के कुछ नियमों का भी पालन हमें करना पड़ता था जैसे रात नौ बजे के पहले हमें घर आ जाना पड़ता था, हमें अकेले सिनेमा जाना मना था, पूरा परिवार एक साथ सिनेमा देखने जाते थे और यह भी ध्यान रखा जाता था कि फिल्म बच्चों को देखने के लायक है या नहीं। हमारे पढ़ने, खाने और सोने का समय निर्धारित था। किसी मित्र के साथ बाहर जाने के पहले यह बतलाना पड़ता था कि हम कहाँ और क्यों जा रहे हैं और तब अनुमति मिलने पर ही हम जा सकते थे। बचपन से मै बहुत ही जिज्ञासु था और हर चीज के बारे में मै यह जानना चाहता था कि वे कैसे काम करती हैं। खिलौने से मैं कुछ ही समय खेलता था और जल्द ही उसे उसे तोड़कर यह देखने लगता था कि वह काम कैसे करती है। बचपन में मैं रेडिओ, वायरलेस, दूरबीन, प्रोजेक्टर आदि बनाया करता था। शुरू से ही केवल एक ही चीज से मुझे लगाव नहीं था और वह चीज थी राजनीति। दसवीं तक आते-आते मैंने पढ़ाई पर ध्यान देना शुरु किया। दसवीं में पूरे प्रान्त में टॉप टेन लड़कों में मेरा नाम आया। उस समय स्कुल के नंबर के आधार पर ही कॉलेजों में एडमिशन होता था। इसलिए प्रान्त के सबसे अच्छे कॉलेज में मुझे दाखिला मिला और मै हॉस्टल में रहकर पढ़ने लगा।

कॉलेज में छह महीने बिताने के बाद मेरे साथ एक ऐसी घटना घटी जिसने मेरे जीवन को बदल कर रख दिया। पहले मेरे सर में दर्द रहने लगा। यह दर्द धीमा था पर लगातार रहता था। इसके साथ ही मैंने महसूस किया कि किसी चीज को पढ़ने के बाद समझने में मुझे परेशानी होती है और मेरी यादास्त भी कम होती चली जा रही है। मुझे एक न्यूरोलॉजिस्ट को दिखलाया गया। उसने कहा ये एक प्रकार का डिप्रेशन है जो इस उम्र में लड़कों को हो जाया करता है। उसने इसके लिए उसनें दवाये लिख दी। इन दवाओं के प्रभाव से मैं दिन में १४ घंटे सोया रहने लगा। डॉक्टर्स से पूछने पर उन्होंने कहा कि सोना इनकी सेहत लिए अच्छा है। अब ऐसी स्तिथि में कॉलेज में कैसे रहता? इसलिए मुझे मेरे पिता अपने साथ घर ले आये। मेरी पढ़ाई छूट गयी। फिर मुझे दूसरे डॉक्टर्स से भी दिखलाया

गया जिन्होंने मेरी दवा बदली। मेरी नींद कुछ कम हुई। इन सबके कारण पढ़ाई में मैं एक साल पीछे चला गया और अब मै पहले जैसा पढ़ नहीं पता था। इस दौरान कई और डॉक्टर बदले गए और मै पहले से धीरे-धीरे ठीक होता गया। पर मै अपने जीवन का अमूल्य समय गवाँ चुका था। मैं डॉक्टरी पढ़ना चाहता था पर मेडिकल कम्पटीशन में मुझे अच्छे अंक नहीं मिले इसलिए मै मेडिकल कॉलेज में एडमिशन नहीं ले पाया। बाद में मैंने सामान्य कॉलेज से बीएससी और एमएससी किया। इसके बाद मुझे एक ऑफिस में अकाउंटेंट के काम पर संतोष करना पड़ा। मेरे पिता ने मुझे कहा चलो एक तरह से तुम्हारे लिए यह ठीक ही है, तुम्हे केवल १० से ५ काम करना पड़ेगा उसके बाद का समय तुम अपनी दूसरी शौक को पूरा करने में लगा सकते हो, तुम्हारे शौक भी तो इतने सारे हैं और उनके बिना तुम रह भी नहीं सकते। बाद में मैंने यह सोचा कि मुझे शायद यही करना था, अगर मै डॉक्टर हो गया रहता तो शायद यह किताब मैं नहीं लिख पाता। पढ़ने का मुझे शुरू से ही शौक था मै हर चीज के बारे में जानना चाहता था। अपनी बीमारी से तो मै परेशान था ही मैंने सोचा कि क्यों न खुद अपनी बीमारी के बारे में जाना जाये खुद क्यों न अपनी दवाई खोजी जाये? मैंने एलोपैथी की किताबों का अध्यन शुरू किया और खुद अपनी दवाएँ खोजकर उनका इस्तेमाल करना शुरू किया और मै अब अपने आप को पहले से ज्यादा बेहतर महसूस करने लगा, पर मैंने पाया कि इस पद्धति से मेरी बीमारी पूरी तरह ठीक नहीं हो सकती;, मुझे उम्र भर दवा लेते रहना पड़ेगा। तब मेरा ध्यान अन्य चिकित्सा की अन्य पद्धतियों की ओर गया और तब मैंने आयुर्वेद, होमियोपैथी का भी अध्ययन किया। रोगों को ठीक करने वाली पद्धतियों पर मेरी रूचि बढ़ी और तब मैंने एक्यूप्रेशर, मैग्नेटोथैरेपी, नेचुरोपैथी यहाँ तक कि एनर्जी - हीलिंग का भी का भी अध्यन किया।

बाद में भविष्य जानने की ओर मेरी रूचि बढ़ी तब मैंने, हस्तरेखा, ज्योतिष, अंक विज्ञान का भी अध्यन किया। तंत्र-मंत्र की किताबों की

ओर भी मेरा ध्यान गया और मैंने उनकी भी बहुत सी किताबे पढ़ी। मैंने कुछ मन्त्रो को किताबों के अनुसार सिद्ध कर इस्तेमाल किया पर हर बार मुझे असफलता मिली और मै यह सोचने लगा की कही यह सब बकवास तो नहीं?

मेरे फूफा और डायन

एक बार मेरे फूफा मेरे घर पर कुछ दिनों के लिए आये। मैंने सुन रखा था की उन्होंने किसी बच्चे को डायन के चंगुल से मुक्त किया था। तंत्र-मंत्र में शुरू से मेरी रूचि थी इसलिए मै उनके मुँह से इस कहानी को सुनना चाहता था। मेरे फूफा काफी गम्भीर स्वभाव के थे और कम ही बोलते थे इसलिए इसके बारे में उनसे पूछने में मुझे संकोच होता था पर वे मुझे मानते बहुत थे इसलिए मैंने हिम्मत जुटाइ और एक दिन अकेले में मैंने उनसे इसके बारे में पूछा, थोड़े आनाकानी के बाद उन्होंने मुझे अपनी आपबीती सुनाई।

मैंने उनसे कहा कि डायन के बारे में किताबो से मुझे ज्यादा जानकारी नहीं मिली है इसलिए पहले इनके बारे में आप मुझे बतलाये।

उन्होंने कहा कि भूत-प्रेत, चमत्कार, काली शक्तियों और अलौकिक ताकतों से भरी इस दुनिया में बहुत कुछ ऐसा है जो इंसानी समझ से बिल्कुल परे है, इतना कि विज्ञान भी इनके होने का कारण कभी स्पष्ट नहीं कर पाया है। महाराष्ट्र के लातूर जिले में बसा एक छोटा सा गांव है हारांगुल, जिसके बारे में यह माना जाता है कि यही से डायनों का उद्भव हुआ था । अक्सर लोग यह सोचते हैं कि डायने बूढी और बदसूरत होती है, उनके पैर उलटे रहते है। पर यह धारणा बिलकुल गलत है डायनें खूबसूरत और जवान भी हो सकती है और उनके पैर भी उलटे नहीं रहते।

गाँव में गरीब और निम्न जाती के लोगों पर बड़ी जाती के पैसे वाले लोग बहुत जुल्म ढाते है, कुछ लोग उनका बलत्कार कर देते है और वे कुछ नहीं कर पाती, कुछ औरतो को संतान नहीं होता या जब वे विधवा हो जाती है तो उनके अपने रिस्तेदार ही उसकी संपत्ति हड़प जाते हैं। डायन ऐसी ही स्त्रियों को चुनती है जो सताई हुई हो, जो किसी से बदला लेना चाहती हो या उनमे ईष्या की भावना भरी हुई हो। तब वे उसे बस में करकर ४/५ मंत्र सिखा देती है और उसे इस लाइन में ले आती है।

पहली बार कोई औरत किसी से बदला लेने के लिए यह विद्या सीखती है। इनका गुरु इन्हे मंत्र सिखाने के बाद इनसे अपने परिवार के किसी सदस्य, चाहे वह उसका पति हो, दामाद हो या बेटा की बलि मांगता है जो इन्हे देना ही पड़ता है नहीं तो ये पागल हो जाती है। जिस व्यक्ति की बलि देना ये स्वीकार करती है, इनका पहला जादू उसी पर चलता है और उसकी असामयिक मौत हो जाती है।

इस विद्या को सीखने के बाद ये पहले उसका परीक्षा किसी पेड़ या जानवर पर करती है और अगर वो पेड़ सूख जाता है या जानवर मर जाता है तब यह मान लिया जाता है की अपनी विद्या में ये निपुण हो गयी है।

डायन को ख़त्म करना किसी साधारण तांत्रिक के वश की बात नहीं होती क्योंकि इनका भूत हरदम इनके साथ रहता है और पल-पल इनको सब बातों की सूचना देता रहता है,, साथ ही साथ ये अपने पिंड को छुपा कर रखती है जिसे ढूढ़े बिना इनका कुछ नुक्सान पहुचान मुश्किल होता है।

मैने तब पूछा कि सुना है की आपने डायनो के चंगुल से किसी बच्चे को आजाद कराया था, इस घटना के बारे में मुझे बतलाये। तब उन्होंने कहा की गाँव में एक घर में एक छोटे बच्चे की असामयिक मौत हो गयी थी। हिन्दुओ में लाश को जलाने की परंपरा है पर बच्चों की असामयिक मौत पर

उन्हें दफ़नाने का रिवाज है। इसलिए उस परिवार ने बच्चे को शमशान में ले जाकर गाड़ दिया गया। उसके जनाजे में शामिल होने वाले कुछ लोग एक शादी में बगल के गाँव गए थे जहाँ से लौटते-लौटते आधी रात हो गयी। गाँव के रास्ते के बीच में ही शमशान पड़ता था। शमशान के बगल से गुजरते हुए उन्हें वहां कुछ हलचल दिखाई दी। दूर से ही उन्होंने देखा की कुछ औरते एक गोलाकार घेरा बना कर नाच रही है और साथ साथ कुछ गा भी रही है। ये लोग उस झुण्ड से दूर छुप कर खड़े थे। ध्यान देने पर उन्हें गाने के कुछ बोल सुनाई दिए और उन्होंने पाया किया कि उस गीत के बोल बहुत ही अश्लील थे। उन्होंने यह भी देखा कि वे उसी स्थान के पास नाच रही थी जहाँ उन्होंने दो दिन पहले बच्चे के शरीर को दफ़नाया था। बच्चे की कब्र खुदी हुई थी और उनके गोद में एक जिन्दा बच्चा था जिसे दुलार कर रही थी। यह सब देख कर उन्हें समझ में आ गया की ये सब डायन है और ये उसी बच्चे जिसको इन्होने दो दिन पहले दफनाया था जिन्दा करके दुलार कर रही थी। वहां रहना खतरनाक समझकर ये लोग गाँव की ओर चल पड़े।

दूसरे दिन उन्होंने यह बात अन्य गाँव वालों को बतलाया और देखते ही देखते यह बात पूरे गाँव में आग की तरह फैल गयी।

इस बात को मेरे फूफा और उनके दोस्तों की मंडली ने भी सुना। मेरे फूफा बहुत निडर थे, उन्होंने दोस्तों के बीच यह प्रस्ताव रखा कि इस बच्चे को हमें जिन्दा गाँव लाना चाहिए। फूफा ने अपने साथियों से उनका विचार पूछा। सब इस बात से सहमत थे कि बच्चे को जिन्दा ले आना चाहिए। तब फूफा ने पूछा की इस काम में कौन-कौन उनका सहयोग देगा तो उनके बहुत से दोस्त पीछे हट गए आखिर डायनो का खतरा कौन मोल लेना चाहता है। पर उनके ४ दोस्त इसके लिए तैयार हो गए। यह निश्चय किया गया कि इस काम को अगर करना है तो देर नहीं करनी चाहिए और उन्होंने उसी रात यह काम करने की ठान ली।

इस बात की सच्चाई को परखने के लिए मेरी यह तीब्र इच्छा थी की मैं गाँव जाकर उस बच्चे से मिळू पर मै जनता था कि मुझे परिवार की ओर से इसकी अनुमति नहीं मिलेगी। इसे बाबजूद मै इस घटना के बारे में इसलिए लिख रहा हूँ की मुझे अपने फूफा की बातों पर पूरा विश्वास था और उनके ऐसा शांत आदमी मुझसे क्यों गलत कहेगा और इससे उनको क्या फायदा मिलता ?

त्रिकालदर्शी काजल

एक दिन दोपहर के समय मै बाजार जा रहा था। बाजार जाने के रास्ते के बीच में ही शहर की कचहरी पड़ती थी। और दिनों की तरह आज भी कचहरी में बहुत भीड़ थी और मै उन सब को देखता हुआ आगे बढ़ता जा रहा था। एक जगह पर मुझे लोगों की भीड़ दिखी जो एक आदमी को घेरकर खड़े थे। मेरी यह जानने की उत्सुकता हुई की वह वह आदमी क्या बेच रहा है। इसलिए मै भी वहां जाकर भीड़ में शामिल हो गया।

उस आदमी के हाथ में एक डिबिया थी जिसमें काला काजल लगा था। वह बतला रहा था कि यह सिद्ध काजल है और उसके द्वारा विधिवत सिद्ध करके बनाया गया है इसलिए कोई भी आदमी इसे सीधे प्रयोग में ला सकता है। उसके अनुसार इस काजल को अगर एक १०-१२ साल के बच्चे को दिखाया जाय तो आवाहन करने पर उसे पीर बाबा उस डिबिया में दिखाई देंगे। उनसे दर्शक बहुत सी जानकारी ले सकते है। जैसे किसी व्यक्ति का अगर अपहरण कर लिया गया हो तो बाबा से कहने पर बाबा बच्चे को वह जगह दिखला देंगे जहाँ वह इस

समय है और उस जगह का नाम और पता भी इससे पता चल जायेगा। किसी का भूत और भविष्य के बारे में भी इससे पता लगाया जा सकता है। अगर किसी को लाटरी या सट्टे का नंबर पता लगाना है तो वह जानकारी भी बाबा दे सकते हैं। वह व्यक्ति एक बच्चे पर यह प्रयोग कर के भी दिखला रहा था पर यह जानना मुश्किल था की वह एक अनजान बच्चा था या उसी के द्वारा सिखाया पढ़ाया बच्चा था। साथ ही साथ मुझे यह भी शक हो रहा था की जिस व्यक्ति ने उसे सिद्ध न किया हो उसके द्वारा इससे काम लिया जा सकता है या नहीं। इतना होते हुए भी मेरे मन में उस डिबिया को खरीद लेने की तीब्र इच्छा जागृत हो गयी। मैंने उसका दाम पूछा तो वह मुझे जरुरत से ज्यादा लगा पर मैंने सोचा की जिस तरह के काम इस डिबिया से लिए जा सकते है उसे देखते हुए वह दाम उचित ही है। मेरे पास उस समय उतना पैसा नहीं था। उस ज़माने में हमें पॉकेट मनी के नाम पर बहुत कम पैसे मिलते थे इसलिए मैं उसे लिए बिना वहाँ से चला आया पर वह डिबिया रास्ते भर मेरे दिमाग में घूमती रही।

घर पहुँच कर मुझे याद आया की इस विद्या के बारे कही मैंने पढ़ा है और थोड़ा याद करने के बाद मुझे याद आ गया की मेरे पास तन्त्र-मन्त्र की एक पुरानी किताब है उसी में शायद इसका जिक्र है। मैंने तुरंत उस किताब को ढूढ़ कर निकाला। यह प्रयोग उस किताब में हजरत सिद्धि के नाम से दिया हुआ था। तब मेरे मन में विचार उठने लगे की क्यों न मै ही इसे सिद्ध करने की कोशिश करू? किताब पढ़कर मैंने उस मंत्र को सिद्ध करने की विधि पढ़ी जो मुझे आसान लगी। तब मैंने निश्चय कर लिया की मै इसे मंत्र को सिद्ध करके देखूँगा। मेरे कोई गुरु नहीं थे पर मैंने फिर भी निश्चय किया की मै इसे सिद्ध करूँगा क्योंकि इस मन्त्र से में किसी भूत-प्रेत जिन्न जैसे खतरनाक चीज की तो सिद्धि मै नहीं कर रहा जिससे कोई खतरा हो।

ख्वाजा खिज्र जिन्द पीर
मैदर मादर दस्तगीर
मेरा पिरान पीर
करो घोड़े पर भीड़
चढ़ो हजरत पीर
हाजर सो हाजर

मंत्र आपको विचित्र लग सकता है पर इनमे किसी तरह का बदलाव नहीं किया जाना चाहिए। इसी मंत्र का उलटी माला से जाप करते हुए चमेली के तेल से जलते हुए दिए के ऊपर कोई बरतन रखकर काजल बनाया जाता है।

हिन्दू मंत्रो की सिद्धि में माला के मनके आगे की तरफ निकाले जाते है जबकि मुस्लिम मंत्र सिद्ध करने में मनको को पीछे की तरफ ले जाते हुए मंत्र का जप किया जाता है इसे ही उलटी माला कहते है।

मंत्र सिद्ध हो जाने पर हजरत साधना का प्रयोग एक ऐसे बालक पर किया जाता जाता है जिसकी उम्र १० साल से अधिक न हो और जो मन से साफ़ और पवित्र हो। उसके अँगूठे के नाखून पर सिद्ध काजल लगा दिया जाता है। बालक को कहा जाता है की काजल में अपना मुँह देखे। जब उसे अपना चेहरा दिखने लगता है तो उसे कहा जाता की देखो एक मैदान दिखेगा। मैदान दिखने के बाद झाडू वाले को बुलाकर वह झाडू लगवाया जाता है और उसके बाद पानी वाले को बुलाकर उस स्थान पर पानी का छिड़काव करवाया जाता है। इसके बाद उसी स्थान पर चटाई गद्दे और तख़्त लगाने को कहा जाता है। इसके बाद बालक को कहा जाता है की पीर साहब से अर्ज करो की उनका भक्त उन्हें याद कर रहा है कृपया मुंशी को साथ लेकर हाजिर हो। पीर बाबा के हाजिर होने के बाद आपको जो जानकारी चाहिए उसके बारे में पीर साहब से पूछा जाता है अगर बालक को समझ में नहीं आये तो मुंशी जी को

लिख कर बतलाने को भी अर्ज किया जा सकता है। जब आपका काम हो जाये तो पीर साहब से तकलीफ देने के लिए माफ़ी मांगी जाती है और अगुठे की स्याही धो दी जाती है। प्रश्न करने के समय लौंग इलायची और लोहबान की धूप दी जाती है।

हिन्दू मंत्रो की सिद्धि के लिए नवरात्र का समय उपयुक्त रहता है, जबकि मुस्लिम मंत्र की शुरुआत किसी भी जुम्मे के दिन से की जा सकती है। नवरात्र के आने में काफी समय था इसलिए मैंने मुस्लिम मंत्र को ही सिद्धि के लिए चुना। एक बात मैं और स्पष्ट कर दूँ की सिद्धि के समय पश्चिम के बजाये पूर्व की ओरे ही मुँह करके मैंने मंत्र का जाप किया और माला भी सीधी ही फेरी क्योकि मेरा विश्वास था की हर दिशा में ईश्वर है और माला का उपयोग केवल मंत्रो की गिनती ठीक रखने के लिए किया जाता है।

२१ दिन पूरा होने के बाद मेरा पाठ पूरा हो गया और मैंने काजल भी बना ली अब केवल उसका प्रयोग कर देखना था की मंत्र सिद्ध हुआ या नहीं। इस काम के लिए मुझे एक लडके की जरुरत थी। एकाएक मुझे याद आया की मेरे चाचा के लड़के की उम्र भी १० साल के करीब है इसलिए मैंने उसके ऊपर प्रयोग करने का मन बना लिया। चाचा का लड़का भी राजी हो गया। मैंने एक दिन विधि पूर्वक पीर साहब का आह्वान किया और मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा लडके को काजल में पीर साहब दिखने लगे। अब मुझे कुछ विशेष सवाल पूछना तो था नहीं इसलिए मैंने पूछा कृपया दिखाए की मेरी छोटी चाची इस समय क्या कर रही हैं। लड़के को कुछ समय बाद चाची जी दिखने लगी। उसने बताया कि चाची जी पलंग पर बैठकर स्वेटर बुन रही है। इसके बाद मैंने पीर साहब से तकलीफ के लिए माफ़ी मांगी और उन्हें विदा कर दिया।

यह सिद्धि उन्होंने गाँव के काली मंदिर में की। साधना के अंतिम दिन उन्हें आधी रात को काली माँ की छवि एक परछाई के रूप में उनका दर्शन हुआ और तब उन्हें यह एहसास हुआ की उनकी साधना सफल हो गयी है। उन्होंने बतलाया की तब से हर जगह उन्होंने माता के मंत्र का प्रयोग कर सफलता पाई है और इसके अलावा उन्हें और कोई मंत्र सिद्धि करने की कभी जरुरत महसूस भी नहीं हुए न ही उन्होंने प्रयास किया।

दूसरे दिन उन्होंने चाचा के लड़के को बैठाया और उससे पीर बाबा को बुलाने को कहा। जब चाचा के लड़के ने कहा कि वे आ गए है तो उन्होंने बाबा से सिर्फ इतना कहा कि यह आपके रहने की सही जगह नहीं आप मेरे साथ चले मै आपको उचित स्थान दूँगा। उन्होंने पीर बाबा के जवाब का भी इन्तजार नहीं किया और चाचा के लड़के को जाने को कह दिया। इसके बाद वे अपनी पूजा में लग गए। उनकी पूजा में ज्यादा पूजन सामग्री की जरुरत नहीं थी उनकी मुख्य पूजा माँ के मंत्र का जाप था। उन्होंने तीन दिन तक मंत्र जाप किया। मैंने गौर किया कि वे सफाई का भी कोई खास ख्याल नहीं रखते कभी- कभी तो वे नहाये बिना भी पूजा पर बैठ जाते थे। जब उन्हें खाने के लिए बुलाया जाए वे खा लेते थे और फिर मंत्र जाप पर बैठ जाते थे। वे तम्बाकू का सेवन करते थे और तम्बाकू भी वे वही मंत्र जाप के बीच खा लेते थे और हाथ भी नहीं धोते थे क्योकि वे तांत्रिक विधि से पूजा कर रहे थे जिसमे ज्यादा पवित्रता की जरुरत नहीं होती। तीन दिन बिताने के बाद वे चले गए और चाचा के लडके को फिर कभी पीर बाबा के दर्शन नहीं हुए और मैंने भी चैन की सांस ली।

किसी साधना में गुरु की जरुरत है या नहीं?

भारतीय संस्कृति और दर्शन की परम्परा में गुरु को ब्रह्म से भी अधिक महत्व प्रदान किया गया है। लोकमान्यतानुसार प्रत्येक साधक के लिए गुरु की अनिवार्यता इसलिए है क्योंकि आध्यत्मिक साधना में कभी कभी विघ्न उपस्थित हो जाते है, कोई भी विघ्न उपस्थित होने पर साधक गुरु से मार्गदर्शन प्राप्त कर सकता है। साधक एक यात्री की भांति होता है जो लक्ष्य की ओर बढ़ने की लालसा तो रखता है, किन्तु चूँकि उसने लक्ष्य को नहीं देखा होता है, इसलिए उसे ऐसे मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है, जो न केवल मार्ग को देखे हो, वरन अच्छी तरह लक्ष्य को भी पहचानता हो। गुरु मिलने पर साधक के हृदय से संशय व आशंका की भावनाएं समाप्त हो जाती हैं। उसे साधना मार्ग में एक मददगार मिल जाता है, जो उसे विघ्नों और बाधाओं से परे निकाल सकता है उसके साधना में निराश होने पर उसमे आत्मविश्वास जगाकर आगे बढ़ा सकता है।

गुरु शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई है। इसके दो अक्षर (गु और रु के अर्थ इस प्रकार से हैं--गु शब्द का अर्थ है अज्ञान, रु शब्द का अर्थ है, ज्ञान का तेज, गुरु मानव जाति के आध्यात्मिक अज्ञान रूपी अन्धकार को मिटाते हैं और उसे और ज्ञान प्रदान करते हैं। यदि बच्चों से कहा जाए कि वे आधुनिक विज्ञान की शिक्षा किसी शिक्षक के बिना अथवा पिछले कई दशकों में प्राप्त ज्ञान के बिना ही ग्रहण करें तो क्या होगा? उन्हें संपूर्ण जीवन स्वयं को शिक्षित करने में बिताना पडेगा फिर भी उसे वह ज्ञान प्राप्त नहीं होगा। इसीलिए हमारी आध्यात्मिक यात्रा में भी गुरु का होना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

गुरु के बिना सफलता मिलना असम्भव है। अगर गुरु के बिना ज्ञान मिलता तो स्कूलों में गुरु नही होते इंसान अपने आप किताबों पढ़ कर ज्ञान प्राप्त कर लेता और आज तो वैज्ञानिक युग है गूगल पर सर्च करते ही सभी जानकारियां प्राप्त हो जाती है फिर भी विद्यार्थी गुरु बिना

उनके गुरु परम्परा में आते है शक्तियां हमसे जुड़ जाती है। जब आपसे इतनी शक्तियां जुड़ जाती है तो आपको सफलता मिलने से भला कौन रोक सकता है और यही कारण है गुरुमुखी को साधना एक बार में ही सिद्ध हो जाती है। इसके विपरीत बिना गुरु वाले को सिद्धि तो बहुत दूर की बात है कुछ अनुभव भी नही होता फिर वे दोष देने लगते है तंत्र साधना को। अगर आपको साधना मार्ग पर बढ़ना है तो गुरु धारण करना ही पड़ेगा नही तो आप बीच में लटक जाएंगे। गुरु का महत्व इसी बात से लगाया जा सकता है कि जितने भी भगवान के अवतार हुए उन्होंने भी गुरु धारण किया है।

हम जब भी किसी को गुरु बनाते है तो वो अपने पंथ सम्प्रदाय अनुसार मन्त्र दीक्षा देता है। वो मन्त्र कोई साधारण मन्त्र नही होता उस मन्त्र में पूरी गुरु परम्परा के सभी सिद्ध महात्माओं की शक्ति समाई रहती है। यह मन्त्र किसी को भी बताया नही जाता इसको बड़े गुप्त तरीके से गुरु अपने शिष्य के कान में फूकता है ताकि चारों और विद्यमान अदृश्य शक्तियां भी उसे सुन न पाए।

ये मन्त्र हमे गुरु से अदृश्य रूप से जोडे रखते हैं। गुरु मंत्र का जाप कभी भी वाचिक (बोलकर) या उपांशु (जिस जप में बहुत धीमें होठ और जिव्हा हिले) नही करना चाहिए इसका जप मानसिक होता है।

गुरु का इतना महत्व सुनकर लोग गुरु ढूढ़ना शुरू कर देते हैं और कभी- कभी तो दूसरों की नक़ल कर उनके गुरु को को अपना गुरु बना बैठते हैं। पर आज के ज़माने में गुरु खोजने में बड़ी सावधानी की जरुरत है क्यों आज ९९% गुरु नकली गुरु हैं। वे अपनी राजनैतिक ताकत बढ़ने के लिए, लोगों की मुफ्त में सेवा पाने, शिष्य के पैसों को धोखे से अपना बनाने के लिए और तो और स्त्रियों का शारीरिक शोषण करने के लिए गुरु बने बैठे हैं। कई तो आपको टीवी पर भी दीक्षा दे देंगे और बदले में

आपसे बहुत सा पैसा एठ लेंगे। आज एक एक गुरु के लाखो शिष्य होते है। आप खुद सोचिये शिष्य के मुसीबत में पड़ने पर वे उसकी सहायता कैसे करेंगे?

उसी तरह कभी- कभी लोग कही से मंत्र पढ़कर या सुनकर उसे सीखने को लालायित हो जाते हैं और किसी भी पंडित को अपना गुरु बना लेते हैं। पर यह जान ले कि किसी मंत्र का गुरु वही हो सकता है जिसने उस मंत्र को पहले से सिद्ध कर रखा हो क्योकि तभी वह उस मंत्र सिद्धि में आने वाली परेशानियों को पहले से जान सकता है और शिष्य को सावधान कर सकता है या मुश्किल में पड़ने पर उसे उबार सकता है।

इसी की जानकारी देने के लिए भगवान शिव ने असली गुरु की पहचान बतलाते हुए गुरुगीता में कहा है- हे पार्वती! पाखण्ड को अधिक महत्व देने वाले, ईश्वर को न मानाने वाले, दुराचारी, कृतघ्न, अनुचित कर्म करने वाले, अधीर, ब्यर्थ में तर्क देने वाले, कामी, क्रोधी, हिंसक, मुर्ख, अज्ञानी, पाप कर्म में रुचि रखने वाले गुरुओं से बचना चाहिए।

इससे भिन्न जो सच्चे गुरु हैं, उन्ही की श्रद्धा और भक्ति से सेवा करनी चाहिए। जिनका हृदय निर्मल है, जो शांत है, साधु स्वभाव के हैं, मितभाषी हैं, जो काम क्रोध से रहित हैं, सदाचारी और जितेन्द्रय हैं वही सच्चे गुरु हैं।

गुरु के बारे में एक और प्रश्न अक्सर पूछा जाता है की मेरे पहले से एक गुरु हैं तो मै दूसरा गुरु बना सकता हूँ या नहीं? इसका उत्तर है हां आप जरूर बना सकते हैं। सामान्य जीवन में भी हम कई बार अपने गुरु बदलते हैं, स्कूल में ही हमारे गुरु दूसरे होते हैं और कॉलेज में दूसरे। संगीत और क्रिकेट सीखने के लिए हम अलग- अलग गुरु रखते है। आप

खुद ही सोचिये एक गुरु को हर विषय की जानकारी कैसे हो सकती है? आप यह भी जान ले की भगवान् दत्तात्रेय के ही २४ गुरु थे।

एक जादूगर से मुलाकात

एक बार मेरे घर में एक जादूगर कुछ दिनों के लिए ठहरे। वे पिताजी के परिचित थे। मुझे तो जादू से पहले से ही लगाव था इसलिए उनसे कुछ सीखने के लिए मै उनसे नजदीकी बढ़ाने लगा। वे मेरा जादू के प्रति झुकाओ देखकर मुझे कुछ जादू बताने को तैयार हो गए। उन्होंने पहले मुझे कुछ छोटे- छोटे जादू दिखाएं। उन सभी को करने के लिए जादू की दुकानों पर मिलने वाली सामानो की जरुरत होती है इसलिए उनके बारे में यहाँ मै कुछ नहीं लिख रहा। मैंने उनसे कहा कि कुछ ऐसा जादू मुझे सिखाये जिसमें किसी बाहर के सामान की जरुरत न हो। तब उन्होंने कहा ताश का जादू बहुत प्रचलित है आओ मै तुम्हें ताश के कुछ जादू सिखा दूँ। तुम्हे मैं ताश के जादू का एक ऐसा ट्रिक बता देता हूँ जिसे सामान्य लोग नहीं जानते पर जादूगर अक्सर उसी का उपयोग करते है।

उन्होंने बताया की इस ट्रिक को पास कहते है। इस ट्रिक को दिखाने के लिए बहुत प्रैक्टिस और हाथ ही सफाई की जरुरत पड़ती है। इसके लिए जादूगर ताश के पत्तो को आपके सामने फैलाकर आपसे से एक पत्ता निकालने को कहता है। देखने में यह एक सामान्य सी बात लगाती है पर जादूगर इसमें एक ट्रिक का इस्तेमाल करता है वह ताश की गड्डी के सबसे नीचे वाली पत्ती को आपकी आखों से बचाकर देख लेता है। इसके बाद वह तास को

सैकड़ों पत्र मिले जिसमे उन्होंने बतलाया था कैसे किस बाबा ने उनसे पैसे लूटे थे और कैसे उनका कोई काम भी नहीं बना। उन पत्रों में बहुत से नामी संतो और बाबाओ का जिक्र था जिनके नाम को बतलाना यहाँ उचित नहीं।

आज धोखेबाज संत, बाबा, ओझा की भरमार है। यह समझ ले कि आज इस क्षेत्र मे नब्बे प्रतिशत लोग धोखेबाज ही हैं। इन्ही सब के कारण यह ज्ञान अब लुप्त होती जा रही है। आज तो जो सच्चे संत, ओझा हैं वे अपमान से बचने के लिए अपनी पहचान छुपा कर रहने लगे हैं और उन्हें खोजना भी मुश्किल है। लोगो का भूत प्रेत, भगवान् के अस्तिव पर से विश्वास उठ गया है और हजारों लोग आज भी इन नकारात्मक ऊर्जा से प्रभावित हैं पर वे इससे छुटकारा नहीं पाते। आपको क्या इस बात पर विश्वास होगा कि आज ६० प्रतिशत मानसिक और शारीरिक बीमारी वाले लोग नेगेटिव एनर्जी से प्रभावित हैं।

ऊर्जा चिकित्सा

(ऊर्जा उपचार)

जब मै स्नातक में पढ़ रहा था तो एनर्जी हीलिंग के बारे में मैंने सुना; कुछ लोग कहते थे कि यह सही है और कुछ लोग गलत, पर मै यह मानता हूँ कि किसी चीज के बारे में जाने बिना उस पर अपना मत देना गलत है। इसलिए मैंने खुद इनके बारे में जानने की सोची।

इसी चिकित्सा प्रणाली को भारत में आध्यात्मिक चिकित्सा, स्पर्श चिकित्सा के नाम से जाना जाता था जो सदियों से की जाती थी। ऊर्जा चिकित्सा एक ऐसी उपचार प्रणाली है जो शरीर, मन और आत्मा में ऊर्जा के संतुलन और प्रवाह को पुनरस्थापित करती है। यह तकनीक व्यक्ति के भौतिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक पहलुओं के साथ सीधे काम करती है। इसका उपयोग विभिन्न रोगों, विशेष रूप से मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता है।

यह उपचार शरीर में ऊर्जा प्रवाह की गड़बड़ी के कारण होने वाली बीमारी को ठीक करता है। ऐसा माना जाता है कि जब ऊर्जा का प्रवाह ठीक हो जाता है, तो व्यक्ति अपने आप ठीक हो जाता है। ऊर्जा उपचार की विभिन्न प्रकार की तकनीकें हैं, जो किसी व्यक्ति को ठीक करने के लिए अलग- अलग तरह से काम करती हैं।

ऊर्जा उपचार के 3 महत्वपूर्ण प्रकार हैं।

रेकी हीलिंग:

रेकी की खोज मिकाओ उसुई द्वारा की गयी थी। रेकी शब्द को दो जापानी शब्दों से बनाया गया है, जिसमे रे जिसका अर्थ है "ईश्वर का ज्ञान" और की का अर्थ है "ऊर्जा"। शरीर को चंगा करने के लिए इस थेरेपी में की या ब्रह्मांड की ऊर्जा का इस्तेमाल किया जाता है। इस पद्धति को करने के लिए बहुत सारे हैंड मूवमेंट और विशिष्ट प्रतीकों का उपयोग किया जाता है।

प्राणिक हीलिंग:

प्राणिक हीलिंग की खोज मास्टर चोय कोक सुई ने किया। प्राणिक हीलिंग शरीर की ऊर्जा को ठीक करने के लिए शरीर की जीवन शक्ति का उपयोग करती है। यह थेरेपी विशेष रूप से किसी व्यक्ति की आभा पर काम करती है। इस थेरेपी में, शरीर की विषाक्तता को साफ करने के लिए ऊर्जा का उपयोग किया जाता है।

क्वांटम टचः

क्वांटम-टच की खोज रिचर्ड गॉर्डन ने की। क्वांटम हीलिंग थेरेपी अनुनाद (रिजोनेन्स) के सिद्धांत पर आधारित है। इसमें शरीर में ऊर्जा का स्तर श्वास के माध्यम से बढ़ाया जाता है
जिससे रोग ठीक हो जाते है। क्वांटम हीलिंग शरीर के प्रतिरक्षा प्रणाली पर सकारात्मक प्रभाव डालती है।

ये एनर्जी हीलिंग पद्धतियाँ काम करती है या नहीं इसके लिए इनके बारे में जानना जरुरी था। सबसे पहले मैंने रेकी प्रणाली को पढ़ा। रेकी की किताब पढ़ने के बाद मुझे पता लगा की इसे वही कर सकता है जिसे किसी रेकी के आचार्य ने अपनी ऊर्जा से शक्तिकृत किया हो। मैंने पता किया

तो पाया की इसे सीखने में अच्छा खासा पैसा लगता है इसलिए मैंने इसे नहीं सीखा पर इसकी पुस्तकों का अध्यन जरूर किया।

इसके बाद मैंने प्राणिक हीलिंग और क्वांटम हीलिंग की किताबो को पढ़ा। मैंने पाया की उन दोनों के लिए किसी की दीक्षा लेने की जरुरत नहीं आप किताब पढ़कर अभ्यास करने के बाद इसका उपयोग कर सकते है। तो मैंने इनका अभ्यास करना शुरू कर दिया। मैंने गौर किया की तीनो पद्धतियाँ मूल रूप से एक ही हैं केवल अलग- अलग लेखकों ने थोड़ा बहुत इसके सिद्धांत और उपयोग करने के तरीके में रद्दोबदल कर उन्हें अपने नाम से प्रचारित किया है।

इन पद्धतियों में यह माना जाता है की हमारा शरीर एक ऊर्जा चक्र से घिरा हुआ है जिसे औरा कहते है। जब हम बीमार पड़ते है तो इस औरा के ऊर्जा प्रवाह में भी अवरोध उत्पन्न हो जाता है। अगर हम इस अबरोध को दूर कर दें तो रोग भी अपने आप दूर हो जाता है।

अचानक मुझे याद आ गया की हमारे शास्त्रों में पहले से ही औरा (आभामंडल) का जिक्र किया गया है और बतलाया गया है की जिनका तेज जितना अधिक रहता है उनका आभा मंडल उतना ही बडा रहता है। कई संतो के आभा मंडल तो कई मीटर तक फैले रहते हैं। इसीलिए जैसे ही हम संतो के नजदीक पहुंचते हैं हमें एक अजीब सी शांति महसूस होने लगती है। ठीक इसके विपरीत जब हम किसी बुरे आदमी के पास पहुंचते हैं तो उसका नकारात्मक आभामंडल भी हमें प्रभावित करता है और हमें बेचैनी होने लगती है। तस्वीरों में भी आपने देखा होगा कि महापुरुषों के चित्र में उनके सर के पीछे एक सुनहले रंग का चक्र बनाया जाता है यह चक्र उनके आभामंडल को ही तो दर्शाता है। हमने आभामंडल के ज्ञान को भुला दिया और विदेशियों ने उसपर और खोज की और उसे उपयोग में लाना शुरू किया।

जब मैंने इस पद्धति का अभ्यास कर लिया तो मैं इसका प्रयोग करने का अवसर ढूढ़ने लगा। एक दिन मेरी पत्नी ने कहा को उनकी जांघो में तेज दर्द होने लगा है। मैंने तुरंत उसपर ऊर्जा चिकित्सा का प्रयोग शुरू किया पांच मिनट बाद वे बोली दर्द जांघ से ख़त्म हो गया है पर अब वह दर्द पिंडलियों पर आ गया है। तब मैंने वहाँ पर ऊर्जा देना शुरू कर दिया और कुछ ही देर में वह दर्द भी गायब हो गया। एक बात मुझे परेशान करने लगी की जांघ का दर्द नीचे कैसे आया? क्योकि अगर जांघ में दर्द था तो इसका मतलब वहाँ की मांशपेशियों में खिचाव था, फिर दर्द नीचे कैसे आया? तभी मुझे याद आया कि आयुर्वेद में इन दर्दों को वात रोग के अंदर रखा गया है और वात का अर्थ होता है वायु अर्थात ये रोग वायु की तरह एक स्थान से दूसरे स्थान जा सकते है। उस समय मेरा सर उन ऋषियों के खोज पर और उनके ज्ञान पर झुक गया की कैसे उन्होंने उस ज़माने में इसकी खोज की होगी? मै इस पद्धति का इतना जल्द प्रभाव देखकर चकित रह गया।

इस तरह मैंने बहुत से रोगियों पर इसकी आजमाइस की और मुझे अधिकतर सफलता मिली। हां कुछ रोगियों को एक बार में आराम नहीं मिला उन्हें बार- बार करना पड़ा। शायद आदमी की संवेदनशीलता के आधार पर इसका प्रभाव कम या ज्यादा होता है। मै कोई पेशेवर तो था नही मेरे पास न अधिक रोगी थे न ही समय, इसलिए मै इस पद्धति पर ज्यादा प्रयोग नहीं कर पाया। पर एक बात तो मैंने महसूस किया कि यह पद्धति कारगर है।

स्वामी जी

एक दिन मेरे एक दोस्त ने मुझे कहा कि तुम्हे स्वामी जी से जरूर मिलना चाहिए। वे एक होम्योपैथिक क्लिनिक चलाते हैं और अध्यात्म में

उनको बहुत जानकारी है। मै एक दिन फुर्सत में था तो मैं उनसे मिलने चला गया। वे एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति थे, उनकी लम्बी सफ़ेद दाढ़ी थी और वे सफ़ेद पठानी सूट और पैजामा पहने थे। उनके क्लिनिक में रोगी कम थे पर मिलने वाले ज्यादा थे। जल्दी ही हममें अच्छी मित्रता हो गयी। वे मेरे अध्यात्म सम्बन्धी सभी प्रश्नों का उत्तर देते थे। उनके क्लिनिक में हर धर्म के लोग आते थे मेरी जान पहचान उनलोगों से भी हो गयी।

एक दिन मैंने उनसे पूछा की क्या अपने मंत्र साधना की है। उन्होंने कहा एक बार की थी। उन्होंने बतलाया की एक बार उनके हाथ एक मंत्र की किताब लगी। उनके पिता बहुत कठोर थे और पढ़ाई में अक्सर उन्हें मार पड़ती थी। उस किताब को पढ़ने के बाद उन्होंने वशीकरण की साधना करने की सोची। उन्होंने उस पुस्तक में बताई गयी विधि के आधार पर उस साधना को कुछ दिनों में पूरा कर लिया। उन्होंने कहा की सबसे पहले उन्होंने इसका प्रयोग अपने पिता पर किया। एक दिन वे पढ़ाई के समय रेडियो सुनने लगे। यह बात उनके पिता को पता लगी तो उन्होंने उसे बुलाया और वे भी बिना डर के उनके पास चले गए क्योंकि उन्होंने पिता पर वशीकरण का प्रयोग कर दिया था। पर उस दिन उनको जबरदस्त मार पड़ी। इस घटना के बाद उन्होंने वह पुस्तक फाड़ के फेक दी और कभी भी मंत्र सीखने की कोशिश नहीं की।

एक दिन हमलोगों कि महफ़िल जमी थी तब उन्होंने कहा मेरे एक प्रश्न का जवाब आपलोग दीजिये और पूछा "भगवान के माता-पिता कौन हैं? सबने अपने हिसाब से कुछ न कुछ जवाब दिया। अंत में खुद उन्होंने उत्तर दिया की भगवान् के माता-पिता है लालच और दुःख। अगर ये नहीं होते तो लोग शायद भगवन की खोज भी नहीं करते। उनका यह जवाब सभी को तर्कपूर्ण लगा।

इसी तरह एक दिन उन्होंने यह प्रश्न पूछा की सबलोगों ने यह कहावत सुनी होगी "न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी" लेकिन क्या आपने कभी सोचा है राधा तो किसी तेली की बेटी नहीं थी और वह नौ मन तेल होने पर ही क्यों नाचेगी। इस प्रश्न का सटीक जवाब किसी को नहीं सूझा। तब उन्होंने कहा यह कहावत ही गलत है। वास्तविक कहावत दूसरी थी पर बोलचाल या मजाक में इसमें न जाने कब किसने इसे बदल दिया और यह इस रूप में प्रचलित हो गया। उन्होंने कहा की वास्तविक कहावत यह थी "न मन का मेल होगा न राधा नाचेगी" उनका यह उत्तर सभी को तर्कपूर्ण लगा।

स्वामी जी के यहाँ एक अधेड़ उम्र के एक व्यक्ति आते थे। उनके बारे में मुझे पता चला की वे इस शहर में ओशो की संस्था के प्रमुख हैं। मेरी उनसे जान पहचान बढ़ी तो मैंने उनसे एक दिन पूछा क्या आपने ओशो से ही दीक्षा ली है। तो उन्होंने कहा हाँ मेरा सौभाग्य था की उस समय वे जीवित थे। मैंने उनसे पूछा -सुना है की दीक्षा देते समय वे शिष्य के माथे को अपनी ऊँगली से छूते और उस समय वे बेहोश होकर गिर पड़ते थे क्या आपके साथ भी ऐसा ही हुआ? तो उन्होंने कहा दीक्षा देते वक्त उन्होंने मेरे भी माथे पर अंगुली रखी थी पर मैं न तो बेहोश हुआ न ही मुझे कुछ महसूस हुआ।

एक दिन मैंने स्वामी जी से पूछा कि आप भगवान, तंत्र-मंत्र कुछ नहीं मानते आखिर आप क्या मानते हैं या करते हैं तो उन्होंने उत्तर दिया मै ध्यान (मैडिटेशन) करता हूँ, इससे सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है। मैंने उनसे पूछा ध्यान क्या है। उन्होंने बतलाया ध्यान का अर्थ एकाग्रता नहीं होता बहुत से लोग क्रियाओं को ध्यान समझने की भूल करते हैं- जैसे सुदर्शन क्रिया, भावातीत ध्यान क्रिया और सहज योग। किसी मूर्ति का स्मरण करना भी ध्यान नहीं है, माला जपना भी ध्यान नहीं है। अक्सर यह कहा जाता है कि पांच मिनट के लिए ईश्वर का ध्यान करो- यह भी ध्यान नहीं, स्मरण हैं। ध्यान है क्रियाओं से मुक्ति,

विचारों से मुक्ति। हमारे मन में एक साथ असंख्य कल्पना और विचार चलते रहते हैं। इससे मन-मस्तिष्क में कोलाहल-सा बना रहता है। हम नहीं चाहते हैं फिर भी यह चलता रहता है। हम लगातार सोच-सोचकर स्वयं को कमजोर करते जा रहे हैं। ध्यान अनावश्यक कल्पना व विचारों को मन से हटाकर शुद्ध और निर्मल मौन में चले जाना है। भीतर से जाग जाना ध्यान है। सदा निर्विचार की दशा में रहना ही ध्यान है। सबकुछ कहीं और नहीं आपके अंदर ही है।

बौद्ध दर्शन का एक सूत्र है 'अप्प दीपो भव' अर्थात अपना प्रकाश स्वयं बनो। गौतम बुद्ध के कहने का मतलब यह है कि किसी दुसरे से उम्मीद लगाने की बजाये अपना प्रकाश (खुद बनो)। एक मात्र ध्यान ही ऐसा तत्व है कि उसे साधने से सभी स्वतः ही सधने लगते है।

आज से ५००० साल पहले शिव ने विज्ञान भैरव तंत्र नामक एक पुस्तक की रचना की। इस पुस्तक में पार्वती शिव से पूछती है---

1.
हे शिव, आपकी वास्तविकता क्या है?

2.
आश्चर्य से भरा यह ब्रह्मांड क्या है?

3.
इस विश्व का बीज क्या है?

4.
विश्व जिसके चारो ओर घूमता है वह केंद्र ث कहाँ है?

5.
इस परिवर्तनशील जीवन से परे क्या है?

6.
अंतरिक्ष और समय, नामों और विवरणों के ऊपर उठकर हम इसमें से कैसे प्रवेश कर सकते
हैं? मेरी शंका दूर करे।

तब भगवान शिव परम वास्तविकता को खोजने के लिए ११२ ध्यान के तकनीकों का वर्णन किया है। और कहा कि इनमे से किसी एक ध्यान की तकनीक का उपयोग कर कोई भी उपरोक्त प्रश्नो का उत्तर पा सकता है। जितने भी मठ और सम्प्रदाय हैं वे इनमे से ही किसी एक का उपयोग करते हैं।

स्वामी जी एक सूफी संत सरकारे-हुजूर को बहुत महत्व देते थे। सरकारे हुजूर अब पर्दा कर गए हैं पर वे जब जिन्दा थे तभी से वे उनके पास जाते थे। सरकारे हुजूर की दरगाह हमारे शहर से लगभग ५० किलोमीटर की दूरी पर है। मैंने एक दिन उनसे पूछा मैनें सुना है वे बड़े करिश्माई व्यक्ति थे क्या आपने उनका कोई करिश्मा देखा है या सुना है? स्वामी जी ने कहा ऐसे तो बहुत सी घटनाएं है पर मै तुमको २ घटनाएं बतलाता हूँ। इस शहर के ही एक वार्ड पार्षद है गुप्ता जी वे एक बार सरकारे हुजूर के उर्स में गए थे। रात को जब वे उनसे लौटने की अनुमति लेने गए तो सरकारे हुजूर ने कहा रात बहुत हो गयी है तुम आज रात यही रुक जाओ सवेरे चले जाना। उनकी आज्ञा कोई नहीं टालता था, गुप्ता जी उस रात वहीं रुक गए। रात के करीब २ बजे लोगो ने २ गोली चलने की आवाज सुनी। सुबह लोग यह पता करने निकले की आखिर गोली किसने चलाई तो पता चला सरकारे हुजूर ने ही चलाई थी। गुप्ता जी सवेरे अपने घर निकल गए।

वहाँ जाकर उन्हें पता लगा की उनके घर १०-१२ डकैत घुस आये थे पर वे भाग गए क्योकि न जाने कहाँ से गोली चली और २ डकैतों को लगी उसके बाद सभी डकैत भाग गए। गुप्ता जी को समझ में आ गया की यह किसका काम था। गुप्ता जी उलटे पैर दरगाह पर लौट गए। जब वे सरकार हुजूर के पास पहुंचे तो उन्होंने मुस्कुरा कर कहा तुम्हारा कुछ नुक्सान तो नहीं हुआ मैंने उन्हें डराकर भगा दिया था।

उन्होंने कहा कि एक बार मेरे पास मेरे एक दूर के रिश्तेदार बिना बताए अपने लडके को लेकर पहुंच गए। उनके लडके को ब्लड कैंसर हो गया था। वे मुझसे कहने लगे इसकी जिंदगी खतरे में है कृपया आप इन्हे सरकारे हुजूर का आशीर्वाद दिला दे। सरकारे हुजूर के पास ऊनके बिना बुलाये जाना मना था इसलिए मै पेशोपेश में पड़ गया की क्या करूँ पर वे इतना रो रहे थे कि मुझे दरगाह जाना पड़ा। वहां पहुँचने पर मैंने सरकारे हुजूर से उसे ठीक करने की प्रार्थना की तो सरकारे हुजूर ने कहा किसने कहा इसे ब्लड कैंसर है इसे केवल खून की कमी है जाओ इसे खून चढ़वा देना और अपनी दवाये दे देना और भविष्य में कभी भी मेरी अनुमति के बगैर किसी को मत लाना। मैंने उनकी आज्ञानुसार उस बच्चे को खून चढ़वाया और अपनी कुछ दवाएं दी, तीन महीने बाद फिर से जांच करने पर उसे कैंसर नहीं निकला।

मेरे गुरु से मेरी मुलाकात

एक दिन सरकार हुजूर से मिलने एक मुस्लिम लड़का आया। लड़के की उम्र २०-२२ के बीच थी। बात करने पर पता लगा कि वे भूत प्रेत से परेशान इंसानो को ठीक भी करते हैं। यह सुनकर मेरे मन में उनके बारे में और

होती है। मै इस मन्त्र को हर रात पढ़ लिया करता था जिससे मै इन बुरी शक्तियों से बचा रहूँ।

मेरे घर से कुछ दूरी पर एक गरीब परिवार था जिन्हे एक १० साल की एक लड़की थी। एक रात करीब 11 बजे वह बहुत डर गयी और काँपने लगी और माता- पिता के पूछने पर उसने बतलाया की उसके नजदीक दो डरावने व्यक्ति खड़े हैं जिससे उसे डर लग रहा वे कह रहे हैं कि हम तुम्हे अपने साथ ले जाएंगे। माता पिता को कुछ नहीं दिख रहा था और लड़की लगातार रोये जा थी और उनको कसकर पकड़ी हुई थी। माता पिता को समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। पत्नी ने कहा किसी जानकार मौलवी को बुलाना चाहिए। पर उतनी रात को कोई मौलवी कहाँ मिलता और नजदीक में कोई था भी नहीं। अचानक उनकी पत्नी को मेरी याद आई। उसने कहा की नजदीक में महमूद नाम का एक लड़का रहता है तबतक उसे ही बुलाया जाए मैंने सुना है वह कुछ जानता है। उस लड़की के पिता मेरे पास आये, घटना के बारे में बतलाया और कहा आप कुछ करिये जिससे लड़की का डर कम हो। मैंने कहा मुझे ज्यादा मंत्रो की जानकारी नहीं और मै इस तरह के काम करता भी नहीं पर वे मिन्नतें करने लगे की कम से कम मेरे घर चलकर उसे देख तो लीजिये। उन्होंने इतनी मिन्नत की तो मेरे माता-पिता ने कहा कुछ करो या नहीं कम से देख तो आओ इनको संतोष हो जायेगा। मै उनके साथ उनके घर पहुँचा। लड़की वास्तव में बहुत डरी हुई थी। मैंने पूछा तुम्हे वे कहाँ दिख रहे है तो वह बोली मेरे पास ही वे खड़े हैं। मुझे बस केवल एक रक्षा मंत्र ही आता था। मुझे याद आया की पुस्तक में यह भी लिखा था किसी भूत प्रेत के ग्रसित व्यक्ति के पास इस मंत्र का पाठ करने पर वे भाग जाते कि इसलिए मैं उसी मंत्र का जाप करने लगा। कुछ ही देर में लड़की ने कहा वे मेरे पास से दूर खिड़की के पास चले गए है। यह सुनकर मेरा आत्मविश्वास बढ़ गया अब मैंने उस मंत्र को पढ़कर खिड़की की तरफ फूंक मारना शुरू किया तो लड़की ने कहा वे वहाँ से भी चले गए है और लड़की

का डर खत्म हो गया। इस घटना के बाद मुझे मंत्रो की शक्ति पर विश्वास हो गया की ये वास्तव में काम करते है।

मैंने उनसे कहा इसके बाद का कुछ अनुभव सुनाइये। उन्होंने कहा कुछ दिनों तक मैंने कुछ नहीं किया। एक दिन मैंने एक बुकस्टाल पर सम्मोहन (हिप्नोटिज्म) पर एक किताब देखी और उत्सुकता बस उसे खरीद कर ले आया। उसे पढ़ने के बाद मुझे लगा की इसे सीखना चाहिए और मै सम्मोहन के अभ्यास में लग गया।

सम्मोहन (हिप्नोटिज्म)

सम्मोहन का प्रयोग भारतवर्ष में प्राचीन काल से किया जा रहा है जब बाहरी दुनियाँ के लोगो को इस बिद्या के बारे में कुछ भी जानकारी नहीं थी। इसे उस समय 'प्राण-विद्या',' त्रिकालविद्या', मोहिनी और वशीकरण विद्या के नाम से जाना जाता था। अंग्रेजी में इसे ही हिप्नोटिज्म के नाम से पुकारा जाने लगा। हिप्नोटिज्म यूनानी भाषा हिप्नॉज से बना है जिसका अर्थ होता है निद्रा। भारतवर्ष में प्रयोग किया जाने वाला 'सम्मोहन' शब्द 'हिप्नोटिज्म' से कहीं ज्यादा व्यापक और सूक्ष्म है।

ऐसा कहा जाता है कि दुनिया में कत्लेआम मचा देने वाले हिटलर ने सम्मोहन के प्रभाव में ये कदम उठाए। पहले विश्वयुद्ध के बाद हिटलर कई बीमारियों का शिकार हो गया था, जिसमें से एक थी हिस्टीरियल ब्लाइंडनेस। डेली मेल की एक रिपोर्ट के अनुसार इलाज के दौरान हिटलर डॉ एडमण्ड फॉस्टर (डीआर एडमंड फॉरस्टर) के संपर्क में आया, जिन्होंने उनके इलाज में सम्मोहन का प्रयोग किया था इलाज के बाद से हिटलर यह मानने लगा कि उसे जर्मनी को सबसे आगे ले जाना है और इसी

क्रम में उसने कत्लेआम मचा दिया और लाखों लोगों को उसने अकारण मौत के घाट उतार दिया। इस बात को देखकर डॉ एडमंड को अपने आप पर बहुत ग्लानि हुई और उन्होंने खुदकशी कर ली थी।

ऐसा माना जाता है कि सबसे पहले स्विटरजरलैंड के चिकित्सक परसेलियस (पैरासिलसूस) ने पंद्रहवी सदी में मरीजों को दर्द से राहत देने के लिए उन्हें सम्मोहित करना शुरू किया था। उस वक्त में बेहोश करने की दवा एनस्थीशिया नहीं थी, लिहाजा वे संक्रमित पैर, हाथ या शरीर किसी हिस्से को काटने के लिए मरीज को सम्मोहित किया करते थे। ये एक तरह से दर्द निवारक का काम करता था।

प्राचीन ग्रीस (ग्रीस) में सम्मोहन के लिए बाकायदा मंदिर होते थे, जिन्हें स्लीप टेंपल्स, ड्रीम टेम्पल्स या अस्कलियपीयस का मंदिर के नाम से से जाना जाता था जो ग्रीक के पौराणिक कथाओं के आधार पर सबसे पहले डॉक्टर, असलपियस को समर्पित है जिन्हें ईश्वर का दर्जा प्राप्त था। असलपियस के बारे में कहा जाता था कि वे इतने कुशल डॉक्टर थे कि वे मृतकों को भी जिन्दा कर देते थे। यह एक ऐसी प्रक्रिया थी जिसमे मरीज इस उम्मीद के साथ मंदिर में सो जाते थे कि उन्हें स्वप्न या वास्तव में आस्सिपियस से मुलाकात होगी जो उन्हें ठीक कर देंगे। इन तरीकों को हीलिंग या विश्वास चिकित्सा के रूप में माने जाने के बावजूद, वे अत्यधिक प्रभावी थे, कई लिखित विवरण रोगियों के उपचार से संबंधित विस्तृत विवरण प्रदान करते हैं। 350 ईसा पूर्व लगाए गए तीन बड़े संगमरमर के बोर्ड में नाम केस हिस्ट्री, शिकायत के साथ लगभग 70 रोगियों के इलाज का विवरण है, जो मंदिर में एक समस्या लेकर आए थे और उसे यहाँ ठीक दिया गया था।

भारतवर्ष में इस विद्या का इस्तेमाल साधु-संत सिद्धियां और मोक्ष प्राप्त करने के लिए करते थे। सम्मोहन के लिए भारत में त्राटक का

उपयोग किया जाता था जिससे साधक को भूत भविष्य देखने की क्षमता प्राप्त हो जाती थी यह देखकर काला जादू करने इसे सीखकर गलत काम करना शुरू कर दिया जिससे सम्मोहन बदनाम हो गयी और लोग सम्मोहनकर्ता को गलत समझने लगे और यह कला लुप्त सी हो गयी। सम्मोहन से मिलती-जुलती हैं त्राटक और मोहिनी, इससे वशीकरण कर किसी को अपने वश में किया जाता है। लेकिन इनके करने का
तरीका और प्रभाव अलग-अलग होता है इसलिए इन्हे अलग अलग वर्गों में रखा गया है।

सम्मोहन पूरी तरह से हमारे अचेतन मस्तिष्क पर आधारित होता है। यूं तो हमारे अवचेतन मस्तिष्क को शक्तिशाली व एकाग्र करने की अनेक विधियां शास्त्रों में बताई गई है, लेकिन उन विधियों में भी दो विधियां प्रमुख है, ये दो विधियां हैं,

पहली त्राटक तो दूसरी है ध्यान।

त्राटक क्या है - किसी वस्तु अथवा बिंदु को एकटक बिना पलक झपकाए देखने को त्राटक कहते हैं। इससे साधक मन और नेत्रों को वश में करने का प्रयास करते हैं। इसके लिए आंखों के ठीक सामने जलती हुई मोमबत्ती, पेंडुलम या लाल बल्ब को लगातार पलक झपकाए बिना अधिक से अधिक समय तक देखने का अभ्यास जाता किया है। इसके लिए मंत्रोच्चारण का भी सहारा लिया जाता है।

मेरे गुरु ने बतलाया कि किताब से पढ़कर मैंने त्राटक साधना शरू कर दी। शुरू में मै ५ मिनट से ज्यादा त्राटक नहीं कर पाता था क्योकि बिना पालक झुकाये ५ मिनट तक देखना मुश्किल काम था। उससे मुझे किताब में लिखे त्राटक के कुछ भी लाभ नहीं मिल रहे थे तो मैंने अभ्यास करके उसे १ घंटे तक बढ़ा लिया। पर फिर भी मेरे आँखों में कोई शक्ति

नहीं आई हाँ मुझे सर और आँखों में लगातार दर्द रहने लगा। तब मैंने यह साधना बंद कर दी। इसके बाद मैंने सोचा की बिना गुरु के कुछ भी सिद्ध नहीं हो सकता इसलिए मैंने गुरु खोजना शुरू किया।

लोना चमारिन

मैंने गुरु की खोज शुरू कर दी। मै बहुतों के पास गया पर कोई मुझे तंत्र मंत्र सिखाने को तैयार न हुआ। अंत में मै एक इस्माइल नामक व्यक्ति से मिला वह मुझे सिखाने को तैयार हो गया पर उसने इसके लिए कहा कि तुम्हें पैसे देने पड़ेंगे। कोई चारा न देखकर मैं पैसे देकर ही सीखने को तैयार हो गया। उन्होंने कहा कि मैं तुम्हे लोना चमारिन का मंत्र दे रहा हूँ। यह मंत्र मैंने खुद सिद्ध कर रखा है। इसके लिए उन्होंने कहा यह मंत्र तुम्हे आधी रात को ४१ दिनों तक अमुक संख्या में पढ़नी होगी। इससे तुम्हे लोना चमारिन सिद्ध हो जाएगी। लोना चमारिन की मदद से तुम भूत प्रेत अथवा रोगो से ग्रस्त व्यक्ति को ठीक कर सकोगे साथ ही साथ इससे वशीकरण भी सिद्ध हो जायेगा और यह तुम्हे किसी के भी भूत भविष्य की जानकारी भी देगी। मै एक ही मंत्र के इतने फायदे जानकार खुश हो गया और अपनी साधना शुरू कर दी। साधना के ७ दिन बीत गए तभी मुझे अपने एक पुराने मित्र से भेट हुई। उसने भी कुछ मंत्रो की सिद्धि कर रखी थी। मैंने उससे लोना चमारिन की सिद्धि के बारे में पूछा।

उसने मुझे बताया की लोना चमारिन की सिद्धि को कई तांत्रिक मना करते हैं और और कहते है कि यह एक पैशाचिक साधना है। साधना के अंत में

लोना चमारिन खुद प्रकट हो जाती है। लोना चमारिन एक बदसूरत स्त्री है जिसके दांत बाहर निकले हुए है और जो बहुत गन्दा रहती है। वह नग्न आकर आपके गोद में बैठ जाएगी और आपको सम्भोग के लिए प्रेरित करेगी जिससे आप इंकार नहीं कर सकते। इसके बाद वह हर समय आपके साथ रहती है और आपके सब काम करती है। आपको जब वो चाहे सम्भोग करके उसे संतुष्ट करना पड़ता है जो किसी साधक के बस की बात नहीं होती। वह उसके पारवारिक जिंदगी को भी बर्बाद कर देती है। चुकी यह एक पैशाचिक शक्ति है इसलिए इसके संपर्क में आने के बाद आपके स्वभाव में धीरे धीरे बदलाव आना शुरू हो जाता है। वह आपको कामी, क्रोधी, नशेडी और शराबी बना देती है। यह सुनकर मै बहुत डर गया और मैंने उसी दिन से इस सिद्दी को करना छोड़ दिया और अल्लाह को समय पर बचा लेने के लिए धन्यवाद दिया।

इसी तरह की एक और साधना है "कर्ण पिशाचिनी साधना" आपको इसकी सिद्धि के बारे में इंटरनेट पर मंत्र और साधना विधि आसानी से मिल जाएगी। ज्योतिष, हस्तरेखा और भविष्य बतलाने वाले लोग इसकी साधना की कामना रखते है क्योकि यह किसी के भूत और भविष्य को सही-सही बतला देती है इसलिए पैसा और प्रसिद्धि की चाह में के लोग किताबों या इंटरनेट से पढ़कर इसकी साधना शुरू कर देते है। जैसा कि नाम से जाहिर है कि यह एक पैचाशिक साधना है इसलिए इसका भी अंत वही होता है जो लोना चमारिन की सिद्धि में होता है। एक बात और जान ले की कर्ण पिचाशानि सिद्ध व्यक्ति आपके भूतकाल को तो १०० प्रतिशत बतला देती है पर यह भविष्य नहीं बतला सकती। भविष्य उस ज्योतिष के द्वारा खुद बतलाया जाता है पर वह आपके भूतकाल को इतना सही बतला देता है कि आप उसके बतलाये गए सभी बातों पर विश्वास कर लेते हैं। इसलिए मेरा अनुरोध है की इन सिद्धियों के पीछे न पड़े। यह भी जान ले की एक बार सिद्ध हो जाने के बाद आप इनसे पीछा नहीं छुड़ा सकते। बड़ा से बड़ा तांत्रिक आपको इनसे छुटकारा नहीं दिला सकता।

मेरे गुरु ने कहा कि इसके बाद मैंने निश्चय किया कि अब मै केवल खुद के बनाये मंत्रों का ही सिद्द करूँगा। मैंने सभी मंत्रो को ध्यान से पढ़ना शुरू किया तो मैंने पाया की मन्त्र धर्म ग्रंथो से ही निकाले गए कुछ वाक्य या आयत हैं और उसमे किसी देवता की प्रशंसा की गयी या उनसे किसी चीज का अनुरोध किया गया है। हिन्दुओ में भी यही बात देखने को मिलती है। मिसाल के तौर पर पर बजरंग बाण की एक पंक्ति है -

भूत, प्रेत, पिसाच निसाचर । अगिन बेताल काल मारी

इन्हें मारु, तोहि सपथ राम की। राखु नाथ मरजाद नाम की ॥

आप इसी वाक्य को मन्त्र बना सकते हैं और इससे भूत, प्रेत, पिशाच, वैताल सभी को ख़त्म कर सकते हैं और इस काम में यह पूरे बजरंग बाण से ज्यादा कारगर होगा।

उसी तरह कुरान का हर एक शब्द को मंत्र की तरह इस्तेमाल में लाया जा सकता है। यहाँ तक की अल्लाह के हर नाम मंत्र की तरह काम में लाया जाता है। कुरान में अल्लाह के ९९ नाम का उल्लेख है उनमे से लोग जरुरत के अनुसार किसी नाम का पाठ करते है। जैसे अल रज्जाक का मतलब है आजीविका इसलिए अगर आप बेकार है तो अल रज्जाक का जाप करे तो आपको रोजी मिल जाएगी।

मैंने उन्ही आयतो को खोजकर अपनी जरुरत के अनुसार सिद्ध किया और अल्लाह की दुआ से मुझे सफलता मिली।

शंका-समाधान

मंत्र सीखने के पहले मैंने उनसे कहा मेरे कुछ प्रश्नो का उत्तर दीजिये।

उन्होंने कहा पूछो तो मैंने पूछा क्या कोई हिन्दू क्या इस्लामिक मंत्रो का जाप कर सकता है?

उन्होंने जवाब दिया क्यों नहीं? सब इंसान ईश्वर के ही तो बनाये हुए है हमने ही उन्हें धर्मों के नाम पर अलग किया है।

इसके बाद मैंने पूछा क्या इस्लामिक मंत्रो का जाप करने के लिए मुसलमान बनना, खतना करवाना जरुरी है?

उन्होंने कहा यह जरुरी नहीं। अगर खतना करना जरुरी होता तो ईश्वर पहले से ही वैसा हमें पैदा करते।

मैंने पूछा क्या पश्चिम की दिशा में ही मुस्लिम मंत्र को जाप करना चाहिए?

उन्होंने कहा नहीं, आखिर ईश्वर किस दिशा में नहीं है, पूरा विश्व उन्ही का ही है। मै तुम्हे एक वाकया सुनाता हूँ-गुरुनानक एक बार मक्का मदीना गए। उन्हें थकान हुई तो वे जमीन पर लेट गए। तब एक व्यक्ति ने उन्हें कहा क्या कुफ्र कर रहे हो तुम मक्का की तरफ पैर करके सो रहे हो। इसपर गुरुनानक के कहा भाई मुझे तो पता नहीं मै थका हुआ भी हूँ अगर तुम्हे एतराज न हो तो मेरा पैर उस दिशा में कर दो

जिधर मक्का नहीं। उस व्यक्ति ने ऐसा ही किया पर यह देखकर वह आश्चर्य में पड़ की वह जिस दिशा में वह उनका पैर करता था उधर ही उसे मक्का दिखाई पड़ता था। तब उसे ज्ञान मिल गया की अल्लाह हर तरफ है पूरी दुनिया उसी की सल्तनत है।

फिर मैंने पूछा माला किस चीज की बनी होनी चाहिए क्योकि हिन्दुओं में काम के अनुसार तरह-तरह की मालाओं का प्रयोग होता है जैसे हर काम के लिए रुद्राक्ष का, शंकर भगवान् के लिए आक का, लक्ष्मी प्राप्ति के लिए कमल गट्टे का और मारण के लिए हड्डी की उसी तरह इस्लाम में हकीक की माला को उपयोग में लाया जाता है?

उन्होंने कहा तुम किसी भी माला का प्रयोग कर सकते हो, माला का काम सिर्फ मंत्रो की गिनती को सही रखना है। तुम चाहो तो अंगुलियों की मदद से भी गिनती कर सकते हो। मंत्रो की गिनती के लिए एक और तरीका इस्तेमाल में लाया जाता है वह है समय। अगर किसी मंत्र को बताये गयी संख्या में जप करने के लिए तुम्हे २ घंटे लगते है तो तुम बिना किसी माला के घडी की मदद से रोज २ घंटे जप कर लो तो वह भी चलेगा।

मैंने पूछा क्या किसी विशेष दिन या महीने से जप शुरू करना जरुरी है?

उन्होंने कहा नहीं, हिन्दुओ में इसके लिए अच्छे मुहूर्त का उपयोग किया जाता है और इस्लाम में जुम्मे के दिन से, पर मेरे विचार से यह जरुरी नहीं।

मैंने पूछा क्या सिद्धि के लिए गुरु की आवश्यकता है?

उन्होंने कहा मैंने तो गुरु के बिना ही साधना की पर गुरु रहने से गुरु उस साधना में आने वाली कठिनाईयों को आपको पहले से ही बता देता

है और कही आप किसी परेशानी में फ़स जाते हैं तो उससे उबारने का भी काम करता है। एक बात और गुरु का दिया मंत्र उन्हें सिद्ध होता है इसलिए उनके दिए मंत्र की सिद्धि की सम्भवाना बढ़ जाती है क्योंकि उस मंत्र के देवता और मुवक्किल गुरु को जानते हैं और उन्ही के पास रहने से वे आपको भी पहचानने लगते हैं क्योंकि गुरु ने ही आपको मन्त्र दिया है तो वे समझते हैं ये उनका ही आदमी है और आपको सिद्धि जल्द ही मिल जाती है।

मैंने पूछा क्या मंत्र पाठ के पहले नहाना जरुरी है?

उन्होंने कहा नहीं आप हाथ मुँह धोकर भी पाठ कर सकते है पर नहा लेने में भी कुछ हर्ज नहीं। हां अगर आप रात को हमविस्तर हुये हो तो जरूर नहाए। वास्तव में पवित्र तो आदमी को अंदर से होना चाहिए बाहर से नहीं। हिन्दुओं में पूजा के शुरुआत में ही एक मंत्र पढ़ा जाता जो संस्कृत में होता है इसलिए लोग समझ नहीं पाते। वह मंत्र है

ॐ चाहे अशुद्ध हो या शुद्ध, सभी परिस्थितियों में, जो व्यक्ति कमल-नेत्र भगवान का स्मरण करता है, वह बाह्य और आंतरिक दोनों रूप से शुद्ध हो जाता है।

इसका अर्थ है -- कोई भी मनुष्य जो पवित्र हो, अपवित्र हो या किसी भी स्थिति को में हो, जो भगवान पुण्डरीकाक्ष (भगवान विष्णु) का स्मरण करता है, वह बाहर और भीतर से पवित्र हो जाता है।

इस मंत्र से ही स्पष्ट हो जाता है की केवल ईश्वर का नाम ले लेने से ही मनुष्य पवित्र हो जाता है।

मैंने पूछा की मैंने कई बार सुना है की भूत भगाने गया ओझा ही कभी-कभी वहां से भाग खड़ा होता है क्या मेरे साथ भी कभी ऐसा हो सकता है?

उन्होंने कहा ज्यादातर ओझा यह सब काम करने के लिए किसी प्रेत को सिद्ध करते हैं। भूत हटाने के समय वे उसी को भेजते हैं पर कभी कभी प्रेतप्रत आदमी का प्रेत ज्यादा ताकतवर होता है उस समय वह उसी को मारकर भगा देता है और ऐसी हालत में ओझा समझ जाता है की इसे भगाना मेरे वश की बात नहीं इसलिए वह भाग खड़ा होता है पर आपके साथ ऐसा नहीं होगा क्योकि आप ईश्वर के मंत्र से उसे भगा रहे है और ईश्वर के आगे कौन ठहर सकता है?

मैंने उनसे पूछा कि मैंने ऐसा देखा है कि शैतान से अधिकतर महिलाएं ही प्रभावित होते है ऐसा क्यों?

तुमने कभी देखा है जब सर्दी के दिनों में कुछ लोगो को मौसम के जरा सा परिवर्तन होने पर ही जुकाम हो जाता है, वे उस समय दही, मछली, अमरूद आदि खाने से भी परहेज करते हैं पर कुछ लोगों को सर्दी जल्दी नहीं पकड़ती और वे सर्दियों में भी आराम से दही, मछली, और अमरूद खा सकते है। कुछ लोग कुछ भी खाये तुरंत मोटे हो जाते है और कुछ लोग कितना भी घी खा ले पतले ही रहते हैं तुमने कभी सोचा ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए होता है की उनके शरीर की बनावट ही ऐसी है। उसी तरह स्त्रियाँ और बच्चे आमतौर पर मानसिक रूप से कमजोर होते हैं इसलिए वे जल्दी इनका शिकार बनते हैं पर कुछ स्त्रियाँ इससे प्रभावित नहीं होती क्योकि वे मानसिक तौर पर बहुत मजबूत रहती है। शैतान भी तो ऐसे शिकार को ढूढ़ता है जिसे बस में करना आसान हो। यही बात वशीकरण मंत्रो में होता है। तुम इनको किसी ऐसे व्यक्ति पर प्रयोग कर दो जो मानसिक रूप से मजबूत है तो उसे कुछ नहीं होगा और तुम समझोगे मेरा मंत्र ही गलत है या सिद्ध नहीं हुआ है। इसी कारण तुमने देखा होगा किताबो में राजा के

वशीकरण का अलग से मंत्र दिया रहता है। तुमने यह कहावत सुनी होगी कि गरीब की लुगाई सब की भौजाई होती है इस कहावत का सीधा सा अर्थ यह है कि गरीब, निर्बल और सीधे सादे आदमी का हर कोई फायदा उठाता है, उसका हर कोई इस्तेमाल करता है और प्रायः उसे हर जगह दबाया जाता है। किन्तु किसी बड़े आदमी की संस्कारहीन, गुणहीन, चरित्रहीन बीवी को कोई भी भाभी कहने की हिम्मत नही करता उसको सब बहिन जी, दीदी या मैम कहकर बुलाते हैं। यही बात यहाँ भी लागू होती है।

मंत्र पढ़ने पर कौन मन्त्रिक की आज्ञा पर काम करता है?

इस्लामी मान्यताओं के अनुसार हर मंत्र का अलग अलग मुवक्किल होता है जो साधक की आज्ञाओ का पालन करता है और उसके कहे सभी कार्यों को करता है। सुलेमानी तंत्र मे इनका बहुत महत्व है। मुवक्किल जिन्न जिन्नात से भी कई गुना ज्यादा शक्तिशाली होते हैं। एक मुवक्किल हजार जिन्नो से लड़ने की ताकत रखता है। मुवक्किल को इस्लाम मे स्वर्गदूत कहा जाता है। मुवक्किल एक प्रकार से देखा जाये तो सबसे बड़ी रक्षात्मक शक्ति होती है, यह सभी कार्यों को पुर्ण करने में सक्षम भी है।

क्या मंत्र तंत्र वास्तव में काम करते हैं और बहुत प्रेत सचमुच होते हैं?

उन्होंने कहा की इस बात पर लोग बहुत से सवाल उठाते हैं। आप उनलोगों से पूछे कभी उन्होंने खुद इस बात की जांच करने की कोशिश की है तो ९० प्रतिशत लोगों का जवाब होगा नहीं। आज भी कई जगह शैतानों को रोज भगाया जाता है कई जगह तो इसके लिए जाने जाते हैं। जैसे बालाजी, कटौझा शरीफ आदि आप वहाँ जाकर तहकीकात तो करें रोगियों के घर जाकर उनके विचार तो पूछे तुरंत दूध का दूध और पानी का पानी हो जायेगा पर

आप खुद हीं सोचे यह सब किये बिना किसी विद्या को बदनाम कर देना क्या सही है?

अधिकतर विदेशी पुस्तकों में लिखा जाता है की यह सब मनोवैज्ञानिक है। ऐसे स्थानों पर अँधेरा रहता है और ये काम अक्सर रात को सन्नाटे में किये जाते हैं। वहाँ अँधेरे को दूर करने के लिए उपयोग में लाये गए दियो की कम रौशनी रहती है, वहाँ धुँवा फैला रहता है, नगाड़े बजते रहते हैं, सामने आग जलता रहता है और उसके पास सिंदूर में लिपटे नरमुंड रहते हैं, ऐसे वातावरण में सामान्य व्यक्ति को भी डर लग जाता है तो एक मानसिक रोग से ग्रस्त रोगी का क्या होगा? वह डर से बेहोश हो जाता है तो वे लोग कहते है इसके शरीर पर भूत आ गया है। कई बार उसे मिर्च का धुँवा भी दिया जाता है और कहीं-कहीं तो मारा भी जाता है जिससे पहले से परेशान रोगी कुछ-कुछ बोलने लगता है कभी झूमने लगता और वे उसे भूत की करतूत बतलाते हैं पर ऐसा कुछ नहीं होता। पर मैं पाठकों को बतला दूँ की अकसर मैं दिन में ही शैतान ग्रस्त रोगी को उसी के घर पर उसे देखने जाता हूँ जहाँ पूरी रौशनी रहती है और मात्र एक या दो अगरबत्ती मैं जलाता हूँ। वहाँ कोई भी नरमुंड या डरावनी चीज नहीं रहती और वह अपने परिवार के लोगों के बीच ही बैठा रहता है। मै रोगी के बदन को भी नहीं छूता न मारता पीटता हूँ, न ही वहाँ ढोल मजीरे बजते हैं फिर भी रोगी के शरीर पर भूत आते हैं और उसे हटाया भी जाता है, यह कैसे होता है क्या उनके पास इसका जवाब है?

भूत प्रेत किस तत्व से बने होते हैं?

मानव शरीर पांच तत्वों से बना है पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश इनमे से दो तत्व स्थूल हैं और तीन सूक्ष्म। इनमे से भूतों का शरीर केवल वायु, अग्नि, आकाश से बना रहता है इसलिए उनमें शरीर नहीं रहता क्योंकि दो तत्व पृथ्वी और जल तो मृत्यु के बाद नष्ट हो जाते है।

क्या भूत प्रेत सामान्य आदमी को दिखाई पड़ सकते हैं?

सामान्य रूप से नहीं पर जिन्न में यह शक्ति रहती है की वे किसी आदमी या जानवर का रूप ले ले।

मैंने पूछा बहुत से ओझा भूत भगाने के नाम पर रोगी को तमाचा मारते है तरह- तरह से पिटाई करते हैं क्या यह सही है?

यह बिलकुल गलत है ऐसे में चोट तो उस रोगी को लगेगी क्योकि शरीर उसका है। भूत को तो केवल मंत्रो से बाँधा या जलाया जा सकता है। इस लाइन में ९०% लोग धोखेबाज हैं जो ये सब करते हैं और इस विद्या को बदनाम करते हैं।

क्या इस बिधा में पैसा लेना गलत है?

कुछ मंत्रो में सिखाने के पहले यह वादा ले लिया जाता है की आप पैसा नहीं लेंगें जैसे साँप का जहर उतरने का मन्त्र इसलिए वे पैसा नहीं ले सकते पर और मन्त्रिक पैसा क्यों नहीं लेंगे?

आखिर वे पूरे समय यही काम करते हैं तो वे अपना परिवार कैसे चलाएंगे डॉक्टर भी तो पैसे लेते है न?

क्या शैतान झूठ भी बोलते हैं?

ये बहुत झूठ बोलते हैं यहाँ तक की अगर किसी ने प्रेत सिद्ध भी कर लिया हो तो वह कभी भी अपने मालिक से भी झूठ बोल सकता है।

क्या ये चढ़ाई सामग्री को खाते है?

नहीं ये उसे खा नहीं सकते इनका शरीर ही नहीं होता तो खायेंगे कैसे? इनको इसका केवल स्वाद महसूस होता है।

आपने जो ऊपर बतलाया उसपर विश्वास नहीं होता क्या वास्तव में बिना मुहूर्त, माला और शुद्ध उच्चारण के भी मंत्र सिद्धि की जा सकती है?

उन्होंने कहा यह अच्छा प्रश्न है और लोगो में कई भ्रांतिया फैली हुई है। पहले यह जान ले कि मंत्र कई तरह के होते है जैसे वैदिक, तांत्रिक, साबर, इस्लामिक आदि। सब मंत्रो के नियमो में थोड़ा अंतर होता है। वैदिक मंत्रो में नियमो का बहुत ज्यादा पालन किया जाता है जैसे मुहूर्त, नक्षत्र दिशा, ऋषिन्यास, करन्यास, विनियोग आदि। साथ ही साथ इनका उच्चारण भी शुद्ध होना चाहिए। कुछ मंत्र तो इतने शक्तिशाली है कि उन्हें कीलित कर दिया गया है जिससे उसे हर कोई न इस्तेमाल कर सके जैसे गायत्री मंत्र, दुर्गा सप्तशती आदि इन्हे आप उत्कीलित किये बिना कितना भी जाप कर ले आप इन्हे सिद्ध नहीं कर सकते। संस्कृत के मंत्रो का उच्चारण एकदम शुद्ध करना आवश्यक है क्योकि उसमे जरा सा भी अंतर होने पर उसका अर्थ बदल जाता है। अन्य मंत्रो में ऐसा नहीं। एक समय ब्राह्मण दलितों, छोटे जाती के लोगों को इनसे वंचित कर दिया। नीची जाती के लोगों से संस्कृत पढ़ने का अधिकार छीन लिया गया

ब्राह्मण शुद्धता के नाम पर छुआछूत फैलाने लगे। मंत्र साधना भौतिक बाधाओं का आध्यात्मिक उपचार है इसलिए निम्न जाती के लोग भी मंत्र पाठ कर शक्ति प्राप्त करना चाहते थे। इन्ही बातों को देखकर भगवान् शंकर ने इन मंत्रो की सृष्टि की। तांत्रिक और औघड़ मंत्रो की रचना

है मन के विचारो पर नियंत्रण पाना और उसे शांत करना या कहे मन को अमन करना। लेकिन मन को शांत करने से मिलेगा क्या इससे क्या चीज की प्राप्ति होती है? यह आप जान ले की आपका दिमाग ऊर्जा का भंडार है पर यह ऊर्जा बिखरी हुई है सोचे अगर इसे आप एक जगह पर केंद्रित कर ले तो आप क्या नहीं कर सकते? ध्यान से इसी ऊर्जा को एक जगह केंद्रित कर उससे तरह तरह के काम लेते है। आपने ध्यान के साधको के बारे में सुना होगा कि उनमे अलोकिक शक्ति आ जाती है वे जो सोचे उसे कर सकते है या दुसरो को प्रभावित कर सकते है। देखिए विचार भी एक ऊर्जा ही जिसे वश में करना बहुत ही मुश्किल है (आप पांच मिनट के लिए ऐसा करे की आपके मन में कोई विचार न आये आपसे यह संभव नहीं होगा) एक जगह केंद्रित कर लेने एक साधारण से दिखने वाली शक्ति भी कई गुना बढ़ जाती है। प्रकाश को आप रोज देखते है वह साधारण सी शक्ति लगती है पर जब उसे एक जगह केंद्रित कर लेज़र के रूप में बना दिया जाता है तो वह किसी चीज को जला सकती है वह धातु को भी काट सकती है और आज तो उसे अनेको तरह से उपयोग में लाया जाता है।

मेरी मंत्र सिद्धि

उन्होंने मुझे सबसे पहले रक्षा मंत्र दिया और कहा की इसकी साधना सबसे पहले जरुरी है जिससे मन्त्र पाठ करते समय कोई गलत चीज आपको परेशान न कर सके। मैंने भी सबसे पहले यही मंत्र सिद्ध किया था। उन्होंने बतलाया की रक्षा के आलावा इस मंत्र से कई काम लिए जा सकते है जैसे भूत प्रेत भगाना, ताबीज बनाना। उन्होंने बतलाया की पाठ शुरू करने के पहले इसे पढ़कर आदमी को चारो दिशाओ में फूक देना चाहिए इससे

आदमी सुरक्षित हो जाता है। अगर किसी को भूत प्रेत लगा हो तो इसे पानी पर पढ़कर उसे पिला दो वह ठीक हो जायेगा, अगर किसी को सुरक्षा के लिए ताबीज देना हो तो इस मंत्र को कागज़ पर लिखकर उसके गले में पहना दो।

इसके बाद उन्होंने मुझे आयतल कुर्सी मंत्र दिया और बताया की यह कुरान का सबसे श्रेष्ठ मंत्र है। आयतुल कुर्सी को चैथाई कुरान कहा जाता है और कहा जाता है की जो इंसान आयतुल कुर्सी पढ़ता है, उसके लिए जन्नत के दरवाजे खोल दिए जाते हैं।

उन्होंने कहा कोई भी मंत्र पढ़ो उसका अर्थ जरूर जानो तभी उसका पूरा फायदा मिलेगा। हिन्दुओं के अधिकतर मन्त्र संस्कृत में होते है और लोग अक्सर उसका अर्थ जाने बिना उसका पाठ करते हैं उसी तरह अधिकतर मुसलमान कुरान का अर्थ नहीं जानते क्योकि वह अरबी में है उर्दू में नहीं यह भी गलत है। उन्होंने मुझे आयतल कुर्सी हिंदी में लिखवाया और उसका अर्थ भी लिखकर समझाया जिसे मै नीचे लिख रहा हूँ।

बिसमिल्ला हिर रहमानिर रहीम

अल्लाहु ला इलाहा इल्लाहू अल हय्युल क़य्यूम लातअ'खुजुहू सिनतुव वला नौम लहू मा फिस सामावाति वमा फ़िल अर्ज़ मन ज़ल लज़ी यश फ़ऊ इन्दहू इल्ला बि इजनिह यअलमु मा बैना अयदी हिम वमा खल्फहुम वला युहीतूना बिशय इम मिन इल्मिही इल्ला बिमा शा.. अवसिअ कुरसिय्यु हुस समावति वल अर्ज़ वला यऊ दुहू हिफ्ज़ुहुमा वहुवल अलिय्युल अज़ीम ।

इसका अर्थ है-------

अल्लाह के नाम पर शुरू कर रहा हूँ

अल्लाह जिसके सिवा कोई अमर नहीं वही हमेशा जिंदा और बाकी रहने वाला है न उसको ऊंघ आती है न नींद जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब उसी का है कौन है जो बगैर उसकी इजाज़त के उसकी सिफारिश कर सके वो उसे भी जनता है जो संसार के सामने है और उसे भी जो उन से ओझल है बन्दे उसके इल्म का ज़रा भी प्राप्त नहीं कर सकते सिवाए उन बातों के इल्म के जो खुद अल्लाह देना चाहे उसकी हुकूमत की कुर्सी ज़मीन और असमान को घेरे हुए है ज़मीनों आसमान की हिफाज़त उसपर कठिन नहीं वह बहुत बड़ा और पूज्य है।

उन्होंने कहा की देख लो यह इस्लाम का मंत्र है इसलिए अल्लाह की प्रशंसा की गयी है उसी तरह हिन्दुओ के मंत्र में हिन्दुओं के देवी देवताओ की प्रशंसा रहती है और मंत्रो में और होता क्या है? इसे पढ़ने से होने से फायदे के बारे में बतलाया गया है कि कुरआन में सबसे श्रेष्ठ आयत आयतल कुर्सी है।

जो आदमी हर फजर् (सुबह के नमाज़ के बाद आयतल कुर्सी पढ़ ले, उसे जन्नत में जाने से कोई चीज़ नहीं रोकेगी, सिवाए मौत के।

रात को बिस्तर में जा कर जो इसको पढ़ लेगा तो अल्लाह की तरफ और सुबह तक से सुरक्षा प्रदान की जाएगी और शैतान करीब भी न आ सकेगा

इसमे आज़म की बरकत से जो दुआ अल्लाह तआला से मांगी जाए वह कुबूल फरमाता है

आयतल कुर्सी को चौथाई कुरान कहा गया है।

इसके बाद उन्होंने मुझे कुछ और मंत्र सिद्ध करवाया ।

मैंने उनसे पूछा की यह कैसे पता लगाया जाता है कि कोई शैतान से ग्रस्त है या उसे कोई रोग है?

उन्होंने कहा इसके लिए कुछ तांत्रिक लोग परीक्षा किये जाने वाले इंसान के सामने तीन फूल रखते है और गुरु का नाम लेकर वे एक फूल को शैतान, दूसरे को रोग और तीसरे के लिए स्वथ्य व्यक्ति के लिए निर्धारित करके उनपर फूक मार देते है। अब वह परीक्षा किये जाने वाले व्यक्ति से कहता है की इनमे से कोई एक फूल उठाओ। वह जिस फूल को उठता है उसी के अनुसार तांत्रिक यह कह देता है की इन्हे रोग है या शैतान का शिकार है या यह स्वथ्य व्यक्ति है।

पर यह विधि मुझे सही नहीं लगी ऐसा लगा की तांत्रिक अटकले लगा रहा है। तब मैंने पुरानी किताबो को पलटना शुरू किया और मुझे एक ऐसा नक्स मिला जो मुझे ठीक लगा। मैंने उसे सिद्ध किया और आज तक मैंने उसे सभी जगह पर कामयाब पाया है।

हिन्दुओ में यंत्रो का उपयोग होता है जैसे महाकाली यंत्र, वशीकरण यन्त्र, श्री यन्त्र, बीसा यंत्र आदि। उसी प्रकार इस्लाम में भी यंत्रो का उपयोग होता है और उसे इस्लाम में नक्स के नाम से जाना जाता है।

उसके बाद उन्होंने मुझे यन्त्र बनाना सिखाया और उसे सिद्ध करवाया। नक्सो की सिद्धि के लिए उसे रोज एक निश्चित संख्या में कागज़ पर लिखा जाता है। अंतिम दिन उन सभी कागजों को इकठ्ठा करके उसके छोटे छोटे टुकड़े कर दिए जाते हैं। अब आटे की छोटी-छोटी गोलियाँ बनाई जाती है और हर गोली में नक्स के कागज़ के टुकड़े रख दिए जाते हैं।

इसके बाद मैंने पूछा की मैंने जान लिया की इस व्यक्ति पर भूत है अब मै उसे हटाऊंगा या जलाऊंगा कैसे?

उन्होंने बतलाया की इसके लिए पलीता बनाया जाता है और उसे दिए में जलाया जाता है तो पलीते के मुवक्किल उसे पकड़ कर लाते है और जला डालते है। तब उन्होंने मुझे पलीता बनाने और सिद्ध करने की विधि बतलाई और मैंने उसे सिद्ध किया।

उन्होंने तब कहा की तुम काम लायक सभी चीजे सीख गए हो। तो मैंने पूछा मुझे तो कुछ महसूस नहीं होता तो वे हँसने लगे उन्होंने मुझसे पूछा जब तुमने स्नातक की परीक्षा पास कर ली तो क्या तुम्हे कुछ महसूस हुआ था? जब तुम इनका इस्तेमाल करोगे तब इनकी शक्ति का तुम्हे अंदाज होगा।

तुम बार बार कहते हो अपना कोई अनुभव सुनाइये। इतने लोगों को मैं ठीक कर चूका हूँ कि याद ही नहीं रहता पर एकाएक एक घटना मुझे याद आ गयी। मैं वह तुम्हे सुना देता हूँ।

ठंढ का मौसम था और मै अपने घर पर बैठा हुआ था। तभी एक आदमी मेरे पास पहुँचा और कहने लगा कि आपको बुलाने ने मुझे भेजा है। वह एक प्रतिष्ठित मुस्लिम के लिए परिवार के मालिक का नाम ले रहा था।

मैंने पूछा आखिर क्या बात है? तो उसने बताया की उनकी लड़की पर शायद किसी आसेब का साया है और वह ऊलजलूल बातें बोल रही है, सर हिलाकर झूम रही है और इधर उधर भागने की कोशिश कर रही है। मैं समझ गया इस लड़की के ऊपर कोई सवार है। मैंने उससे पूछा वे तो मुझे जानते भी नहीं, और भी बहुत से नामी ओझा हैं उनको उन्होंने क्यों नहीं बुलाया। तो उसने कहा पहले से ही कई ओझाओं, औलियो और मौलवियों को बुलाया जा चुका है पर

सभी थक कर बैठ गए हैं तब एक व्यक्ति ने आपका नाम सुझाया है इसीलिए मुझे आपको बुलाने के लिए भेजा गया है। यह सुनकर मैं सोच में पड़ गया और अंदर से थोड़ा डर भी गया की जब इतने ओझा हार गए तो इसका मतलब है यह साया बहुत मजबूत है, कही यह मुझे भी न पटक दे। उस समय मै जवान था तुम्हें जितना सिखाया है उससे कही अधिक जानता था पर मुझमे अनुभव की कमी थी। फिर मैंने सोचा कि ज्यादा से जयादा मैं सफल नहीं होऊंगा पर जब इतने सारे मौलवी हार मान चुके हैं तो अंतर क्या पड़ता है और एक नया अनुभव होगा। लड़की के व्यवहार से मुझे पता लग गया था की कोई शैतान उसपर सवार था, इसलिए उसे परीक्षा करने की भी जरुरत नहीं है। मैंने मन में यह सोच लिया की मुझे क्या करना है। मैंने कुछ पलीते बनाये और अपने पास रख लिए और उस आदमी के साथ रिक्से पर चल दिया। मैं रास्ते भर सुरक्षा मंत्र का जाप करता रहा और वहाँ पहुँच कर अपने ऊपर और अपने हथेलियों पर दम कर लिया।

उस जगह पर मजमा सा लगा था। लड़की आँगन में बैठकर झूम रही थी और हंगामा कर रही थी। चारो तरफ आस पास के लोग, मौलवी बैठे हुए थे। मुझे देखकर सब आपस में बात कर रहे थे की जब इतने अनुभव वाले मौलवी हार मान गए तो इस बच्चे को बुलाया गया है। मैं रिक्से से उतरा और पहले से सोचे अनुसार लड़की को एक तमाचा जड़ दिया और कहा एकदम शांत हो जाओ। मैंने तलहथियों को तो पहले से ही मंत्र से दम कर रखा था। मेरे ऐसा करते ही वह लड़की शांत हो गयी। मै मरीजों को पीटने के खिलाफ हूँ पर वहां उसे शांत करने के लिए यह करना जरुरी था। फिर मैंने औरतो से कहा बिना डरे इसे दोनों तरफ से जकड कर रखे। इसके बाद मैंने सरसो तेल से भरा एक दिया मँगवाया। मैंने उन औरतों से उस लड़की का एक बाल तोड़कर देने को कहा। मैंने उस बाल को एक पलीते के अंदर रखा फिर उसे दिए में रखकर उस लड़की के सामने जला दिया। इसके बाद मै आराम से बैठ गया और इंतज़ार करने लगा।

मुझे चुपचाप बैठे देखकर कई लोग फुसफुसाने लगे यह तो कुछ कर ही नहीं रहा पर मैं इत्मीनान से बैठा रहा। लगभग १५ मिनट बाद लड़की बेहोश होकर गिर गई। मुझे पता चल गया की शैतान इसे छोड़ कर जा चूका है। मैंने तब अभिमंत्रित जल उसके चहरे पर छिड़का। लड़की होश में आ गयी। अब वह सामान्य लड़कियों की तरह शांत थी और पूछ रही थी की यहाँ इतनी भीड़ क्यों लगी है। मैंने उसको चाय, कॉफी या होर्लिक्स पिलाने को कहा। मेरा काम ख़त्म हो गया था पर मैंने कहा यहाँ

जितने लोग है अपना नाम पता लिखकर मुझे दे जिससे मै उनको सुरक्षित कर दूँ क्योंकि शैतान बहुत बदमाश है और उनपर भी आक्रमण कर सकता है। लोगों ने तुरंत मेरी बात को मानकर यह किया और कागज़ मुझे पकड़ा दिया। फिर मै वहाँ से लौट आया। कहने की बात नहीं इस घटना से मेरी बहुत प्रसिद्धि बढ़ी और मझे अच्छा इनाम भी दिया गया। आप शायद यह सोच रहे होंगे की उन नामो का मैंने क्या किया तो जान ले उसे मैंने लौटते समय ही फाड़कर फेक दिया वह तो केवल उन्हें थोड़ा डराकर सबक देने के लिए किया था।

मेरे शुरुआती दिनों के कुछ अनुभव

मेरी सिद्धि तो पूरी हो चुकी थी अब मुझे इसे किसी रोगी पर उसे इस्तेमाल करके देखना था। पर इसके लिए मुझे कोई रोगी मिलता तब तो मै उसपर प्रयोग करता। मै इस पेशे में था नहीं न ही इस लाइन के ज्यादा

लोगों से मेरी जान पहचान थी। मै इसके लिए विज्ञापन भी नहीं दे सकता था क्योकि ये सब करना समाज में गलत समझा जाता है, मेरे अपने जान पहचान वाले लोग और रिस्तेदार ही मुझे टोकने लगते इसलिए मैंने इसके विशेष प्रयत्न भी नहीं किया।

एक दिन मैंने ऑफिस में गौर किया की मेरा एक स्टाफ बहुत उदास दिख रहा है तो मैंने उससे पूछा क्या बात है? उसने कहा उसकी बीबी की तबियत बहुत ख़राब है इसलिए वह परेशांन है। मैंने कहा किसी अच्छे डॉक्टर से दिखाओ और इसमें मेरे किसी सहयोग की जरुरत हो तो बोलो। वह बोला एक वर्ष से उसकी तबियत खराब है और शहर के सभी नामी डॉक्टर्स से वह परामर्श ले चुका है। तब मुझे भी उत्सुकता हुई मैंने पूछा आखिर उसे हुआ क्या है? तो उसने कहा यही तो डॉक्टर्स भी पता नहीं लगा पा रहे। मैंने पूछा उसे तकलीफ क्या है? तो उसने कहा कि उसके पुरे शरीर में दर्द होता है और लगता है की कोई पूरे शरीर में सुई चुभो रहा है, टेस्ट में उसकी यूरिक एसिड और अन्य चीजे भी ठीक निकली है इसलिए हर डॉक्टर अंदाज से दवा दे रहा है पर फिर भी उसे कोई आराम नहीं। उसकी दुनियाँ बिछावन में सिमट कर रह गयी है। बच्चे और मै मिलकर खाना बनाते है और हर समय एक आदमी उसकी देखभाल के लिए चाहिए।

मैंने उससे कहा मुझे उनके पास ले चलो शायद तुम्हारी कुछ मदद कर सकूँ। उसने मुझे कहा चलिए। शाम को मैं उसके घर पहुंचा। मैंने देखा उसकी पत्नी बिछावन पर लेटी है। मैंने उनसे पूछा भाभीजी आपको क्या तकलीफ है? तो उसने कहा पुरे शरीर में दर्द है और लगता है पुरे शरीर में कोई सुईया चुभा रहा है। मेरे सहयोगी ने अपनी बेटी से चाय लाने को कहा पर मैंने मना कर दिया की बेटी को परेशान नहीं करो। तब मैंने उन्हें उठाकर बैठवाया। मैंने यह जांचने के लिए की इसे कोई ऊपरी बाधा तो नहीं दो नक्स बनाये और उसकी पत्नी से कहा की इसे अपने दोनों हाथो में रखकर मुट्ठी बंद कर ले और हाथो में कुछ गर्म ठंढा महसूस हो तो

सवेरे ही जगी और इसे रंगे हांथो पकड़ा और डाटा था। मैंने कहा यह उसी का बदला आप से ले रही है। पूरा परिवार यह सब देखकर हैरान था। अब मैंने सोचा इस बाधा को ख़त्म करना जरुरी है इसलिए एक कागज़ मॅगवाकर उसपर मैने पलीता बनाने के नक्स को बनाया। मैंने एक बड़ा दिया सरसो का तेल भरकर मँगवाया और उस पलीते को एक कपडे में रखकर उससे दिए की बत्ती बनाई। मैने अपने सहयोगी से कहा भाभीजी का एक बाल लाये और उस बाल को मैंने उस बत्ती के अंदर रख दिया और अपने सहयोगी से कहा इस पलीते को अपनी पत्नी के चारो ओर सात बार घुमा कर लाइये। उसके ऐसा कर लेने के बाद मैंने कहा इस पलीते को इस दिए की बत्ती बना कर जला दे और भाभीजी के सामने रख दे। दिया जल जाने के बाद मैंने भाभीजी को उस दिए की बत्ती को देखने को कहा।

५ मिनट बाद वह बोली मुझे कुछ नहीं दिख रहा तो मैंने उनसे कहा आंखे बंद कर ले और बंद आँखों से फिर से दिये को देखे। कुछ देर बाद वह बोली वह काला बच्चा इस दिए में जल रहा है। जिस समय वह जल रहा था भाभी जी बोली मेरी जलन और दर्द बहुत बढ़ गयी है मैंने उन्हें कहा घबराइए नहीं यह जलन और दर्द धीरे धीरे कम हो जाएगा। कुछ देर बाद वह बोली हाँ अब मेरा दर्द और जलन कम हो रहा है। मैंने उनकी आँखे खुलवा दी और पलीते को वैसे ही जलने दिया और मै अपने सहयोगी से बात करने लगा। करीब ४५ मिनट बाद मैंने पूछा जलन और दर्द कैसा है? उनहोने थोड़ी बाद आश्चर्य से कहा दर्द और जलन तो बिलकुल ही ख़त्म हो गयी है। मैंने उनसे कहा तब आप बिछावन पर क्यों बैठी हैं उठकर मेरे लिए चाय बनाकर लाइये आज मै आपके हाथो से ही चाय पियूँगा। वे थोड़ी डरते-डरते उठी और जब उन्होंने देखा की वे बिलकुल ठीक हैं तो रसोई घर में जाकर खुद अपने हाथों से मेरे लिए चाय बनाकर लाई। उसका पूरा परिवार यह करिश्मा देखकर चकित था।

उन्हें कुछ भी अनुभव नहीं हुआ तो मैंने उन्हें आखे खोल लेने को कहा। उसके बाद मैंने उनसे कहा की आप अपने नक्स को अपनी बेटी के हाथो में दे दे और उसे आँखे बंद कर लेने को कहे। मैंने जानबूझकर उसी नक्स को उन्ही की हाथो से उनकी लड़की की हाथो में दिलवाया था। और इस बार भी वही हुआ लड़की के हाथो में नक्स देते ही वह बेहोश हो गयी। हमलोगो ने उसे होश में लाया। मै समझ गया की यह शैतान २४ सो घंटे इसकी बदन पर रहता है और जब मै नक्स इसकी हाथों में देता हूँ तो वह भाग जाता है चुकि लड़की उसके कब्जे में है इसलिए उसके हटते ही लड़की को झटका लगता है और वह बेहोश हो जाती है। मैंने उनको ७ पत्नीता देकर उसे जलाने की बिधि बतलाई और उन्हें सात दिन बाद आने को कहा। मै ७ दिनों बाद क्लिनिक पर उनसे मिलने पंहुचा पर वे नहीं आये और बाद में भी उन्होंने मुझसे भेट करने की कोशिश नहीं की। मुझे भी एक सबक मिल गया की मुफ्त में तो किसी को सलाह भी नहीं देने को कहा गया है, उसका कोई मोल नहीं होता इसलिए उसने भी मेरे कामों का कोई मूल्य नहीं समझा।

इसी तरह छठ पूजा के दूसरे दिन एक दिन दोपहर को घूम रहा था तो मुझे मेरा एक दोस्त मिला। वह बहुत उदास लग रहा था मैंने पूछा क्यों इतने उदास हो तो उसने कहा आज ठीक से खाने को भी नहीं मिला आप तो जानते हैं आज के दिन कोई दूकान भी नहीं खुलती। मैंने कहा क्यों तुम्हारे घर में तुम्हारी पत्नी खाना नहीं बनाती? तो उसने कहा वह तो ९ सालो से बीमार है खाना कैसे बनाएगी? मैंने पहले उसे अपने घर लेजाकर खाना खिलाया और पूछा कि तुम्हारी पत्नी को क्या हुआ तो उसने बताया उसे किसी ने एक बार कहा कि ध्यान लगाया करो तो एक दिन वह एक कैलेंडर पर छपे श्री यन्त्र पर ध्यान लगाने लगी पर उसके बाद उसे अपना कोई होश ही नहीं रहा। उसे कभी भगवान् दिखाई देते है वह उनसे बात करती रहती है अब वह अपना कुछ काम भी ठीक से नहीं कर पाती बस सोइ रहती है। डॉक्टर्स से दिखाया उन्होंने दवाएँ, दी पर उससे कोई फायदा नहीं। अब

भी उसे भगवान् दिखाई देते हैं और वह उनसे बात भी करती है। मै समझ गया वह सिजोफ्रेनिया बीमारी से ग्रस्त है।

सिजोफ्रेनिया (शिजोफ्रेनिया) एक गंभीर मानसिक

बीमारी है। सिजोफ्रेनिया के मरीज को ज्यादातर भ्रम और डरावने साए दिखने की शिकायत होती है। सिजोफ्रेनिया के मरीज को दिखाई देने वाले मायावी दृश्य और भ्रम इतने असली होते हैं कि उसे यकीन ही नहीं होता है कि वह बीमार हैं। सिजोफ्रेनिया को मानसिक रोगों में सबसे खतरनाक समस्या माना जाता है।

सिजोफ्रेनिया के ज्यादातर मरीज दूसरों पर निर्भर हो जाते हैं क्योंकि वह अपनी देखभाल भी नहीं कर पाते हैं। वे इस बात को मानने के लिए भी तैयार नहीं होते हैं कि उन्हें कोई समस्या है। सिजोफ्रेनिया के मरीज को अजीब सी आवाजें सुनाई देती हैं। उन्हें ऐसी चीजें दिखाई और महसूस होती हैं जो असल में होती ही नहीं हैं। इसके अलावा कई मामलों में उन्हें ऐसी चीजों का स्वाद और खुशबू महसूस होने की शिकायत होती है जो वहां होती ही नहीं हैं।

मै उसके घर गया उसकी दवाइयाँ देखी और उन्हें कम कर दिया क्योकि मुझे अनुभव था की ऐसी स्थिति में डॉक्टर्स रोगी को नीद की गोली का अधिक डोज दे देते है जिसके कारण वह हरदम सोइ रहती है। टेस्ट करने पर मुझे शैतानी साया होने के कोई लक्षण नहीं मिले। तब मैंने उसे १५ मिनट तक प्राणिक हीलिंग दी। उससे भेट मुझे फिर तीन दिनों बाद हुई तो उसने

बतलाया उसने आज नास्ता भी बनाया है। पर वह अब भी देवी देवताओ से बात करती है। मुझे एक हीलिंग से इतना लाभ होगा इसका अंदाजा नहीं था। मैंने उससे कहा की मै रोज आकर हीलिंग तो नहीं दे सकता तुम आकर कुछ दिनों तक उनकी हीलिंग करवा लो। उसने कहा आजकल मेरा काम बहुत बढ़ गया है इसलिए समय निकालता हूँ पर वह आया नहीं और बहुत दिनों तक उससे भेट भी नहीं हुई।

बूढ़े बाबा और विकलांग लड़का

मैं जब अपने गुरु से मिला था तो मेरा पहला प्रश्न यही था की क्या ईश्वर सचमुच में होते हैं तो उन्होंने जबाब दिया था की ईश्वर बहुत बड़ी शक्ति है जिसे जान पाना बहुत ही मुश्किल है। बहुतों की तो सारी जिंदगी साधना में गुजर जाती है पर उन्हें भी कुछ अनुभव नहीं हो पाता। पर ईश्वर की शक्ति का अनुभव करने का एक उपाय है। भूत, प्रेत, शैतान सभी उनके सामने बहुत ही छोटी शक्ति हैं। अगर किसी ब्यक्ति पर इनका साया हो और तुम ईश्वर के मंत्रो से इन्हे भगा देते हो तो तुम्हें प्रत्यक्ष न सही परोक्ष रूप से ही यह विश्वास हो जाएगा की ईश्वर हैं हैं तभी तो उनके मंत्रो से ये नकरत्मक्त शक्तियां भाग जाती हैं। इसी बात की सत्यता के जांच के लिए मैंने खुद मंत्रो की सिद्धि की और पाया की उनकी बात बिलकुल सही है।

पर मेरे तो बहुत से ऐसे प्रश्न थे जिनका उत्तर देने वाला कोई नहीं था जैसे मान लिया निराकार ब्रह्म हैं पर हिन्दुओं में जो ब्रह्मा,

विष्णु, महेश का जिक्र है वे हैं की नहीं? सुना जाता है की बहुत से संत ऐसे हैं जो आज इस दुनिया नहीं हैं, पर याद करने पर वे प्रकट हो जाते हैं जैसे महावतार बाबाजी, इसमें कितना सत्य है? मै अब आपको अपने जीवन की एक ऐसी घटना को बतलाने जा रहा हूँ जो पारलौकिक दुनियाँ के कुछ रहस्यों को उजागर करेगी ।

मेरा एक दोस्त है, उसके लड़के को बचपन में ही पोलियो हो गया और देर से इस रोग की पहचान होने के कारण वह ठीक नहीं हो पाया। जिस समय की यह घटना आपको मै बतला रहा उस समय लड़के की उम्र लगभग १६ साल की होगी। लड़के के दोनों पंजे अंदर की ओर मुड़े थे। उसके घुटनों में कोई ताकत नहीं थी और उसके कमर की हड्डी भी कमजोर थी इसलिए वह खड़ा और बैठ नहीं सकता था। हां उसे बात करने और खाने पीने में कोई परेशानी नहीं थी। वह व्हील चेयर पर ही कहीं जा सकता था। कहने की जरुरत नहीं उसकी देखभाल करने के लिए हर समय एक आदमी की जरुरत थी। मेरे दोस्त की पत्नी एक स्कूल में टीचर थी और मेरा दोस्त हर समय अपने बच्चे की तीमारदारी में लगा रहता था। जहाँ भी मेरे दोस्त को रोग ठीक होने की थोड़ी भी आशा दिखाई पड़ती वहाँ वह दौड़ जाता था। दिल्ली में उसका घर था। एक बार उसे पता लगा कि दिल्ली के बगल में एक गाँव है जहाँ एक आदमी खास तौर पर इसी रोग की चिकित्सा हर ग्रहण के दिन किया करता था। उसके मन में एक आशा जगी कि कहीं उसका लड़का ठीक हो जाए इसलिए वह ग्रहण के एक दिन पहले अपने बेटे को लेकर वहाँ पहुँच गया। वहां जाने पर उसे पता लगा कि उस आदमी में अपनी कोई शक्ति नहीं। उसके खानदान में बरसों से एक बाबा को जगह देकर रखा गया है और वही सभी रोगियों को उस आदमी के माध्यम से ठीक करते हैं। शाम को उनकी गद्दी लगती है तब वे उसके शरीर पर आते हैं और सभी की समस्याओं का हल उस आदमी के माध्यम से बतलाते हैं।

देखकर लोगो ने सलाह दी उसे कहो कि बाबा से ही प्रार्थना करे। उसने ऐसा ही किया और उसने १० मिनट बाद कहा मेरा दर्द गायब हो गया। पर उस दिन की प्रक्रिया के बाद भी उसे फायदा नहीं हुआ।

बाबा से पूछने पर उन्होंने कहा इसकी उम्र बहुत ज्यादा हो चुकी है इसलिए इसे फिर अगले ग्रहण में ही आना ही पड़ेगा। मेरा दोस्त तब लौट आया ।

लौटने के बाद बच्चे ने मेरे दोस्त को एक विचित्र बात बतलायी। उसने कहा उस दिन जब उसने प्रार्थना की तो उसे एक बूढ़े बाबा दिखाई दिए। उन्होंने ही मंत्र पढ़कर उसके दर्द पर फूक मारी तो दर्द गायब हो गया। उसके बाद वे उससे आकर बीच बीच में उसका हाल पूछते रहे। यह बात सुनकर मेरे दोस्त को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने कहा बाबा को एक बार याद करो देखो फिर उनके दर्शन होते है या नहीं? उसने ऐसा ही किया। थोड़ी देर बाद उनका लड़का बोला कि बाबा आ गए हैं और सामने के बिछावन पर लेटे हुए है। मेरे दोस्त को समझ में नहीं आया की अब क्या करे तो उसने एक अगरबत्ती जलाई और बाबा को प्रणाम किया। थोड़ी देर बाद बाबा अंतर्ध्यान हो गए। मेरा दोस्त जानता था कि मै इन पारलौकिक शक्तियों की जानकारी का में शौक रखता हूँ, इसलिए उसने मुझसे पूछा क्या इसका कुछ फायदा उठाया जा सकता है? मैंने पूछा क्या मेरे सामने ऐसा होगा और क्या वे मुझसे बात कर सकते है? तो उसने कहा इसके बारे में मै कुछ कह नहीं सकता आप आकर खुद कोशिश कर सकते हैं। मै इस घटना से बहुत हैरान था इसके बारे में और जानने की इच्छा मुझमे जागृत हो गयी थी इसलिए दूसरे दिन शाम को मै उसके घर पहुंच गया।

जब लड़का भी आ गया तो मैंने दोस्त से कहा अगरबत्ती जला दो और कुछ मीठा खाने का सामान और एक गिलास पानी भी उनके लिए रख दो। उसने ऐसा ही किया। तब तब मैंने लड़के से कहा कि अब बाबा को याद कर उनसे आने का

आग्रह करो और कहो अंकल आपसे मिलाना चाहते है। उसने ऐसा ही किया और थोड़ी देर में बाबा हाजिर हो गए।

लड़के ने बतलाया कि वे आकर उसी कमरे के बिछावन पर लेट गए हैं। मैंने उनको प्रणाम किया और अनुरोध किया कि आप कुछ ग्रहण करे तो लड़के ने बतलाया की वे खा रहे हैं। मै उनसे उस लडके के माध्यम से ही बात कर रहा था। मैंने लड़के को उनसे पूछने को कहा की पूछो की क्या मै उनसे कुछ प्रश्न पूछ सकता हूँ? तो उन्होंने अपनी सहमति दे दी।

मैंने उनसे लड़के के माध्यम से पुछवाया कि बाबा से कहो कि वे अपने बारे में कुछ बतलाये। उन्होंने अपने बारे में बतलाया कि लोग मुझे बड़े बाबा कहकर पुकारते है। मै उस लोक में एक अस्पताल चलाता हूँ जिसमे घायल लोगों की चिकित्सा की जाती है। २० और आदमी मेरी सहायता करते हैं। ज्यादातर काम मैं उन्हें ही सुपुर्द कर देता हूँ और जहाँ मेरे बिना काम नहीं चलता वहाँ मैं भी जाता हूँ। बाबा बूढ़े थे और एक बार में ज्यादा समय नहीं देते थे। उन्होंने कहा अब मै जाता हूँ और गायब हो गए।

पाठकों को मैं ये भी बतला दूँ कि इस पूरी बातचीत के दौरान लड़का एक कुर्सी पर बैठा था और पूरे होशोहवास में था। लड़के को बाबा को देखने के लिए आँखे बंद करने की जरुरत नहीं पड़ती थी। केवल बाबा जब कुछ बोलते थे तो वह आँखे बंद कर ध्यान से उसे सुनता था तब फिर आँखे खोलकर हमें बतलाता था।

पाठको के मन में यह सब सुनकर अनेको प्रश्न उठ रहे होंगे जिसका मैं अनुमान लगा सकता हूँ क्योंकि मुझे भी इन बातों को सुनकर बहुत सी

बातों पर फिर से सोचना पड़ गया था। इसलिए उनका मै अपने सिमित ज्ञान, अनुभव और शास्त्रों के आधार पर जवाब दे रहा हूँ।

आप सोचते होंगे क्या वहाँ भी आदमी बूढ़ा होता है? देखिये एक बात समझ लें, जो आदमी जिस उम्र में इस लोक में मरता है वह वहाँ अपने आप को उसी उम्र का मानने लगता है, जैसे

अगर कोई आदमी बचपन में मरता है तो वह वहाँ बच्चा ही रहता है वह न उससे बड़ा होता है या छोटा। अगर किसी आदमी की हत्या सर काटकर की गयी हो तो वह वह हमेशा सर कटा ही दिखेगा। वह अपने आप को शारीरिक रूप से उतना ही मजबूत या कमजोर समझता है जिस हालत में वह मरा था। बड़े बाबा बूढ़े होकर मरे थे इसलिए वे अपने आप को बूढ़ा और कमजोर समझते थे इसलिए वे आते ही लेट जाते थे। यहाँ तक कि उसकी आदते भी वही रहती हैं जो इस दुनिया में थी जैसे बड़े बाबा को इस लोक में तम्बाकू खाने की आदत होगी इसलिए जब भी वे उस लडके के शरीर पर आते थे वह ऐसा करता था जैसे उसकी हथेली पर तम्बाकू हो और वह उसे वह थोड़ा रगड़ता था और उसे मुँह में डाल लेता था। ऐसा वह थोड़ी-थोड़ी देर में करते रहता था उसी तरह उनके साथ रहने वाले बंगाली बाबा जब लडके के शरीर पर आते थे तो लड़का थोड़ी थोड़ी देर पर ऐसा करता था जैसे उसकी अंगुलियों में सिगरेट हो और वह उसके कश लगाता था।

आप यह भी सोच रहे होंगे कि क्या वहाँ भी चिकित्सालय होते हैं अगर होते हैं तो किसके लिए? अगर कोई आदमी दुर्घटना में मरता है तो अपने आप को वहां घायल समझता है उन्ही की चिकित्सा वहाँ की जाती होगी।

मैंने उनसे बहुत सारे प्रश्न पूछे। मैंने उनसे ये सब प्रश्न एक ही बार में नहीं पूछा। बड़े बाबा एक बार में इतना समय नहीं देते थे । कभी-कभी तो कुछ देर बाद ही वे बोलते थे एक मरीज अभी-

अभी आया है उसे देखने मुझे अभी जाना होगा और वे चले जाते थे। इसलिए जब मुझे समय मिलता था मै अपने दोस्त के पास जाता था और करीब २ महीने में ये सब प्रश्न मैंने उनसे पूछा

एक बार मैंने उनसे पूछा इस लोक में आप कहाँ रहते हैं? उन्होंने जबाब दिया था कि तुम्हारे लोक में मेरा स्थान यहाँ केवल उसी घर में है जहाँ तुम्हारे दोस्त गए थे और मै वही रहता हूँ। वहीं रहकर मै इस लोक के लोगो के कष्ट को दूर करता हूँ। मेरे साथ काम करने वालो की संख्या बढ़ती रहती है क्योकि इस काम के योग्य लोगों को मै अपने साथ जोड़ लेता हूँ। मेरे मुख्य सहायकों में बंगाली बाबा और मंगल बाबा हैं। अब मंगल बाबा को ही ले लो वे पहले एक पहलवान थे। मरने के बाद वे एक प्रेत बने और एक घर के लोगो को परेशान करने लगे। जब कोई उन्हें वहाँ से हटा नहीं पाया तो मुझे बुलाया गया तब मैंने उन्हें अपने ब्रह्मपाश में बांध लिया । इसके बाद मैंने उससे पूछा अब तुम सदा बंधे रहना चाहते हो या मेरे साथ रहकर लोगो की सेवा करोगे? तो उसने मेरे साथ रहना चुना और तब से वह मेरे साथ है।

एक दिन मेरे दोस्त ने मुझसे कहा कि जब बाबा यहाँ आ रहे है तो क्या उनसे लड़के को यही ठीक करने की बात नहीं की जा सकती? मैंने कहा कोशिश करके देखने में कोई हर्ज नहीं। उस दिन शाम को मैं उसके घर पहुंचा, जब बाबा आये तो मैंने कहा आप यहाँ आ ही जाते हैं तो बच्चे के ठीक होने के लिए कुछ उपाय करते तो बड़ा अच्छा होता। इसपर बाबा कुछ सोच में पड़ गए। उन्होंने कहा मेरी पूरी शक्ति मेरे स्थान पर रहती है यहाँ मेरी शक्ति कम हो जाती है। फिर उन्होंने सोचकर कहा अच्छा मै इसे ले

जाकर इसकी रोज कसरत करवा देता हूँ, इससे इसे लाभहोगा। फिर उन्होंने कहा लिखो मैं एक मालिश का तेल बनाने की विधि लिखा देता हूँ। इस तेल की मालिश से इसे फायदा होगा। इसके बाद उन्होंने तेल में डाले जाने वाले औषधियों की लिस्ट लिखाई और बनाने की विधि बतलाकर चले गये। मैंने दवाओं की लिस्ट देखी की कही लड़का अपने मन से तो कुछ नहीं लिखा रहा तो मैंने देखा की उसमे ऐसे जड़ी बूटियों का जिक्र था जिसका नाम भी साधारण आदमी को पता नहीं होता। बाद में मैंने लड़के से पूछा तुहारा व्यायाम कैसे होता है? तो उसने बतलाया की रोज सवेरे बाबा आते हैं और मुझे एक दूसरे शहर ले जाते है जहाँ एक अच्छा व्यायामशाला है। वहाँ कई बाबा रहते हैं जो मुझे व्यायाम करवाते है, फिर मै लौट आता हूँ। बच्चा शारीरिक रूप से यहाँ सोया रहता था और शायद उसकी रूह वहां व्यायाम करने जाती थी। इन सबसे लगभग ४ महीने में बच्चे के पंजो में लचक आ गयी और घुटनो में भी उसे थोड़ा बल मिला। सुनने में ऐसा लग सकता है की ज्यादा फायदा नहीं हुआ पर यह जान ले की इस रोग में इतना होना भी बहुत बड़ी बात है खास तौर पर इस उम्र में।

एक दिन मेरे दोस्त ने कहा की बाबा का स्थान मेरे घर पर नहीं बनाया जा सकता? इससे बच्चे के ठीक होने और मदद मिल जायेगी और इसे वहाँ ले जाना नहीं पड़ेगा। तो मैंने कहा बाबा की गद्दी वहाँ है इसलिए वो वहाँ से अपना स्थान कैसे छोड़ेंगे? वे वहाँ से बंधे हुए है फिर भी तुम जिद कर रहे हो तो मैं उनसे आग्रह करूँगा। शाम को बाबा से बातचीत हुई तो मैंने उनसे पूछा क्या आपकी गद्दी यहाँ नहीं बन सकती? तो उन्होंने सीधा इंकार कर दिया और कहा मेरा स्थान वहाँ है मैं वहाँ से कही और कैसे जा सकता हूँ? तब मैंने दिमाग लगाया और कहा की मैं आपको वह स्थान छोड़ने को कहाँ कह रहा हूँ, आप वहाँ भी रहें और यहाँ भी, आप तो एक समय के कई जगहों पर रह सकते हैं। इससे आप दो जगह रहकर और भी अधिक लोगों की सेवा कर पाएंगे। इसपर उन्होंने कहा मैं सोचूंगा। मेरी बहुत मिन्नतों से कई हफ्तों के बाद वे तैयार हो गए और उनको मेरे दोस्त के

मकान में ही एक स्थान दे दिया गया। अब उनको रोज दोनों समय अगरबत्ती दिखाई जाती थी और भोग लगाया जाता था।

बड़े बाबा आयुर्वेद के बड़े अच्छे जानकार थे। अब लड़के का उपचार भी बढ़ गया। उनके उपचार का मुख्य तरीका आयुर्वेदिक दवा और हवन था इसके अलावा वे कभी कहते थे की आज ५ मंदिरो में अगरबत्ती लगा कर आओ। कभी वे बच्चे को बाहर कही से ३०-४० किलोमीटर घुमा कर लाने को भी कहते थे। अलग- अलग समय पर उनके कहने के मुताबिक बच्चे को घुटनो पर और कमर में ब्रेस लगवाकर खड़ा भी किया जाता था। लड़के को बार-बार बाहर घुमाने ले जाना पड़ता था। एक दिन मेरे दोस्त का पुराना घुटनों का दर्द उभर आया। बाबा ने उस दिन उसे बच्चे को बाहर घुमाकर लाने को कहा। मेरे दोस्त ने कहा की पहले मेरे घुटनो को ठीक कीजिये तो बाबा ने उन्हें एक मंत्र की ५ माला फेरने को कहा और उसके घुटनो पर फूक मार दी। मेरे दोस्त के अनुसार वह दर्द उसी समय गायब हो गया और उनमे काम करने की नयी ऊर्जा भी आ गयी। लड़के को अक्सर अब बाहर ले जाना पड़ता था बाबा अब जगह का नाम भी बताते हैं जहाँ से घूमकर आना पड़ता था। सबसे बड़ी बात थी कि बाबा यह भी बतला देते थे की कौन सी ट्रेन उस समय स्टेशन पर मिलेगी। बार-बार जाने पर टिकट का खर्च भी लगता था। एक दिन मेरे दोस्त ने कहा की आज मेरे पास पैसे नहीं तो बाबा ने कहा कि मै जिस डिब्बे में बतलाऊं उसी में बैठ जाना। मजेदार बात थी की उस डिब्बे में उन्हें सीट भी मिल जाती थी और उस डिब्बे में कभी चेकिंग नहीं होती थी।

मेरे दोस्त की आर्थिक हालत ठीक नहीं थी। एक दिन मैंने उससे कहा बाबा से इसका उपाय पूछो। उसके पूछने पर बाबा ने कहा की तुम रोगियों को हवन के माध्यम से ठीक करो इसमें मै तुम्हारी सहायता करूँगा और हवन भी करावा दूँगा साथ हीं साथ आयुर्वेदिक दवाएं भी बतला दूँगा। उसने वैसा ही किया। आज की तारीख में उसने बहुत से रोगियों को ठीक किया और

तारा माँ का वह साधक

एक दिन मेरे एक मित्र घोषाल बाबू मुझसे भेट करने आए। बातचीत के क्रम में उन्होंने मुझसे पूछा आप सुशील बाबू को तो जरूर जानते होंगे? मैंने कहा नहीं तो उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा वे यहीं एक ऑफिस में काम करते हैं और विशेष बात यह है की वे तारा माँ के बहुत बड़े उपासक हैं। तारापीठ में तो सभी लोग उन्हें बामा कहकर भी बुलाते है। वे लगभग २५ सालों से लगातार दीपावली में तारापीठ जाकर वहां शमशान में साधना करते हैं। घर भी उनका समझिये मंदिर ही है। हर अमावश्या वहाँ हवन भी होता है। चुकि इन सब बातो से जुडी सभी चीजों से आपको लगाव रहता है इसलिए मैंने सोचा आप उन्हें आवश्य जानते होगें। पर वे लोगों से ज्यादा मिलना जुलना पसंद नहीं करते इसलिए बहुत से लोग उन्हें नहीं जानते। शायद इसीलिए आजतक आपको उनके बारे में जानकारी नहीं हुई। तारापीठ, पश्चिम बंगाल के बीरभूम जिले में स्थित है और इस स्थान को यहां स्थित तारा देवी के तांत्रिक मंदिर के कारण जाना जाता है।

किंवदंती के अनुसार, यज्ञ में ना बुलाये जाने से और स्वयं पहुँचने के बाद उपेक्षा के कारण अपमानित होने बाद सती ने यज्ञकुण्ड में कूद कर आत्मदाह कर लिया था। पत्नी की मृत्यु से व्याकुल भगवान शिव ने उनके शव को लेकर सारी दुनिया में तबाही मचानी शुरू कर दी और तांडव नृत्य करने लगे ताकि वह सृष्टि का विनाश कर दें। इसके बाद भगवान विष्णु ने सृष्टि को बचाने के लिए माता सती के शव के अंगों को अपने चक्र से काटना शुरू कर दिया ताकि भगवान का मोह भंग किया जा सके। कटे

हुए अंग जिन जिन स्थानों पर गिरते गए वहां - वहां शक्तिपीठ की स्थापना होती गई। तारापीठ में देवी की आंखे गिरी थी, बंगाली में तारा का अर्थ, आँख होता है। इसलिए इस स्थान का नाम तारापीठ पड़ा।

इस मंदिर के पास में ही शमशान स्थित है जहां वर्षों से कई तांत्रिक गतिविधियां चलती आ रही है। महाश्मशान में तारा देवी का पादपद मंदिर है। तारापीठ की यही मुख्य जगह है। यहाँ पर आकर यात्री लोग मनोकामना के लिए ध्यान करते है। वामाक्षेपा, तारा पीठ के सिद्ध अघोरी और माता के परम भक्त थे।

सुशील बाबू के बारे में जानकर मै उनसे मिलने को उत्सुक हो गया। एक दिन रविवार को मै उनके घर पहुंचा और उन्हें अपना परिचय दिया। मेरे बारे में जानकार वे थोड़े नम्र हुए अन्यथा मुझे लग गया कि उन्हें अपरिचितों से बातचीत करना पसंद नहीं। धीरे-धीरे हमलोगो की घनिष्ठता बढ़ती गयी। जब मैं उनके बहुत करीब आ गया तो उनके बारे उनसे मैंने बहुत से प्रश्न पूछे।

मैंने उनसे पूछा की आप कैसी साधना करते है? तो उन्होंने बतलाया कि मै तो केवल माँ की पूजा करता हूँ। मेरे गुरु ने तारापीठ में ही उनका मंत्र बतलाया था। उन्होंने ही मुझे सबसे पहले शमशान में हवन करवाया और उनके देहान्त के बाद मै खुद अकेले हवन करता हूँ। मैंने उनसे पूछा क्या आपने शव साधना की है? तो उन्होंने बतलाया की एक बार उन्होंने शव साधना की है। उस समय इन सबके लिए इतनी सरकारी कड़ाई नहीं थी तो शव भी मिल जाते थे। एक अमावश्या की आधी रात यहाँ के लोगों ने मेरे लिए एक शव का इंतजाम कर दिया

तब मैंने यह पूजा संपन्न की थी। आमतौर पर शव पूजा में पाठ और हवन शव पर बैठकर ही की जाती है पर मुझे यह बात ठीक नहीं लगी की किसी मरे हुए

कभी माँ से ऐसी प्रार्थना नहीं कीजियेगा जब तक मै उसकी खातिरदारी करता उसने कहा मै अभी आता हूँ पर उसके बाद वह नहीं लौटा। मै मां की दयालुता पर रो पड़ा कि वे अपने बच्चो का कितना ख्याल रखती है।

बहुत याद करने पर उन्हें एक और घटना याद आयी। उन्होंने कहा एक अमावश्या मैं तारापीठ में ही था। वहाँ हवन करते-करते सवेरे के तीन बज गए। उसके बाद मुझे माँ के चरणों की पूजा के लिए पादपद मंदिर में जाना था। वहाँ पहुंचकर मैंने देखा की उतने सवेरे भी वहाँ लम्बी लाइन लगी थी। मै थका हुआ था, मैंने सोचा क्या मै इतनी देर लाइन में खड़ा रह पाउँगा? पर माँ के चरणों की पूजा तो करनी ही थी इसलिए मैं लाइन में पीछे खड़ा हो गया। उस मंदिर का काम ज्यादातर औरते ही संभालती है। कुछ देर बाद एक औरत आकर मुझसे बोली यहाँ क्यों खड़े हो आगे चलो? मैंने कहा इतनी बड़ी लाइन है तो वह बोली मेरे साथ चलो। उसने मुझे सबसे आगे ले जाकर खड़ा कर दिया। आश्चर्य की बात थी की किसी ने कुछ नहीं कहा। उन्होंने कहा चलो पूजा करो और कुछ चाहिए तो बोलो, मैंने कहा पानी मिल जाता तो अच्छा रहता तो उन्होंने कहा मिल जायेगा और एक लड़के को बुलाकर उसे पानी लाने को कहा। थोड़ी देर बाद वह एक बाल्टी में पानी लेकर आ गया। मैंने उससे वहाँ की जमीन साफ़ कर अच्छी तरह पूजा की। पूजा में करीब आधे घंटे लग गए। आश्चर्य की बात थी लाइन के किसी आदमी ने कुछ नहीं कहा। पूजा करके मैं बाहर आ गया और अपना सामान समेटने लगा। उसके बाद मैंने सोचा इस औरत को अच्छा पैसा देना चाहिए क्योकि इसने इतनी भीड़ में मुझे आगे ले जाकर पूजा करवा दी है। मैंने पैसा निकाल कर अगल-बगल देखा तो वह नहीं थी तो मैंने वहाँ की सेविकाओं से उसके बारे में पूछा पर वे उसके बारे में नहीं बतला सकीं तो मैंने सोचा कही और कमाने चली गयी हैं पर उसको धन्यवाद् और उसका मेहनताना देना जरुरी था। मैंने पूरा शमशान और मंदिर में उसे तलाशा पर वह कही नहीं दिखी। तब मेरे दिमाग में आया की वे तो माँ ही थी। मै

अपनी बदकिस्मती पर रोने लगा की माँ मेरे इतने पास थी और मै न उन्हें पहचान पाया न ही उन्हें प्रणाम कर पाया।

मैंने उनसे पूछा की आपने इतने दिनों तक शमशान में साधना की क्या आपको कभी भूत प्रेत या शैतान से सामना हुआ? उन्होंने कहा कभी नहीं। हाँ एक बात तुम्हे बतलाऊ, ८-९ साल पहले मुझे अचानक ये अदृश्य शक्तियाँ दिखाई पड़ने लगीं। ये एकदम साये की तरह दीखते थे। ये आकर मेरा पैर भी दबाते थे और पंखा भी झलते थे पर मै इन्हे डांटकर भगा देता था और कहता था की अगर मुक्त होने की कामना से आये हो तो जाओ पहले किसी गरीब का कुछ उपकार करके आओ। बाद में ये अक्सर आने लगे जिससे मुझे परेशानी होने लगी तो मैंने एक दिन माँ से कहा की मेरी इन्हे देखने की शक्ति ख़त्म कर दे तो मुझे दिखना बंद हो गया।

मैंने पूछा आपने इतने लोगों का के दुःख दर्द दूर किये हैं उसके बारे में बतलाये। तो उन्होंने कहा ऐसी तो बहुत सी घटनाएं है किस-किस को बतलाऊं। कितने लोग अपने बेटी की शादी या अपने नौकरी के लिए मेरे पास आते थे और मैं उनकी प्रार्थना माँ के सामने रख देता था और ९० प्रतिशत केसेस में वह काम हो जाता था पर कुछ ऐसे भी केस मिले जिसे मैं हल नहीं कर पाया तो मैंने निष्कर्ष निकाला की या तो इसने कोई बहुत बड़ा अपराध किया है या इसके नसीब में यह नहीं। उस हाल में मैं उनसे अपनी असमर्थता जता देता था।

एक बात तुम्हे मै और बता दू तुमने भूत प्रेत को पकड़ने और उन्हें कैद करने या उन्हें जलाने के कई मंत्र सिद्ध किये हैं पर मैंने कभी ये सब सीखा ही नहीं। जब कोई इस तरह की समस्या मेरे सामने आती है मैं उन्हें माता के सामने रख देता हूँ और उसे हवन की भभूत लगाने को दे देता हूँ इसी से वे ठीक हो जाते हैं।

बाद मै सोचने लगा ऐसा कैसे हुवा क्या कुछ टोनो का असर रोग के रूप में भी होता है?

मेरी उनसे अच्छी दोस्ती हो गई थी और मै अक्सर उनसे मिलने जाता था। इसके बाद भी बहुत सी घटनाएं हुई जिसका विवरण आप बाद में पढ़ेंगे।

सरकारे हुजूर

इसके पहले के एक अध्याय में मैंने एक स्किज़ोफेरेनिआ से पीड़ित एक औरत का जिक्र किया था। उसी औरत का पति लगभग दो साल बाद मुझसे मिलने एक बार फिर आया। आप सोचते होंगे कि पहले की घटना का जिक्र कर मैंने उसे खूब सुनाई होगी, पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। मै उससे सामान्य रूप से मिला क्योकि मैंने ऐसा कई बार देखा है कि पीड़ित के घरवाले समय लेकर गए पर उस समय पर नहीं पहुंचे। इस लाइन में ऐसा कई बार होता पर क्यों आइये मै आपको बतलाऊ।

कभी-कभी शैतान पीड़ित के शरीर पर हर समय रहता है। ऐसे पीड़ित के सामने अगर आप उसे किसी के पास दिखाने को ले जाने की बात की चर्चा गलती से कर बैठते हैं तो इनको आपकी योजना पता चल जाती है और पीड़ित वहाँ न जा पाए इसके लिए वे तरह- तरह के कारनामे करते हैं। जैसे आप जब उसे वहां ले जाने कोशिश करेगें तो वे पीड़ित की हालत इतनी ख़राब कर देंगे की आप उसे उस जगह पर न ले जा पाए। कभी- कभी तो वे गाडी की दुर्घटना भी करवा देते हैं।

आइये आपको एक घटना सुनाऊं। एक औरत को लेकर एक बार कुछ लोग मेरे पास आये। देखते ही मुझे पता चल गया की शैतान इसके शरीर पर २४ सो घंटे सवार रहता है। मै उस समय कहीं और जाने की तैयारी में था इसलिए मैंने उसे एक ताबीज पहनने के लिए दिया और दूसरे दिन आने को कहा। पर दूसरे दिन केवल उसका पति आया और उसने कहा आपने कैसी ताबीज दे दी थी? उसे घर जाकर पहनते ही उसकी तबियत बहुत खराब हो गयी। पूरे शरीर में जलन होने लगी और अंत में उसने ताबीज निकाल कर फेक दी तो थोड़ी देर में वह ठीक हो गयी और अब वह यहाँ आने को तैयार नहीं। मै समझ गया कि क्या हुआ होगा। ताबीज पहनते ही ताबीज के मुवक्किलों ने शैतान को मारना शुरू किया। शैतान जाना नहीं चाहता था इसलिए उसने पीड़िता को तरह-तरह से तकलीफ देना शुरू कर दिया जिससे वह किसी तरह ताबीज को निकाल कर फेक दे और वह तकलीफ से बच जाए और अपनी इस चाल में वह सफल हुआ।

मैंने अपने दोस्त से उसकी पत्नी का हालचाल पूछा। उसने बतलाया आपसे दिखाने के बाद ६ महीने तक वो कुछ ठीक रही पर फिर उसके बाद उसकी तबीयत ज्यादा ख़राब रहने लगी तब मैंने उसे दूसरे डॉक्टर से दिखाया उसने दवा बदल दी पर उससे भी कोई फायदा नहीं हुआ। तब मैंने उसे यहाँ के शमशान के काली मंदिर में रहने वाले एक तांत्रिक से दिखलाया। उसने बताया की इसको किसी ने टोना कर दिया है जिसको ठीक करने के लिए आपको अमावश्या की रात १२ बजे यहाँ इसी मंदिर में लाना होगा। मेरी गोतनी मकान और संपत्ति का मालिक हो जाने के कारण मुझसे बहुत जलती है और कहती थी की तुमको बर्वाद कर दूँगी मेरा शक सबसे पहले उसी पर गया। मैं नियत समय पर अपनी पत्नी को वहाँ ले गया भी पर उसके झाड़ने का कोई फायदा नहीं हुआ। तब उसने कहा की इसे मेरे घर पर कुछ दिनों के लिए भेजिए वहाँ हवन करना होगा तब फायदा होगा। यह सप्ताह में २ दिन वहाँ जाने लगी और इसी तरह ६ महीने हो गए पर मुझे कोई विशेष फायदा नहीं दिखा। एक दिन यह वहाँ से पैदल लौट रही थी। रास्ते में एक रेलवे की लाइन पार करनी होती है। अचानक इसके पीछे आने वाली औरत ने देखा की यह

मेरा दोस्त बार-बार मुझसे इस झंझट से छुटकारा दिलाने को कहता था। एक बार फिर मैंने उस औरत को मीडियम के शरीर पर बुलवाया और उसे महिला को आजाद करने को कहा पर फिर वह मुझे चुनौती देकर अपनी शक्तियों का बयां करने लगी और मैं भी गुस्से में आकर उसे ख़त्म करने की धमकी देने लगा पर वह और गन्दी गन्दी बाते बोलने लगी। मै कुछ कहने ही वाला था की एक रोबदार आवाज ने कहा तुम चुप रहो अब मैं इससे बात करता हूँ। उन्होंने उससे कहा की यह अंतिम चेतावनी है तुम्हें अगर अब भी तुम नहीं मानती तो मैं तुम्हारे हाथ पैर में कील ठोक दूँगा पर इससे उस औरत पर कुछ असर नहीं हुआ। तब उन्होंने मुझसे कहा अब तुम आराम करो मैंने इसे कील ठोक दिया है अब यह कुछ नहीं कर पाएगी। मैंने पूछा आप कौन हैं तो उन्होंने कहा मै सरकार हुजूर हूँ। मैंने पूछा आपको तो मैंने नहीं बुलाया था आप कैसे आ गए? तो उन्होंने कहा यह औरत स्वामी जी के पास जाती थी और मैं उसी के पास रहता था। उन्होंने ही इसकी तकलीफ देखकर मुझे इनके पास भेज दिया था आज तुम्हे परेशान देखकर मै तुम्हारे मदद को आ गया। मैंने पूछा क्या भविष्य में मैं आपको अपनी मदद के लिए बुला सकता हूँ तो उन्होंने थोड़ी देर में कहा सोचूँगा और वह रुख़सत हो गए। इसके बाद वह औरत कभी बीमार नहीं पड़ी।

इस घटना से मैं बहुत ही रोमांचित था और बार-बार मेरे दिमाग में यह वाकया घूम रहा था। बाद में मैंने सोचा की अगर सरकारे हुजूर किसी तरह मेरी सहायता को राजी हो जाए तो मुझे किसी और सिद्धि की क्या जरुरत है? और मै कुछ दिनों बाद फिर उनसे मिलने चल पड़ा। मैंने कुछ अगरबत्तियां और मिठाई साथ में ले ली। मैंने मीडियम के सामने अगरबत्ति जलाई और मिठाई रख दी और सरकार हुजूर को याद करने लगा। कुछ मिन्नतों के बाद वे हाजिर हो गये और पूछा क्यों बुलाया है मुझे? मैंने कहा बस आप से मिलने की तमन्ना थी तो मैंने याद कर लिया। कृपया कुछ मिठाइयां ग्रहण करे। उन्होंने कहा मै अपरचितो के हाथ के कुछ

नहीं खाता। मैंने कहा आपसे क्या छुपा है आप तो मेरे बारे में सब कुछ जानते हैं। मै थोड़ा तंत्र-मंत्र जानता हूँ और इसी से पीड़ितों की सेवा करता हूँ। पर कहीं कहीं मुझे कमी महसूस होती है जहां मुझे बतलाने वाला कोई नहीं होता। मेरी दिली इच्छा है की आप मेरे पास रह जाते और मेरे आध्यात्मिक संरक्षक और गुरु बन जाते। मेरा दिल धड़क रहा था पर आज वे बड़े अच्छे मूड में थे थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा ठीक है। मै अभी दो आदमियों के पास रहता हूँ आज से मैं तुम्हारे पास भी रहूँगा। एक बात तुम्हे और बतला दूँ मेरे लिए हमेशा १ ही अगरबत्ती जलाया करो और अगर मिठाई लाओ तो हमेशा तीन की संख्या में। फिर उस दिन वे चले गए। मेरी ख़ुशी का कोई ठिकाना नहीं था आज मैं अपने आप को बादशाह समझ रहा था।

इसके बाद अलग-अलग माध्यम पर उनसे बात होने लगी पर कभी-कभी माध्यम मिलती ही नहीं थी। मेरे उनसे बातचीत कई महीनो तक बीच-बीच में होती रही और उनसे हुए बातचीत के कुछ अंश मैं आपसे बाँट रहा हूँ। मैंने उनसे पूछा अच्छे कर्म करने वाले तो मुक्त हो जाते हैं फिर भी आपको उसी लोक में देखकर आश्चर्य होता है? इसपर उन्होंने कहा मैं मुक्त ही तो हूँ पर पीड़ितों की सेवा के लिए मैंने अभी इस दुनियाँ में रहने का निर्णय लिया है मैं जब चाहूँ उस दुनियाँ को भी छोड़ सकता हूँ। मैंने पूछा क्या भूत प्रेत, भगवन संत सभी एक ही जगह रहते है? उन्होंने बताया वे रहते तो एक ही जगह में हैं पर अलग- अलग आयामों में जो एक जगह पर रहकर भी अलग- अलग है। मैंने पूछा क्या सब एक दूसरे को देख सकते हैं तो उन्होंने कहा ऊंची आयाम के लोग नीची आयाम के लोगो को देख सकते है पर नीची आयाम वाले लोग अपने से नीचे के लोगो को तो देख सकते है पर ऊंची आयाम के लोगो को नहीं। फिर उन्होंने कहा बहुत प्रश्न पूछते हो, उस दुनियाँ के राज खोलना मना है।

मैंने एक दिन उनसे पूछा जिन्न तो रूप भी बदल सकते है क्या कभी ऐसा नहीं हो सकता की मैं बुलाऊ आपको पर आपके बदले कोई दूसरा माध्यम के ऊपर आपके रूप में आ जाये? ऐसे समय तो वो भी धोखा खा जायेगी। और हो सकता है वह मुझसे गलत काम करावा ले। सरकार हुजूर ने कहा यह संभव है इसलिए आज से जब मैं आऊंगा "आदाब" कहूँगा और जाने के वक्त "आमीन" इससे तुम्हे पता लग जाएगा की मैं ही हूँ। मैंने कहा ऐसा तो देवताओं के साथ भी हो सकता है मैं बुलाऊं दुर्गा माता को और उनके बदले कोई और गलत चीज रूप बदल कर आ जाए? उन्होंने कहा इसकी भी संभावना है। तब उन्होंने कहा अगर तुमने दुर्गा माँ को बुलाया और तुम्हे शक हो तो तुम उनसे कहना आप अपने असली रूप में आ जाये तब वे अपने असली रूप में आ जाएंगे और माध्यम उसे पहचान लेगा। मैंने कहा ऐसा कैसे होगा? तो उन्होंने कहा तुम्हें जो शक्ति प्रदान की गयी है यह उसके कारण होगा।

मैंने एक बार उनसे पूछा की परमात्मा साकार है या निराकार? उन्होंने बताया वे निरकार होते हैं। मैंने पूछा क्या देवी देवता होते हैं? तो उन्होंने बताया हां सभी देवी-देवता है और वे साकार होते है।

मैंने उनसे पूछा क्या ये सब काम आपको खुद करना पड़ता है जैसे शैतानों को पकड़ना, सजा देना। उन्होंने कहा नहीं मेरे नीचे मेरी आज्ञा का पालन करने वाले बहुत से बन्दे हैं जो मेरा काम करते हैं। मैंने कहा मै आपको अपनी सहायता के लिए हर वक्त बुलाऊ यह मुझे ठीक नहीं लगता कोई ऐसी सिद्धि बताये जिससे मेरे पास भी कोई बन्दा हो जिससे मैं काम ले सकूँ। तो उन्होंने कहा सिद्धि की क्या जरुरत है अल्लाह से ऐसे ही मांगो तुम्हे मिल जायेगा। मुझे विश्वास नहीं हुआ कि यह काम इतना आसान होगा। मैंने पूछा कैसे मांगू तो उन्होंने कहा अभी अल्लाह को याद करो और कहो मुझे एक बन्दे की आवश्यकता है जो मेरे लिए काम करे। मैंने वैसा ही किया और ४-५ मिनट बाद उन्होंने कहा तुम्हारा बन्दा हाजिर है। मैंने आश्चर्य से कहा पर मुझे तो दिख नहीं

के अनुसार रोगी या विकलांग शरीर मिलता और दुःख यही तो है स्वर्ग नर्क।

एक दिन मैं सरकार हुजूर से बात कर रहा था, अल्लाह का बन्दा भी वही था। तभी उनलोगो के मुँह से आश्चर्य से निकला अरे और उसके बाद वे शांत हो गए। मैं घबरा गया की ऐसी क्या बात हो गयी जो ये शांत हो गए खासकर सरकार हुजूर क्या कोई और बड़ी हस्ती आई है। यह सन्नाटा लगभग ३-४ मिनटों तक रहा उसके बाद अल्लाह का बन्दा बोल उठा आप तो धन्य हो गए। मैंने कहा क्या हो गया तो उसने कहा अभी सरकार हुजूर के गुरु आ गए थे। उन्होंने आपको आशीर्वाद दिया और आपके गले में सिद्ध माला डाल दी है। मैंने सरकारे हुजूर से पूछा मुझे तो कुछ पता नहीं चला तो उन्होंने कहा तुममे इन सबको महसूस करने या देखने की शक्ति जो नहीं। मैंने पूछा गुरुदेव कैसे हैं तो उन्होंने कहा उनका केवल नीचे का आधा शरीर मुझे दिखता है। मैंने कहा यह माला कैसी है तो उन्होंने कहा यह माला तुम्हे हर संकट से बचाएगी और तुम्हे सिद्धि भी प्रदान करेगी। मैं हर दिन इन सब नई बातों से हैरान था।

एक दिन मैंने बोला कुछ लोग बोलते है देवी देवता दिखते हैं और उनसे बाते किया जा सकता है क्या यह सही है उन्होंने कहा बिलकुल। उन्होंने पूछा किसी से बात करना है? मैं इस प्रश्न से हैरान था मैंने पूछा क्या यह हो सकता है उन्होंने कहा जिससे बात करना है उन्हें याद करो। मैंने कहा सामने मंदिर में दुर्गा माता है क्या उनसे बात होगी? उन्होंने कहा उन्हें याद करो, मैंने ऐसा ही किया। थोड़ी देर में माध्यम ने कहा माता सामने खड़ी है मैंने तुरंत उन्हें प्रणाम किया। उन्होंने पूछा क्या बात है मैंने कहा बस सिर्फ आपका आशीर्वाद लेना है। मैंने पूछा क्या मैं कभी मुसीबत में हूँ तो आपको फिर बुला सकता हूँ? तो उन्होंने कहा याद करना

मैं आ जाऊगी। इसके बाद से तो मुझे हनुमान जी, गणेश जी, काली माँ और भी बहुत देवताओं से बात हुई ।

मै समझता हूँ आपको इन सब बात विश्वास नहीं होगा की इन सबसे मेरे बाते हुई होगी। अगर मैं आपकी जगह होता तो मुझे भी नहीं होता पर क्या करू मै सत्य बात को कैसे छुपाऊ।

एक दिन मैंने पूछ ही लिया बिना सिद्धि किए इतने सारे देवताओं से मेरी मुलाकात कैसे हो गयी। तो उन्होंने कहा यह सब तुम्हारे पिछले जन्म की अर्जन की हुई सिद्धि है। इस समय तुम्हे इसे देने का समय आया है इसलिए तुम्हे दी जा रही है। इसके बाद मेरे बुलाने पर बाद में भी सभी देवता आये भी वह भी एक माध्यम पर नहीं अनेको माध्यम पर। इसके बाद मुझे और भी अनेकों अलौकिक अनुभव हुए जिन सबका जिक्र यहाँ करना ठीक नहीं और यह अध्याय भी बहुत बड़ा हो जाएगा इसलिए अब मैं सरकार हुजूर की मदद से ठीक किये हुए कुछ मरीजों के बारे में आपको बताऊंगा।

एक दिन मेरे एक परिचित की पत्नी ने मुझे फ़ोन किया की उनके पति की तबियत ख़राब है आप आकर उन्हें देख ले। मैंने पूछा क्या हुआ है तो उन्होंने बताया की अभी वे गाँव जाने के लिए तैयार हो रहे थे कि अचानक उन्हें कमजोरी महसूस हुई और फिर चक्कर भी आने लगे। मैंने कहा उन्हें तो शुगर और ब्लड प्रेशर दोनों है किसी में गड़बड़ी होगी वो पहले चेक करवाइये। उन्होंने कहा घर पर ही मशीन है चेक करने पर दोनों ठीक निकला है। एक बात मैं आपको और बतलाऊं ऐसा यह तीसरी बार हुआ है। ऐसे वे एकदम ठीक रहते है पर गाँव जाने के समय ही यह होता है। तब मैंने कहा मैं आ रहा हूँ। मैंने उनके घर जाकर उन्हें देखा। अब मुझे काम करने के लिए एक माध्यम की जरुरत थी। मैंने देखा की एक १३-१४ वर्ष की एक लड़की वहां खड़ी है।

इसी तरह एक बार एक जवान लड़का मेरे पास आया और कहने लगा चलकर मेरे चाचा को देख ले। मैंने पूछा उन्हें क्या हुआ है तो उसने कहा मेरे चाचा एक ऑफिस में काम करते है। उन्हें लगभग ६ महीने पहले सर में दर्द हुआ फिर उन्हें ऑफिस का काम करने में दिक्कत होने लगी। वे अपने काम का निबटारा करने में असमर्थ हो गये। यहाँ के डॉक्टर्स बीमारी को समझ नहीं पाए। तब हमलोग उन्हें एम्स दिल्ली में ले गए। वहाँ उनकी पूरी जांच हुई। उनके सर का सिटी स्कैन किया गया, इइजी किया गया और इसके अलावा न जाने कौन-कौन सी जांच की गयी पर वे भी किसी रोग का पता नहीं लगा पाए। उनलोगों ने २ महीने इन्हे वहां रखा फिर कुछ दवाएं दी और कहा फिलहाल आप इन्हे ले जाए और इन्हे ऐसे काम न करने दे जिससे इनके सर पर जोर पड़े। तब से वे यही हैं। मैं उनके घर गया और देखा उन्होंने दवा के नाम पर विटामिन की गोलियाँ और लैक्टोबैसिलस की गोलियाँ दी थी। मैंने कहा इन्हे देखना पड़ेगा और इसके लिए मुझे एक माध्यम चाहिए देखता हूँ आपके घर में इस लायक कोई है या नहीं। मैंने पहले उनकी लड़की को बैठाया पर १५ मिनट बाद भी उसे कुछ नहीं दिखा तो मैंने उसे उठा दिया और मैंने उनकी पत्नी को लेटने को कहा। भाग्यवश उन्हें अल्ला के बन्दे दिख गये। मैंने उन्हें पीड़ित को दिखाकर कहा की इन्हे कोई परेशान कर रहा है तुम इनके शरीर, घर और आसपास को देखो यदि कुछ मिले तो बांधकर ले आओ। थोड़ी देर में वे एक मर्द और औरत को बांधकर ले आये। ये दोनों पति पत्नी थे और इन्होने पूछने पर आनाकानी नहीं की और बतलाया की इनके घर से थोड़ी दूर पर एक खाली जगह है वे वही रहते थे।

एक दिन ये पास से इत्र लगाकर जा रहे थे तो ये उन्हें पसंद आ गए और वे इसपर सवार हो गए। ज्यादा समय न बर्वाद करते हुए मैंने सोचा इन्हे ख़त्म करवा दिया जाए तो मैंने काली माँ का आह्वान किया। माध्यम ने

बतलाया की एक रास्ता है जिसपर आग बिछी हुए है उसी पर चलकर क्रोध में काली माँ आ रही हैं। उनके आने पर मैंने उनका आशीर्वाद लिया और दोनों ख़त्म करने का अनुरोध किया। वे दोनों को उठाकर चली गयी। कहने की जरुरत नहीं उसके बाद से वे ठीक हों गए।

एक बार मेरी पत्नी ने कहा कुछ दिनों से हमारे दूर की एक रिस्तेदार हैं खास तौर पर आपको बुला रही है उनकी उम्र भी ज्यादा है और छड़ी के सहारे थोड़ा चल लेती हैं। हमलोग कुछ दिनों बाद उनके घर पर पहुंचे जो उसी शहर में था। घर में केवल पति पत्नी रहते थे। एक नौकरानी उनका खाना बनाकर चली जाती थी। हम दोनों उनके घर पहुंचे तो वह घर में हमें अजीब सी दुर्गन्ध मिली। चुकी नौकरानी कुछ दिनों से नहीं आ रही थी और ये लोग भी शरीर से लाचार थे तो हमलोगो ने सोचा शायद मकान कई दिनों से साफ़ नहीं हुआ है इसलिए ये दुर्गन्ध है। वहाँ चाची ने बतलाया की चाचा की तबियत आजकल कुछ ठीक नहीं रहती और आज कल तो वे गुस्सा भी बहुत करने लगे हैं। आज ही की बात ले लें, मैं पूजा करने जा रही थी तो इन्होने फूल का डलिया उठाकर फेक दिया और कहा पूजा नहीं करना है। इसपर मैंने कहा उन्हें देखना पड़ेगा तो उन्होंने कहा इन बातो को ये मानते ही नहीं और कहने पर वे भड़क जायेंगे। तब मैंने कहा इस हालत में मैं क्या करूँ। तो वे बोलने लगी कुछ तो कीजिये। मैंने सोचा क्या किया जाए? तब मैंने थोड़ा पानी मंगाया, उसपर मंत्र पढ़कर फूका और उसे शक्तिकृत किया और कहा इस पानी को उन्हें पिला दीजियेगा। तब उन्होंने कहा पिलाऊंगी कैसे अगर उन्हें पता चल गया तो वे हंगामा खड़ा कर देंगे। तब मैंने उनसे कहा उनके पानी में इसकी कुछ बुँदे डाल दीजियेगा।

इसके बाद उन्होंने कहा मुझे भी देख दीजिये। मेरी तबियत भी ठीक नहीं रहती, ख़ुशी मानो मुझसे छिन गयी है। कुछ दिनों पहले मैं नीचे चापाकल

नहीं हुआ। मैनें कहा बाबा को ही हाजिर करवाइये और मेरी उनसे बात करवाइये। थोड़ी देर बाद सरकार हुजूर ने कहा लो बाबा आ गए है और सामने के तख्त पर लेटे हुए है। मैंने उनसे पूछा बाबा क्या यह आपका काम है? उन्होंने कुछ नहीं बोला। मैंने पूछा मैंने आपका क्या बिगाड़ा था आपने ऐसा क्यों किया? तो उन्होंने कहा मैं चाहता था तुम उसके साथ मिलकर काम करो जिससे उसकी माली हालत सुधर जाए। मैंने कहा इसके लिए ये करने की क्या जरुरत थी आप मुझसे कह भी तो सकते थे? मैं बहुत गुस्से में था मैंने सरकार हुजूर से कहा इनको क्या सजा दी जाए। तो उन्होंने कहा मैं इनको अपने यहाँ लेजाकर कील ठोक देता हूँ। और वे उसे ले गए।

बाद में मैंने सोचा की बड़े बाबा अगर कीलित हो गए हैं तो वे तो आएंगे नहीं इसकी जांच करनी चाहिए। मैं १५ दिनों बाद अपने दोस्त के पास गया और कहा बड़े बाबा से बात करवाओ तो उसने कहा आजकल वे कुछ दूसरे काम में व्यस्त है इसलिए १०-१५ दिनों से वे नहीं आ रहे हैं उनका काम मंगल और तूफानी बाबा कर रहे हैं। एक बात मैने यहाँ जाना की गन्दी चीजों की सिद्धि भी कर ली जाए तब भी वे कुछ हानि पहुंचाते ही हैं पर छोटे बाबा जिनको हम अच्छा समझते हैं वे भी हानि पंहुचा सकते है।

एक बार मेरा एक परिचित मेरे पास आया और उसने मुझसे सहायता मांगी। मेरे पूछने पर उसने बतलाया की उसके जीजा दिल्ली में रहते थे। जब वे अपने मकान से नीचे आते थे तो कई बार उन्हें तीसरी मंजिल पर अपने कमरे में कोई चलता दिखाई देता था। एक दिन वे बाथरूम में थे तो उन्हें लगा उनकी बहन ने नीचे से उन्हें दो बार तेज आवाज में पुकारा है। वे जल्दी से बाहर आकर नीचे गए पर उनकी बहन ने कहा मैंने तो पुकारा नहीं। इसी तरह की घटना परिवार के अन्य सदस्यों के साथ घटी।

मैंने अल्लाह के बन्दे को कहा जाकर उन सबको आजाद करो और माध्यम को कहा अल्लाह के बन्दे को देखते रहो और यह क्या कर रहा है मुझे बतलाते रहो। उसने बताया की वे उस कमरे तक पहुंच गए है। वे अंदर जाने ही वाले थे की उस औरत ने अपने महावारी का गन्दा पानी दरवाजे पर डाल दिया जिससे अल्लाह के बन्दे वही रुक गए है। इससे मुझे गुस्सा आ गया तो मैंने अल्लाह के बन्दे को कहा पहले इस औरत को बंदी बनाओ और सरकार हुजूर के ऊपर बाले कमरे में इसके हाथ और पैर में कील ठोक दो। माध्यम ने बतलाया अल्लाह के बन्दे ने उसे कील से ठोक दिया है। तब मैंने अल्लाह के बन्दे को कहा उसी कमरे के पास जाओ और एक बाल्टी पानी गंदे पर डाल कर उसे बहा दो और अंदर जाओ मै मंत्र भी पढ़ रहा हूँ। उसने ऐसा ही किया और अंदर चला गया। मैंने उन सब बंदी प्रेतों को वहाँ से आजाद करवाया और अल्लाह के बन्दे से कहा इन्हे मुनासिब जगह पर रख आओ। इन सबके बाद वह औरत भी ठीक हो गयी।

इसके पहले के अध्याय में मैंने तारा माँ के भक्त घोसाल बाबू के बारे में आपको बताया था। एक दिन मैं उनसे मिलने गया तो वे बोले मुझे एक चिंता सता रही है मैंने पूछा क्या तो उन्होंने कहा अब मेरी उम्र ६५ साल के करीब हो गयी है और मेरे शरीर में पहले इतनी ताकत भी नहीं रही। पहले मैं रात-रात भर पूजा करके सवेरे ऑफिस भी चला जाता था पर अब तो पूरी पूजा करने में भी मुझे दिक्कत होने लगी है और मैं सोच रहा हूँ आगे मैं कैसे इसे कर पाउँगा? अब मेरे गुरु शास्त्री जी भी नहीं रहे जो मुझे कुछ बताये। थोड़ी देर के बाद मैंने कहा आपको मैंने सरकार हुजूर के बारे में बतलाया था चलिए मैं आपको उनके पास ले चलता हूँ आपको इसका उत्तर उन्ही से मिल जायेगा तो वे वहाँ जाने को तैयार हो गए।

मैं उन्हें माध्यम का सहारा लेकर सरकार हुजूर से मिलवाया। फिर मैंने सरकारे हुजूर से कहा इनकी एक समस्या है कि अब ये पहले जितनी

छत पर तुम्हे नहीं आना है। उसने कहा यहाँ हमारे जैसे कई लोग है आप किस-किस को हटाइएगा? मैंने कहा इसकी चिंता करना तुम्हारा काम नहीं।
पर वे हटने को तैयार नहीं थे इसलिए तब मैंने सबको क़त्ल करवा दिया।

इस तरह के कितनी और कहानियाँ हैं किस-किस का मै बर्णन करूँ इसलिए मै अपनी लेखनी को यहीं बिराम देता हूँ।

मै कोई लेखक नहीं और मेरी यह पहली पुस्तक है इसलिए गलतियों का होना लाजिमी है इसलिए आशा है आप उन्हें नजरअंदाज कर देंगे। अगर कोई बात आपको इस पुस्तक में गलत करे तो आप मेरे इ-मेल पर उसे मुझे बता सकते हैं आपके टिप्पणी और सुझाव का मुझे इन्तजार रहेगा। किसी खोज का कभी अंत नहीं होता इसलिए मेरी यात्रा भी जारी है अगर कुछ आपके साथ बाँटने के लिए मिला तो फिर मै आपसे मिलूंगा। तब तक के लिए मुझे आज्ञा दे।

चलते चलते

पुस्तक तो ख़त्म हो गया आप सोचेंगे की अब फिर से क्या? अब तक आपने जो भी पढ़ा वे मेरे अपने सत्य अनुभव थे। पर मैंने आपसे कभी अपने विचार तो कहे नहीं। ऊपर के पन्नो पर मैं जो भी लिखता आप उसे मेरा अनुभव समझ लेते। इसलिए मैंने एक अध्याय और जोड़ दिया ताकि मैं आपको इन सबपर अपने विचार बतला सकूँ।

इस पुस्तक में ऐसी कुछ बाते है जो अविश्वसनीय लगती है आपको क्या मैं भी अगर आपकी जगह पाठक होता तो मुझे भी ऐसा लगता इसलिए आप गलत नहीं। आपने बहुत सी अन्य इसी तरह की किताबे पढ़ी होगी जिसमे इसी विषय पर

कुछ और लिखा होगा और आप असमंजस में पड़ जायेगे कौन सत्य बोल रहा है? मैंने ऊपर पुस्तक में लिखा है कि ये मेरे अपने सत्य अनुभव है याद रखे मैंने यह कही दावा नहीं किया की मेरे अनुभव के अलावा जो भी लिखा गया वो गलत है। अगर किसी और के अनुभव मुझसे अलग है तो वे भी सत्य हो सकते है। वास्तव में पारलौकिक दुनियाँ इतनी बड़ी है की इसे आप जिस कोण से और जिस माध्यम से देखेंगे यह अलग अलग लगेगी ही क्यों हर ने केवल अपने नजरिये से देखा और वह नजरिया अलग था तो उनको कुछ और दिखाना लाजिमी था।

पारलौकिक दुनिया स्थूल नहीं एक ऊर्जा है और हमें यही समझकर उसकी खोज की चाहिए। जितने भी धर्म के मनीषी थे

वे एक वैज्ञानिक थे पर उन्हें चुकि हम उन्हें ऋषि मुनि के नाम से बुलाते है तो हम उन्हें धार्मिक व्यक्ति समझने लगते है और यहीं से ग़लतफ़हमी शुरू हो जाती है। इस पारलौकिक दुनिया को उन्होंने एक वैज्ञानिक के नजरिये से देखा और इसे अपने लिए कैसे उपयोग में लाया जाय इसके लिए उन्होंने तरह तरह के यंत्रो का भी आविष्कार किया।

आज हर चीजों के विशेषज्ञ अगल अलग होते है पर पहले एक ही व्यक्ति सभी चीजों का विशेषज्ञ होता था। इसीलिए तो आप सुनते है वे मन्त्र भी सिखाते थे तो लड़ना भी सिखाते थे। भगवान शंकर ने इन ऊजाओं को तो तंत्र के माध्यम से वश में करना सिखाया और वे हमेशा इसमें सुधार करने की कोशिश करते रहे। इसी खोज का नतीजा अघोरी विद्या, तंत्र विज्ञानं, साबर तंत्र आदि है। एक तरफ तांत्रिक उन्हें अपने गुरु मानते है तो संगीत सीखने वाले भी भगवान को अपना गुरु मानते है, नृत्य करने वालो के भी वो गुरु है। अगर पारलौकिक ऊर्जा को वश में करके उसे उपयोग में लाने का यंत्र आपको चाहिए तो भी आप उन्ही के पास

जाते। ये सब चीजे अपनी अपनी जगह पर ठीक दिखने लगेगी अगर आप उस शक्ति को ईश्वर का विशेषण न देकर उसे ऊर्जा समझ ले। ऊर्जा का कोई आकार नहीं होता। बिजली एक ऊर्जा है क्या उसका कोई आकार है पर हम कितने बड़े बड़े काम उससे ले लेते है। वह परमात्मा भी एक ऊर्जा है फर्क इतना है की वह ऐसी विशिष्ट ऊर्जा है जिसमें समझ भी है। इसीलिए तो उसको सबसे ऊपर है रखा गया है। ऊर्जा को आप कैसे काम में लाएंगे? इससे काम लेने के लिए यंत्रो की जरुरत पड़ती है जैसे विद्युत एक ऊर्जा है ऐसे यह कुछ नहीं करेगी पर आपके पास उपयुक्त यन्त्र है तो आप इससे काम ले सकते है जैसे आज हम एक, फ्रिज, हीटर, बल्ब को बनाके इससे मनचाहा काम लेते हैं। अगर ये यन्त्र न होते तो आप इनसे कैसे काम लेते? उसी तरह प्राचीन काल के संतो (वैज्ञानिकों) ने बहुत सा यन्त्र बनाकर इस ऊर्जा से हर तरह के काम लेना शुरू किया और तब से एक नई शाखा ही बन गयी यन्त्र विज्ञान। कभी आपने गौर किया यन्त्र के बाद विज्ञानं शब्द का उपयोग किया गया था। प्राचीन काल से ही इसे विज्ञानं माना जाता था पर आज इसे धर्म, तंत्र मंत्र के साथ जोड़ दिया गया है।

ऊर्जा का कोई लिंग नहीं होता। क्या आप बता सकते है विद्युत पुरुष है या स्त्री? भगवान शंकर के अर्धनारीश्वर रूप में भी इसी नपुंसक लिंग को दर्शा कर यही बताने की कोशिश की गयी थी। ऊर्जा न तो अच्छी होती है न बुरी यह आप पर है की आप उसका कैसा इस्तेमाल करते है। उसी बिजली से आप फ्रिज बनाकर ठंढक पैदा कर सकते है और उसी से हीटर बनाकर हम गर्मी भी पैदा कर सकते है। आप जो भी करे यह विरोध नहीं करेगी बस आपको इसको वश में लाने की विधि आनी चाहिए। यह ये भी नहीं देखेगी की इसको इस्तेमाल करने वाला अच्छा आदमी है या बुरा। कभी कभी आपने सोचा होगा भगवान ने रक्षसो को कैसे सिद्धिया दे दी अगर ऐसा वे नहीं करते तो कोई गड़बड़ी भी पैदा नहीं होती? पर वे ऐसा नहीं कर सकते क्योकि

ऊर्जा अपने इस्तेमाल करने वाले को नहीं देखती। यन्त्र का आविष्कार जो भी कर लेगा वह उसका उपयोग कर सकता है।

अक्सर लोग कहते है प्राचीन किताबों में कितनी अविश्वसनीय बातें कही गयी है जैसे ब्रह्म के बायें भाग से ब्रह्मा और दाहिने भाग से विष्णु की उत्पत्ति की हुई। किसी चीज के उत्पत्ति के लिए एक औरत और एक मर्द की जरूरत होती है और उत्पत्ति के लिए विशेष अंग होता है पर देखिये यहाँ दाहिने और बाएं भाग से ही उत्पत्ति हो गई।

यही पर हम भूल कर बैठते है परमात्मा एक ऊर्जा है मानव नहीं। कभी सोचा है क्या सूर्य से धरती की उत्पत्ति तभी होगी जब उन्हें एक अर्धांगिनी मिलेगी और उनकी संतान के रूप में धरती का जन्म होगा? ऊर्जा का नियम अलग है भाई।

लोग कहते है आखिर ये दिखाई क्यों नहीं देते। कैसे दिखेंगे ये तो एक ऊर्जा है ऊर्जा को क्या आप देख सकते हैं? कभी प्रकाश को आपने देखा है नहीं न आप केवल उसके प्रभाव को अनुभव कर सकते है।

हमने कभी वैज्ञानिक ढंग से सोचा ही नहीं। हम परमात्मा को अलग अलग कोण से देखे तो वह अलग अलग दिखेगा ही। मन्त्रिक मंत्र का सहारा ले रहे है और योगी ध्यान का क्या वे कभी एक चीज देख सकते है? दोनों एक दूसरे की निंदा करेंगे पर कभी उनसे पूछिए क्या कभी आपने दूसरे के मार्ग पर चलकर उनकी बात की सत्यता परखने की कोशिश की तो उनका उत्तर नकारात्मक होगा। विज्ञान में ऐसा नहीं होता। अगर कोई वैज्ञानिक कोई नई खोज ले कर आता है तो उसे ठुकराया नहीं जाता उसे परिकल्पना (हाइपोथीसिस) कहा जाता है वे उसके कथनानुसार अन्य लोग उसकी प्रयोग

कर देखते है तब अपना कुछ निर्णय देते है। हम सभी तो वैज्ञानिक ही है इसलिए हमें भी वही तरीका अपनाना होगा।

दुनियाँ में बहुत सारे धर्म है पर उनमे एक समानता है वह कभी आपने गौर किया। सभी ईश्वर को निराकार ही मानते है। हिन्दुओ के बेदो में ईश्वर को निराकार माना गया है तो मुस्लिम भी अल्लाह को निराकार मानते है। बुद्ध ने भी ईश्वर को निराकार ही माना, ईसाईयों में भी गॉड निराकार है। सिक्खो में भी ओंकार को ही सबसे बड़ा माना है और वह भी निराकार की तरफ ही इशारा करता है आखिर क्यों, क्योकि ईश्वर निराकार ही है। अलग धर्मो ने अपनी खोज के मुताबिक अपने विचार दिए है।

इसके बाद भी विचार कीजिये हिन्दुओ में तीन मुख्य देवता है, ब्रह्मा, विष्णु और महेश जिनका काम उत्पत्ति, पोषण और नाश है और मुस्लिमों में भी तीन मुख्य फरिश्ते है जिब्रील, मिकाइल और इस्राफील। तीनो के केवल नाम अलग है पर काम वही है जो ब्रह्मा, विष्णु और महेश करते है।

आखिर इन सबकी खोज में अंतर क्यों है? अगर परमात्मा एक है तो क्यों लोगो का अलग अलग मत उनके बारे में क्यों है? यह प्रश्न सदियों से सभी धर्म के महात्माओ से पूछा गया और इसका उत्तर सबने एक नीति कथा के माध्यम से दिया है चाहे वह हिन्दू धर्म का ऋग्वेद हो, बौद्ध धर्म हो, जै न धर्म हो या सूफी मत हो। स्वामी विवेकानन्द ने भी पश्चिम देशो की यात्रा के दौरान लोगो के इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए इस कथा का उल्लेख किया है इसलिए अगर यह कथा आपने नहीं पढ़ी है तो नीचे इसको मैंने दिया है इसे जरूर पढ़े।

हाथी और छह अंधे व्यक्ति

बहुत समय पहले की बात है, किसी गांव में 6 अंधे आदमी रहते थे। एक दिन गाँव वालों ने उन्हें बताया आज गांव में हाथी आया है। उन्होंने आज तक बस हाथियों के बारे में सुना था पर कभी छू कर महसूस नहीं किया था। उन्होंने ने निश्चय किया की भले ही हम हाथी को देख नहीं सकते, पर आज हम सब चल कर छूकर उसे महसूस तो कर सकते हैं। और फिर वो सब उस जगह की तरफ बढ़ चले जहाँ हाथी आया हुआ था ।

सभी ने हाथी को छूना शुरू किया.

मैं समझ गया, हाथी एक खंभे की तरह होता है, पहले व्यक्ति ने हाथी का पैर छूते हुए कहा ।

अरे नहीं, हाथी तो रस्सी की तरह होता है दूसरे व्यक्ति ने पूंछ पकड़ते हुए कहा ।

मैं बताता हूँ, ये तो पेड़ के तने की तरह है, तीसरे व्यक्ति ने सूंढ़ पकड़ते हुए कहा ।

तुम लोग क्या बात कर रहे हो, हाथी एक बड़े हाथ के पंखे की तरह होता है चौथे व्यक्ति ने कान छूते हुए सभी को समझाया ।

नहीं-नहीं, ये तो एक दीवार की तरह है पांचवे व्यक्ति ने पेट पर हाथ रखते हुए कहा ।

ऐसा नहीं है हाथी तो एक नुकीले छुरे की तरह होता है छठे व्यक्ति ने उसके दाँत को छूते हुए अपनी बात रखी।

और फिर सभी आपस में बहस करने लगे और खुद को सही साबित करने में लग गए.... उनकी बहस तेज होती गई और ऐसा लगने लगा मानो वो आपस में लड़ ही पड़ेंगे ।

तभी वहां से एक बुद्धिमान व्यक्ति गुजर रहा था उसने उनसे रुककर पूछा, क्या बात है तुम सब आपस में झगड़ क्यों रहे हो? उन्होंने ने उत्तर दिया, हम यह नहीं तय कर पा रहे हैं कि आखिर हाथी दिखता कैसा है। और फिर बारी बारी से उन्होंने अपनी बात उस व्यक्ति को समझाई ।

बुद्धिमान व्यक्ति ने सभी की बात शांति से सुनी और बोला "तुम सब अपनी-अपनी जगह सही हो। तुम्हारे वर्णन में अंतर इसलिए है क्योंकि तुम सबने हाथी के अलग-अलग भाग छुए हैं, पर देखा जाए तो तुम लोगों ने जो कुछ भी बताया वो सभी बातें हाथी के वर्णन के लिए सही बैठती हैं।

अच्छा ऐसा है सभी ने एक साथ कहा उसके बाद कोई विवाद नहीं हुआ और सभी खुश हो गए कि वो सभी सच कह रहे थे। कई बार ऐसा होता है कि हम अपनी बात को लेकर अड़ जाते हैं कि हम ही सही हैं और बाकी सब गलत है। लेकिन यह संभव है कि हमें सिक्के का एक ही पहलू दिख रहा हो और उसके अलावा भी कुछ ऐसे तथ्य हों जो सही हों। इसलिए हमें अपनी बात तो रखनी चाहिए पर दूसरों की बात भी सब्र से सुननी चाहिए, और कभी भी बेकार की बहस में नहीं पड़ना चाहिए । वेदों में भी कहा गया है कि एक सत्य को कई तरीके से बताया

जा सकता है तो जब अगली बार आप ऐसी किसी बहस में पड़ें तो समझ लीजियेगा कि कहीं ऐसा ही तो नहीं कि आपके हाथ में सिर्फ हाथी की सिर्फ सूढ़ आया है और बाकी हिस्से दुसरो की हाथों में है इसलिए वे अगल तरह से हाथी की व्याख्या कर रहे है।

धन्यवाद और आभार

मैं अपनी पत्नी का तहेदिल से शुक्रगुजार हूँ जिसने हर कदम पर मेरा साथ दिया, उसके असीम प्यार, सहयोग और उत्साहवर्द्धन के बिना यह काम पूरा करना नामुमकिन था।

अपने तीनो बच्चो का आभारी हूँ जिन्होंने अपने काम के बीच में समय निकल कर मुझे सहयोग किया।

विशेष रूप से मैं अपने प्रिय मित्र श्री सुमन श्रीवास्तव का आभारी हूँ, जिन्होंने मेरा हर मोड़ पर मेरा उत्साहवर्धन किया, मेरे लेखो को पढ़ा और उसमे सुधार भी किया। साथ ही साथ उन्होंने पुस्तक की प्रूफरीडिंग भी की और हर कदम पर मेरे साथ रहें। अगर वे मुझे उत्साहित न करते तो शायद मैं इस पुस्तक को लिखने के बारे में सोचता रह जाता।

इसके अलावा और भी बहुत से लोग है जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मेरी सहायता की उन्हें भी मेरा दिल से धन्यवाद।